व्यंजना

2021-22

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'ए+' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2021-22

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

श्रीमती मौसमी डे

सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती पद्मिनी भोई साहू अपर कलेक्टर, दुर्ग तथा कार्यक्रम में उपस्थित महाविद्यालय के प्राध्यपक एवं विद्यार्थीगण

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2021-22

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित

'A +' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक

डॉ. आर. एन. सिंह

प्राचार्य

संपादक मंडल

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. मौसमी डे

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय 03
02. प्राचार्य की कलम से.....04
03. कबीर की प्रासंगिकता- डॉ शंकर निषाद..... 06
04. मुक्तिबोध स्मारक : त्रिवेणी परिसर - लाकेश्वरी देशमुख 08
05. छोटी-छोटी चीजें हमारी जिन्दगी को नया मुकाम देती हैं - चेतन कुमार साहू 13
06. GANDHIAN ECONOMICS- Riya Singh 16
07. IMPACT OF POLITICS ON ECONOMIC DEVELOPMENT - Ankit Dhote 19
08. महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं की कविताएँ - 21-26
09. घर से दूर हमारा और घर - तीरथ राम सिन्हा 27
10. बस्तर का ढोकरा शिल्प - कु. भारती देवांगन 30
11. MY COVID STORY - Meha Shrama.....34
12. EXPIRIANCE DURING COVID-19- PENDEMIC - Megha Chandani 36
13. हिन्दी का शेक्सपियर - रांगेय राघव - दीपक आनंद सिंह 38
14. मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य - कु. शैली गौतम 41
15. मानवाधिकार - रश्मि यादव 44
16. POWRITY IN INDIA - Ansh Khan Suri 46
17. HOW TO HELP TO INDIAN FARMER'S - Ansh Khan Suri.....48
18. कविताएँ - महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं की कविताएँ -.....50-55
19. आर्थिक महामंदी-1930 अभिषेक मंडावी.....56
20. भारतीय अर्थव्यवस्था पर तेल की कीमत का प्रभाव - गोपीचंद 58
21. शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन - कु. छाया सोनी.....60
22. महासमुन्द के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी - रेणुका साहू 61
23. मीरा : तुलनात्मक विवेचन - डॉ. श्रीमती कृष्णा चटर्जी 65
24. महात्मा गाँधी और ग्राम स्वराज - राज किशोर पटेल.....69
25. शताब्दी स्मरण.....70

आवरण चित्र - कु. रिया, बी.एस.सी. भाग-3 (माइक्रोबायोलॉजी)

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहाँ पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े । नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ । इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुए । ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नहीं मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े । शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया । ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आँखों पर बैठाया था। तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया व गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुए तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे । शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

2021–22

प्राचार्य की कलम से

शिक्षण सत्र् 2021-22 में अध्ययनरत समस्त छात्र -छात्राओं का महाविद्यालय परिवार के मुखिया के रूप में, मैं हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करता हूँ। मुझे आप को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है की हमारा महाविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद बेंगलुरु द्वारा मूल्यांकित छत्तीसगढ़ प्रदेश का एकमात्र 'ए प्लस ग्रेड' प्राप्त महाविद्यालय है। इस उपलब्धि का श्रेय महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य - वर्तमान तथा भूतपूर्व छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, प्राचार्यों, सम्माननीय पालकों, उच्च-शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन, सम्माननीय जनप्रतिनिधियों, जनभागीदारी समिति के सदस्यों तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े समाज के विभिन्न वर्गों के नागरिकों को जाता है ।

विगत 5 वर्षों में हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों, खिलाड़ियों, एन.सी.सी एवं एन.एस.एस. के छात्र-छात्राओं ने अकादमिक, सांस्कृतिक, खेलकूद तथा अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। महाविद्यालय द्वारा 2016, 2017, 2018 एवं 2000 में भारतीय विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग (डीएसटी) नई दिल्ली के सहयोग से एंस्पायर कार्यक्रम का आयोजन कर छत्तीसगढ़ प्रदेश के 200 शालेय छात्र-छात्राओं को विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया है। 94 शोधार्थियों को पीएचडी की उपाधि, 405 विद्यार्थियों का नेट/स्लैट में सिलेक्शन, 298 शोध कार्य के लिए पंजीयन, 87 बुक एवं बुक चैप्टर, 347 शोध -पत्रों का प्रकाशन, 10 पेटेंट तथा दो कॉपीराइट, 31 राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रोजेक्ट जैसी बड़ी उपलब्धियों के आधार पर यूजीसी नई दिल्ली ने इसे अपनी प्रतिष्ठित योजना के अन्तर्गत 'कॉलेज विद प्रोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' (सीपीई) फेस- 3 में शामिल किया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय हायर एजुकेशन क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क तैयार करने हेतु चयनित देश के बीच प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में महाविद्यालय का चयन एवं शासन की महत्वाकांक्षी योजना के तहत सेटेलाइट के माध्यम से शिक्षण हेतु चयन समूचे महाविद्यालय परिवार के लिए हर्ष का विषय है। शिक्षा के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि है कि महाविद्यालय को एजुकेशनल वर्ल्ड नाम की एक पत्रिका द्वारा देशभर के श्रेष्ठ ऑटोनॉमस कॉलेजों की सूची में दसवाँ स्थान प्रदान किया है। वर्तमान में महाविद्यालय को ई कंटेंट डेवलपमेंट सेंटर का दर्जा प्राप्त है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा आयोग की सहायक अध्यापक

भर्ती परीक्षा 2019-20 में महाविद्यालय से 79 तथा राज्य सेवा परीक्षा में 03 विद्यार्थियों का चयन हुआ है। इसी तरह खेलकूद- वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में विश्व कप में प्रथम स्थान एवं गणतंत्र दिवस परेड में राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र की सहभागिता से महाविद्यालय गौरवान्वित हुआ है ।

वर्तमान शिक्षण सत्र में विभिन्न रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम के तहत स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर डिग्री तथा डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स प्रारंभ किए गए हैं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों का क्रय, कोचिंग कक्षाएं, स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं । अधोसंरचना के क्षेत्र में नवीन कन्या छात्रावास भवन का लोकार्पण तथा स्वायत्तशासी भवन का निर्माण एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे महाविद्यालय के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे ।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शासन के निर्देशानुसार कोविड-19 के प्रोटोकॉल का पालन करते हुए ऑनलाइन/ऑफलाइन शैक्षणिक तथा शैक्षणेत्तर गतिविधियों का क्रियान्वयन तथा महत्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, वेबीनार का आयोजन किया गया। इस महामारी के दौर में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने बड़े धैर्य और संयम से अपना कार्य किया और जनता को जागरूक करने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की इसके लिए मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ। इस सत्र में हम आगामी नैक मूल्यांकन की ओर अग्रसर हो रहे हैं जिसके लिए हमारे समस्त स्टाफ के सदस्य, महाविद्यालय के कर्मचारीगण अपनी संपूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ.. जुटे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ इसका हमें बेहतर परिणाम प्राप्त होगा और यह महाविद्यालय फिर से एक बार देश और प्रदेश के प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर सकेगा । अंत में मैं पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ ।

(डॉ. आर.एन. सिंह)
प्राचार्य

कबीर की प्रासंगिकता

डॉ शंकर निषाद (सेवा निवृत्त प्राध्यापक)

कबीर 15 वीं शताब्दी के संत थे भक्तिकाल के कवियों में कबीर का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके दोहे सुनने वाला लिख लेते थे या कंठस्थ कर लेते थे। कबीर अनपढ़ अवश्य थे, किंतु उनके पास ज्ञान का अपार भंडार था।

मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहीं नहीं हाथ।
चारों जुग कै महातम कबिर मुखहिं जनाई बात ।।

उनका जन्म काशी में हुआ था व उनका पालन पोषण मुस्लिम जुलाहा परिवार में हुआ था । उनके गुरु रामानंद थे । अपने जन्म, ज्ञान एवं गुरु के लिए उन्होंने स्वयं लिखा है 'काशी में प्रगट भए रामानंद चिताय' आज जब धर्म के नाम पर आतंक फैला हुआ है तब कबीर के दोहे की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है -

हिंदू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना ।
आपस में दोउ लड़ि मुए मरम न कोई जाना ।।

कबीर दोनों धर्मों के कर्मकांडों का विरोध किया और ईश्वर केवल एक हैं इस बात को लोगों को सहज भाषा में समझाया। उन्होंने ज्ञान से अधिक प्रेम को महत्व दिया '*पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ*' ..... उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों को पाखंड से दूर रहने की सलाह दी । हिंदुओं के मूर्ति पूजा का खंडन बड़े तार्किक ढंग से किया । कबीर कहते हैं कि पत्थर पूजने से तो अच्छी बात है कि घर की चक्की की पूजा की जाए जो हमारे काम तो आती है। मुल्लाह के बांग देने, जगाने का भी वे उपहास करते हैं -

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहाड़ ।
तातें या चाकी भली, पीस खाये संसार ।।
कांकर पाथर जोड़िके, मस्जिद नई बनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

कबीर को शांतिमय जीवन पसंद था वह अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे परंतु वे व्यवहारवादी व्यक्ति थे, बाह्यचार इसीलिए उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था । आचार भ्रष्टता के कारण ही कबीर ने शास्त्रज्ञों को शूकर और स्वान से भी गया बीता कहा । वैष्णव के प्रति उनकी आस्था इसी आचार के कारण है। आचार तब अच्छा होता है जब हमारे विचार अच्छे होते हैं । विचार तब अच्छे होते हैं जब हमारे मन से काम, क्रोध, मद, मोह, मात्सर्य का अंत हो जाता है। आज का व्यक्ति मद में चूर है यही कारण है कि एक व्यक्ति दूसरे को नीचा दिखाना चाहता है और स्वयं को प्रतिष्ठित करने के लिए हिंसा का भी सहारा लेता है । कबीर प्रेम को ही संसार का आधार मानते हैं चाहे वह सांसारिक प्रेम अथवा आध्यात्मिक। इसके लिए अहंकार का परित्याग आवश्यक है -

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं ।
सीस उतारै हाथ करि, सो पैठे घर मांहि ।।

इस संसार में बढ़ रहे अत्याचार को देखते हुए कबीर के विचार की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है । आज के समाज में दूसरों के दोषों को देखकर उपहास करना आम बात है । कबीर तो अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे । वो पराए दोष को देखने से पहले अपने अंदर झांकने की बात करते थे -

दोष पराये देखि करि, चला हसात हसात ।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत ।।

यह दोहा आज के संदर्भ में बहुत प्रासंगिक है । राजनैतिक दलों के लिए तो और भी प्रासंगिक है । जब कोई नेता विरोधी दल कि किसी की बुराई की ओर संकेत करता है, तो वह उसे ही कटघरे में खड़ा कर देता है। स्वस्थ आलोचना भी किसी को सहन नहीं होता, जबकि कबीर की मान्यता थी -

2021–22

निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।।

इसी तरह के आरोप-प्रत्यारोप लगते रहते हैं और लोग अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने लगते हैं । आज हर तरफ नफरत का माहौल है, क्रोध है, परिणामतः व्यक्ति अपना संतुलन खोता जा रहा है किसी के लिए भी कड़वे और अभद्र बोल बोल देता है। कबीर मृदु वाणी के हिमायती थे ।

ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोए ।
औरों को शीतल करे आपहु शीतल होय।।

आज संचार का युग है जो आप बोलते हैं वह एक पल में पूरे विश्व में फैल जाता है । उसका व्यापक असर होता है व्यर्थ की बातों में हम समय बर्बाद कर देते हैं । कबीर कहते हैं कि सज्जन स्वभाव सुप के समान होना चाहिए। अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए तथा व्यर्थ की बातों को उड़ा देना चाहिए ।

साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय ।
सार सार को गहि रहे, थोथा देइ उड़ाय ।।

आजकल राजनीतिक दल हो या अन्य प्रतिष्ठित लोग बिना सोचे समझे बयानबाजी कर देते हैं । इस संचार के युग में बात कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है फिर वह सफाई देते रहते हैं कि उनका मतलब यह नहीं था, बात को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया। उनका मकसद किसी की भावनाओं को आहत करना नहीं था । इसलिए कबीर ने कहा था कि बहुत सोच समझ कर मुँह से बात निकालनी चाहिए-

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि ।
हिये तराजू तौलिके के, तब मुख बाहर आनि।।

कबीरदास जीवन में संतुलन को महत्वपूर्ण मानते हैं 'अति सर्वत्र वर्जयते' कहा गया है तभी तो कबीर ने कहा है -

अति का भला ना बोला, अति की भली न चुप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

आज के भौतिकवादी युग में सुख-साधन जुटाने में व्यक्ति सही गलत का अंतर भूल चुका है इसीलिए भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती तथा दूसरे अपराध बढ़ते जा रहा रहे हैं यहाँ तक कि दूसरों के जीवन को भी दाँव पर लगा देते हैं । कभी लोग दूसरों की मजबूरी में सहायता का हाथ बढ़ाते थे किंतु आज उल्टा हो गया है । इस महामारी में मुनाफाखोरी चरम पर पहुँच गई है । तो बस इतना चाहते थे -

साईं इतना दीजिए,
जामे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ,
साधु ना भूखा जाय।।

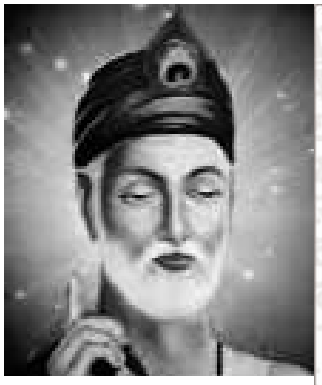

और लोभी मनुष्य कहीं ना कहीं बुरे फंसता है -

माछी गुड़ में गड़ी रहे, पंख रहे लपटाय ।
हाथ मले सिर धुने, लालच बुरी बलाय ।।

महत्वकांक्षी होना गलत नहीं है पर उसके लिए गलत रास्ते अपनाकर अंधी दौड़ लगाना सही नहीं है। हम सारे सुख- साधन पाने के लिए इस तरह भाग दौड़ करते हैं कि रहा सहा चैन भी गवां बैठते हैं। आज का व्यक्ति सब कुछ जल्दी पा लेना चाहता है। पर सब काम सही समय पर ही होते हैं -

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सीचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।।

कबीर की मान्यता थी कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है, स्थान विशेष के कारण नहीं। अपनी इस मान्यता को प्रमाणित करने के लिए सारा जीवन काशी में बिताने वाले कबीर अंत समय में मगहर चले गए ।

सकल जन्म शिवपुरी गंवाय, मरति बार मगहर चठि धाया।।

कबीर ने जीवन में गुरु के महत्व को ईश्वर से भी बड़ा सिद्ध किया है -

गुरु गोविद दोऊ खड़े, काके लागू पांय ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय ।।

क्योंकि गुरु ने जो अनन्त ज्ञान दिया है शिष्य के पास उसके बदले देने के लिए कोई चीज नहीं है -

राम नाम के पटतंरे, देबै को कछु नाहि
का लै गुरु संतोषिये, हौंस रही मन माही ।।

आज के संदर्भ में गुरु शिष्य के संबंध को देख कर तो यह दोहा और भी प्रासंगिक हो जाता है ।

(कबीर जयंती पर प्रस्तुत व्याख्यान) ०००

साहित्यिक तीर्थ

मुक्तिबोध स्मारक : त्रिवेणी परिसर

लाकेश्वरी देशमुख - एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

हिंदी साहित्य इस शब्द सुनते ही मन में हिंदी के महान लेखकों और कवियों की छवि हमारे आँखों के सामने प्रकट हो जाती है । उनकी रचनाओं से लेकर उनके जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं एवं कार्यों को जानने के लिए हमारे मन में उत्सुकता उत्पन्न हो जाती है। इसी उत्सुकता के कारण शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। विभाग के अध्यक्ष डॉ अभिनेष सुराना एवं अन्य प्राध्यापकों ने विद्यार्थियों के साथ विचार-विमर्श कर इस शैक्षणिक भ्रमण की योजना बनाई। भ्रमण के लिए राजनांदगाँव शहर को चुना गया जो साहित्यिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। तारीख 13 मार्च 2021 को यात्रा की तिथि निश्चित की गई। सभी विद्यार्थियों को विभाग द्वारा निर्देश दिया गया कि वे अपने साथ आवश्यक सामग्री लेकर चलें एवं कोविड-19 के बचाव हेतु गाइडलाइन का पालन करें।

सभी प्राध्यापक व विद्यार्थी सुबह 9:00 बजे महाविद्यालय परिसर में एकत्र हुए एवं 9:30 बजे बस में बैठ कर सभी राजनांदगाँव के लिए खाना हुए । कुछ विद्यार्थी जिनके गाँव रास्ते में पड़ते थे बस में सवार हुए उन्हें साथ लेकर हम लोग यात्रा का आनंद लेते हुए राजनांदगाँव शहर के दिग्विजय महाविद्यालय पहुँचे। महाविद्यालय के मुख्य द्वार की भव्यता से अभिभूत होकर यहाँ हम सब ने फोटो खिंचवाया फिर महाविद्यालय परिसर में दाखिल हुए। शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव, रानीसागर एवं बूढ़ा सागर के मध्य स्थित है। यह महाविद्यालय ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें बताया गया, कि स्वतंत्रता के पहले राजनांदगाँव एक रियासत हुआ करता था। राजा दिग्विजय दास इस रियासत के अंतिम वारिस थे जो शिक्षा प्रेमी थे। उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए अपना यह किला दान में दिया। उन्हीं के नाम पर इस महाविद्यालय का नामकरण किया गया। है। साहित्य मनीषी पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी एवं गजानन माधव मुक्तिबोध इस महाविद्यालय में अध्यापक थे तथा मानस मर्मज्ञ बलदेव प्रसाद मिश्रा जी इस नगर के निवासी थे। इन तीनों विभूतियों ने अपने साहित्य द्वारा राजनांदगांव नगर को देश और दुनिया में प्रतिष्ठित किया । इन तीनों महान हस्तियों के जीवन से जुड़ी वस्तुओं तथा रचनाओं को यहाँ मुक्तिबोध जी के निवास स्थल पर

2021–22

त्रिवेणी संग्रहालय नाम देकर संरक्षित किया गया है।

हम सभी ने 'त्रिवेणी परिसर' का भ्रमण किया। सबसे पहले इन तीनों महान साहित्यकारों के मूर्तियों के समक्ष पहुँच कर उन्हें नमन किया और वहाँ खड़े होकर फोटो खिंचवाए। इसके पश्चात हम सभी सृजन संवाद भवन गए। यह भवन देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के लिए जो यहाँ के शांतिपूर्ण वातावरण में रहकर साहित्य सृजन करने के इच्छुक हों उनके लिए बनाया गया है। साथ ही यहाँ पर साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन भी किए जा सकते हैं।

इसके पश्चात हम सभी त्रिवेणी संग्रहालय गए जहाँ मुक्तिबोध जी के आवास स्थल को संग्रहालय का रूप देकर पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी जी, बलदेव प्रसाद मिश्र जी और अंतिम खंड में मुक्तिबोध जी की कृतियों, उनके जीवन से` जुड़ी वस्तुओं, उनके पत्रों को, चित्रों को सजा कर रखा गया है उसका अवलोकन किया। पूरे परि्वेश को देखकर मुक्तिबोध के बिंब और प्रतीक उभर आये।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी– इनका जन्म 1894 में खैरागढ़ में हुआ था इनके पिता उमराव बख्शी कवि थे अतः पारिवारिक वातावरण के कारण आपका भी मन साहित्य व काव्य के प्रति आकर्षित हो गया । बख्शी जी ने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद साहित्य सेवा को अपना लक्ष्य बना लिया तथा कहानियाँ, कविताएं लिखने लगे। कुछ समय तक बख्शी जी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन भी किया । बख्शी जी ने हिंदी साहित्य में एम.ए. नहीं किया था, उन्हें दिग्विजय महाविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति के लिए सागर विश्वविद्यालय से मानद डी.लिट्. की उपाधि प्रदान की गई । उनकी रचनाएं हैं-

मेरा देश, मेरी अपनी कथा, मकरंद बिंदु, अंतिम अध्याय, हिंदी साहित्य एक ऐतिहासिक समीक्षा हैं। कथा गुरु बख्शी जी राजनांदगाँव के इसी महाविद्यालय में अध्यापक थे जिनके शिष्य रहे आदरणीय श्री गणेश शंकर शर्मा जी जो सेवानिवृत्त प्राचार्य हैं उन्होंने बख्शी जी के जीवन प्रसंगों से हमें अवगत कराया । बख्शी जी स्वभाव से विनम्र, ईमानदार एवंअत्यंत धैर्यवान व्यक्ति थे।

बख्शी जी ने अपनी प्रमुख रचनाएं यहीं राजनागाँव में रहकर लिखी । दिग्विजय महाविद्यालय के परिसर में प्रोफेसर कॉलोनी में उनका खपरैल की छत से

युक्त आवास आज भी सुरक्षित है। उसे धरोहर के रुप मे सहेज कर रखे जाने की जरूरत है।

गजानन माधव मुक्तिबोध – इनका जन्म 13 नवंबर 1917 को ग्वालियर जिले के श्योपुर में हुआ था । मुक्तिबोध जी राजनांदगांव के दिग्विजय महाविद्यालय में 6 वर्षों तक प्राध्यापक रहे । उन्होंने इसी राजनांदगांव में रहकर ब्रह्मराक्षस का शिष्य, काठ का सपना, चांद का मुंह टेढ़ा है, नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, एक साहित्यिक की डायरी और अपनी लंबी कविता 'अंधेरे में' की रचना की। वह एक अच्छे कवि, कथाकार, आलोचक तथा पत्रकार भी थे । यहाँ इस स्मारक में आपकी हस्तलिखित प्रतियाँ और प्रकाशित रचनाएं संरक्षित हैं। मुक्तिबोध जी से जुड़ी घटनाओं का जिक्र श्री शर्मा सर ने जिस तरह किया हम रोमांच तथा आवेग से भर गए।

बलदेव प्रसाद मिस्त्र – मिश्र जी एक प्रतिष्ठित कवि तथा लेखक थे। इनका जन्म सन् 1898 में हुआ था। इनकी लगभग साठ रचनाएं प्रकाशित हैं। तुलसी दर्शन पर इन्हें नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट की उपाधि प्रदान की गई। महाकाव्य कौशल किशोर, साकेत संत, राम राज्य प्रमुख रचनाएँ है।

इसके बाद हम सब दिग्विजय महाविद्यालय के बख्शी सभागार में एकत्रित हुए। यहाँ पर दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी. एन. मेश्राम ने स्नेह पूर्वक हम सब का अभिनंदन किया तथा अन्य अध्यापकों ने भी हमारा स्वागत किया। दोनों महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने हिंदी साहित्य जगत से जुड़े राजनांदगांव के विभूतियों का परिचय दिया, उनके जीवन और उपलब्धियों का उल्लेख किया। विद्यार्थियों ने भी परस्पर विचारों का आदान-प्रदान किया और अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। इसके पश्चात हम सबने दोपहर का भोजन किया और यहाँ से विदा लेकर आगे सफर जारी रखते हुए पत्रकारिता की वास्तविकता, उद्देश्य तथा अवसर जानने समझने के लिए प्रतिष्ठित समाचार पत्र सवेरा संकेत तथा दैनिक दावा के भ्रमण के लिए लाल बाग निकल पड़े ।

सबेरा संकेत – इस प्रेस की स्थापना साठ के दशक में स्वर्गीय श्री शरद कोठारी जी ने किया था यह सर्वप्रथम पाक्षिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित होता रहा फिर साप्ताहिक हुआ और सन 1975 से दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित हो रहा है ।

इस प्रेस में हम पहुँचे तो हमारा स्नेहपूर्वक स्वागत हुआ । खुद श्री सुशील कोठारी जी जो इस समय सबेरा संकेत के संपादक हैं ने हमारा भावपूर्ण स्वागत किया। श्री सुशील कोठारी जी ने स्थापना काल से लेकर वर्तमान तक के सफर को हम सब को अवगत कराया ।

उन्होंने बताया कि उस समय जब अखबार निकालना बहुत कठिन हुआ करता था अब तो नई नई तकनीक के आ जाने के कारण अखबार निकालना बहुत सरल हो गया है। उन्होंने समाचार संग्रह, प्रिंटिंग विभाग, कंप्यूटर विभाग, विज्ञापन विभाग, प्रेस की क्रिया विधि एवं कार्यप्रणाली को बारीकी से समझाया तथा विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर देकर हमारे मन की जिज्ञासा को शांत किया। उन्होंने पत्रकारिता में कैरियर के भी मार्गदर्शन दिए । समाचार छपने की मशीन को दिखाया तथा पत्र छाप कर दिखाया जिसे देखकर हम सभी प्रसन्न हुए। समाचार पत्र छापने की मशीन बड़ी थी। इस अवसर पर सबेरा संकेत के उप संपादक विरेंद्र बहादुर सिंह, ईश्वर साहू, सुश्री आरती दुबे, मशीन मेन श्री मिश्रा भी उपस्थित थे । सबेरा संकेत प्रेस की ओर से संस्कारधानी राजनांदगांव की परंपरा के अनुरूप हम सबको रसगुल्ला खिलाकर मुँह मीठा कराया और हमें आदर स्नेह सहित विदाई दी जिसकी मिठास और मधुर यादें हमारे जीवन में बनी रहेगी।

दैनिक दावा – यह सबेरा संकेत प्रेस के ही समीप है जहाँ हम सब विद्यार्थी एवं अध्यापकगण पहुँचे। दैनिक दावा के संपादक श्री दीपक बुद्धदेव हैं उनके पुत्र श्री सूरज बुद्धदेव ने भी हम सबका बहुत स्नेह पूर्वक स्वागत किया तथा समाचार पत्र छापने की पूरी प्रक्रिया विद्यार्थियों को बताया। हमारा उत्साह देखकर दैनिक दावा के सह संपादक श्री आत्माराम कोसा जी ने कहा - आप सभी अपना खुद का प्रेस खोल सकते हैं, अखबार निकाल सकते हैं और इसे रोजगार का जरिया बना सकते हैं । इन्होंने कोविड-19 के लॉक डाउन के समय की तकलीफों एवं दिक्कतों को भी हमारे साथ साझा किया। दैनिक दावा की ओर से भी हम सबका सम्मान ठंडाई, मैंगो जूस पिलाकर किया गया जिसकी ठंडक हम सबको हमेशा याद रहेगी। दोनों ही प्रेस के द्वारा जो आदर सम्मान और प्रेस से संबंधित जानकारियाँ हमें दी गई उस क्षेत्र की दिक्कतों परेशानियों एवं अवसर तथा उसके फायदे को बताया गया हम सब विद्यार्थियों के मन को नई उमंग और उत्साह से भर दिया।

ओडार बांध – इसके बाद हम आगे ओडार बांध की यात्रा के लिए निकल पड़े। यह राजनांदगांव शहर से 28 किलोमीटर दूर ग्राम टप्पा के समीप स्थित है । यहाँ के बारे में लोक श्रुति है कि यह दशमत कैना की लोकगाथा से इसका संबंध है। **'दशमत कैना'** की गाथा जिसमें नारी जीवन के संघर्ष, कर्म, प्रेम, त्याग, निष्ठा एवं पवित्रता की गाथा को पढ़ सुनकर जो उत्सुकता जगी थी वह वहाँ जाकर

2021–22

के शांत हुई । इस घटना की वास्तविकता को उस स्थल पर जाकर देखना हम सबके लिए आश्चर्यजनक था। कहते हैं की ओडार बांध को दशमत के कबीलें के ओड़िया समुदाय के लोगों द्वारा बनाया गया है । यह बांध बहुत बड़ा है जिसमें पानी भरा हुआ था तथा मछुआरे जाल फैलाकर मछली पकड़ रहे थे। इस बाँध के संबंध में लोक गाथा के बारे में स्थानीय टोला गांव निवासी नेकराम जी ने हमें बताया कि जनश्रुति है की नौ लाख ओड़िया और नौ लाख ओड़नीन ने 6 महीने की रात में यह बांध बनाया है। बाँध के उत्तर दिशा में बांध की खुदाई से जो मिट्टी निकली वह पर्वत जैसा बन गया है। बाँध बनाने वाले ओड़िया समुदाय के वंशज वर्तमान में सुपेला भिलाई में निवास करते हैं जो समय-समय पर दशमत कैना देवी की पूजा अर्चना करने यहाँ आते हैं। इस बांध का संबंध राजनांदगांव की रानी से भी बताया जाता है - कि रानी ने रानी सागर में एक मछली को सोने की नथ पहनाकर उसमें छोड़ा था जो सुरंग के माध्यम से इस बांध में आ गयी । वही मछली यहाँ पायी गयी। इस जगह को अब सरकार ने अपने अधीन कर लिया है तथा यहाँ के बांध एवं खेतों को कृषि कार्य हेतु लीज पर दिया जाता है। यहाँ का मनमोहक दृश्य, बांध का पानी, पानी की ठंडक, पेड़ों की छाया और हरियाली, शाम के समय ठंडी हवा की सरसराहट, पक्षियों की चहचहाहट एवं गेहूँ की मचलती बालियाँ हमारे मन को मोह ले रही थी। यहाँ से जाने का हमारा मन नहीं हो रहा था। बड़े-बड़े वृक्षों की डालियों पर बंदरों के उछल कूद और शाम के समय का शांत वातावरण हमारी यात्रा को और भी दिलचस्प बना रहा था। बांध के पूर्वी दिशा में दशमत माता मंदिर है । आगे उस क्षेत्र में खेत हैं जहाँ गेहूँ आदि की फसल लहलहा रही थी। यहाँ पर हम सब ने बहुत देर तक मौज मस्ती किए और अध्यापकों के साथ फोटो खिंचवाए, कुछ देर विश्राम भी किया। इस स्थल को देखकर हम सब विद्यार्थियों के मन में इस लोक गाथा आदि के बारे में और भी जानने की उत्सुकता हुई । हमारे प्राध्यापक डॉ. जयप्रकाश जी ने दिग्विजय महाविद्यालय में बख्शी जी मुक्तिबोध जी से जुड़ी और भी बातों पर विस्तार से चर्चा की उनकी कविताओं में उपस्थित मिथक और यथार्थ को समझाया। वहाँ से लौटते समय हम सब ने पाताल भैरवी मां काली के दर्शन किए और प्रसाद पाकर वापस दुर्ग के लिए प्रस्थान किए । हम सब के लिए यह यात्रा एक सुखद अनुभव था। हिंदी साहित्य जगत के इतने महान विभूतियों के बारे में करीब से जानना समझना, पत्रकारिता के अवसरों को, लोकगाथा के वास्तविक स्वरूप, जनश्रुति, यथार्थ और कल्पना को समझना और प्रकृति के शांत सुरम्य वातावरण को महसूस करना एक आनंददायक क्षण था । दोस्तों के साथ मिलजुल कर रहना तथा हर एक पल को खुश मिजाज ढंग से जीना, अध्यापकों का हमारे प्रति स्नेह एवं चिंता हमें आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती रहेगी।

000

2021–22

छोटी-छोटी चीजें हमारी जिन्दगी को नया मुकाम देती हैं

(संस्मरण)

चेतन कुमार साहू, बी.एस-सी. (भाग-तीन)

मैं जल्दी-जल्दी अपना सामान पैक कर रहा था क्योंकि मुझे एन.सी.सी. के सीएटीसी कैम्प में जाना था । जाने के पूर्व ही मैंने अपने सारे सामानों की एक सूची तैयार कर ली थी ताकि मैं जब कैम्प से वापस आऊँ तो अपने सभी सामानों को जाँचने में आसानी हो । मैंने एक नया ट्रैक सूट भी लिया, जूते चमकाएँ, यूनिफार्म को प्रेस किया । कुछ खाने का सामान भी बैग में भर लिया क्योंकि कैम्प के दौरान आप वहाँ से कहीं भी बाहर नहीं जा सकते हैं ऐसा हमें पहले ही सूचित कर दिया गया था ।

मैं यह सब कर ही रहा था कि मुझे अपने एनसीसी का प्रथम वर्ष याद आ रहा था कि मैंने एन.सी.सी के प्रथम वर्ष में कितनी मेहनत और संघर्ष किया। जब भी हम एनसीसी के बारे में सोचते हैं तो हमें हरे रंग की टोपी जिसे बैरे बोलते हैं लाल रंग का कलगीनुमा पक्षियों के पंख से बना हुआ हैकल और खाकी वर्दी मन में आता है । किन्तु आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह तो एनसीसी का सिर्फ एक भाग ही है । एनसीसी तीन प्रकार की होती है । एयरविंग, नेवी और आर्मी की जिसमें अधिकांश लोगों को सिर्फ एनसीसी के बारे में ज्ञात होता है । मैं अभी 3सीजी ... में तीसरे वर्ष का ... कैडेट हूँ । और मुझे इस बात का गर्व है ।

मैं अपने विद्यालय के दिनों में केवल पढ़ाई पर ही ध्यान देता था क्योंकि मुझे पढ़ाई करना अच्छा लगता था और मैं हर वर्ष अपने कक्षा में प्रथम स्थान लाता था। लेकिन जब मैं स्नातक करने के लिए दुर्ग आया तब मुझे लगा कि मुझे पढ़ाई के अतिरिक्त भी कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे मेरे व्यक्तित्व में निखार आये । फिर मैंने दौड़ना और एक्सरसाइज करना शुरू किया । शुरूआत में बहुत दिक्कत होती थी पर मुझे तो एनसीसी में दाखिला लेना था इसलिए मैंने अपने .....को तोड़ा । उसके बाद एनसीसी में चयन का दिन आया और मेरी मेहनत रंग लाई और मेरा एनसीसी में चयन हो गया।पहले तो ..... सर मना कर रहे थे क्योंकि मैं

अपना स्नातक दुर्ग से कर रहा था और एनसीसी क्लास रायपुर में होती थी । पर मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मैं प्रत्येक परेड में आऊँगा अगर मैं कोई क्लास में न आऊँ तो आप मुझे निकाल देना । सर मेरी बातों से प्रभावित हुए और मैंने फिजिकल और लिखित परीक्षा तो पहले ही अच्छे से उत्तीर्ण कर लिया था। इस प्रकार मुझे एनसीसी में एडमिशन मिल गया । मैं उस दिन बहुत खुश था ।

लेकिन असली परीक्षा तो अब शुरू होने वाली थी क्योंकि रायपुर में प्रत्येक शनिवार को परेड में रिपोर्टिंग टाइम 7.20 को था । मैं सुबह 4 बजे उठकर पहले नहाता, खाना बनाता और जल्दी-जल्दी रेलवे स्टेशन जाता । ट्रेन सुबह 6 बजे के आस-पास रायपुर के लिए रवाना होती थी। और कभी-कभी रेलवे-स्टेशन जाने में देर हो जाती तो बिना यूनिफार्म पहने टी-शर्ट और लोवर पहनकर चला जाता और फिर ट्रेन में जाकर यूनिफार्म चेंज करता जैसे एम.एस. धोनी

2021–22

फिल्म में धोनी बना हुआ फिल्म का हीरो सुशांत सिंह राजपूत जैसे करता था ।

इतना सब करने के बावजूद भी ट्रेन के लेट होने के कारण मैं भी लेट हो जाता था । और एनसीसी की क्लासमें मुझे 'रगड़ा' मिलता था । जब एनसीसी का द्वितीय वर्ष आया तो उस समय कोरोना महमारी ने दस्तक दे दिया और सब कुछ ऑनलाइन हो गया । द्वितीय वर्ष में जितने भी कैम्प हम कर सकते थे जिसका हमें काफी इंतजार था

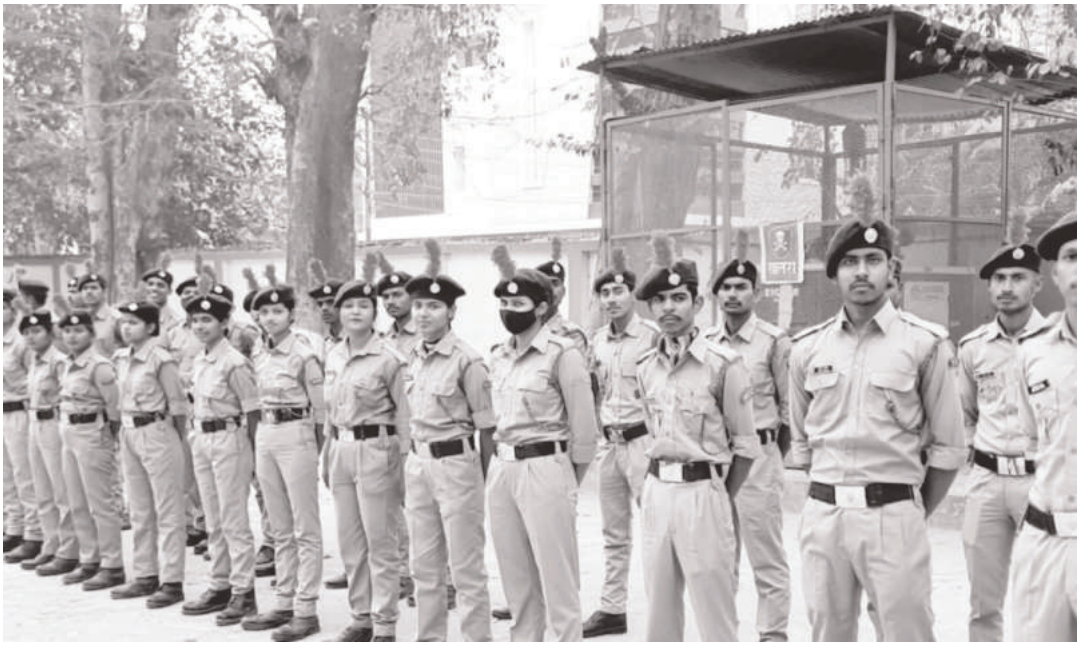

रदद कर दिये गये ।

अब बारी आती है तीसरे वर्ष के एनसीसी कैम्प की जो कि बहुत ही रोचक था जिसने मुझे जीवन का पाठ पढ़ा दिया । ... 7 दिवसीय कैम्प था जिसमें पहले दिन सभी तृतीय वर्ष के एनसीसी कैडेट्स को साइंस कॉलेज रायपुर में बुलाया गया जहाँ सभी लोग अपना जरूरी सामान पैककर के पहुँच गये । आधे घण्टे की प्रतिक्षा के बाद बस आयी और हम सबने उसमें अपना सामान रखा फिर उसके बाद बस में बैठते ही हमारे एनसीसी कैम्प की यात्रा शुरू हो गयी। साइंस कॉलेज से हमे कलिंगा यूनिवर्सिटी जाना था । हमारे साथ हमारे एएनओ सर भी मौजूद थे । इसके बावजूद सभी कैडेटस गाना गाते हुए और मस्ती करते हुए जा रहे थे।

कलिंगा यूनिवर्सिटी पहुँचने के बाद सब को रूम दिया गया । सभी ट्रैक सूट पहनकर ग्राउण्ड में 'फॉल इन' हुए । उसके बाद टेण्ट बनाना शुरू हुआ । टेन्ट बनाने में बहुत ज्यादा समय लग गया । लेकिन मजा बहुत आ रहा था । शाम को 7 बजते ही सब थाली चम्मच लेकर मेस हॉल जाने के लिये एक लाइन में लग गये । मेंस हॉल हमारे हॉस्टल से लगभग 1 कि.मी. दूर था जिसके कारण हमें एक लाइन में या 3 की फाइल बनाकर दौड़कर जाना पड़ता था।

खाना खाने के बाद फिर से दौड़कर जैसे ही वापस आये सभी को ग्राउण्ड में बुलाकर फॉल इन कराया गया । हमलोग सोच रहे थे कि आगे क्या होने वाला है, तभी सर ने हमें 'रगड़ा' देना शुरू कर दिया । ..... डड्डू .... और अंत में पुसअप । कैम्प के पहले ही दिन खाने के बाद किसी ने भी इस 'रगड़ा' की उम्मीद नहीं की थी । बाद में सर ने पूछा - क्या तुम सबको पता है कि यह रगड़ा क्यों दिया गया है ? तो हम सबने कहा - नहीं सर। फिर सर ने बताया कि हमने किसी भी स्टॉफ चाहे वे एयर विंग, एनसीसी या नेवी एनसीसी का हो, हमने 'जयहिन्द' विश नहीं किया । यह इसकी सजा है । नेवी एनसीसी वालों का भी कैम्प हम लोगों के साथ ही लगा हुआ था ।

अगली सुबह पी.टी. के लिये हम पाँच कैडेट्स

मैं, करण, हितेश अजय और रामाशीष यूनिफार्म में गये और बाकी कैडेट्स लोवर टी-शर्ट पहनकर सुबह 6:20 को ग्राउण्ड में पहुँचे । हम लोग फ्लैग हॉस्टिग करने लगे और बाकी कैडेट्स मार्निंग पी.टी के लिए चले गये । फ्लैग हॉस्टिंग के बाद हमने भी ट्रेक सूट पहना और पी.टी. के लिये चले गए । पी.टी. से आने के बाद यूनिफार्म में तैयार हुए और फाल इन होकर मेस हॉल गये । ब्रेक फास्ट आधे घण्टे का था । ब्रेकफास्ट के बाद हम वापस ग्राउण्ड गये जहाँ हमें ड्रिल का प्रैक्टिस कराया गया । एनसीसी के ड्रिल में 'लेफ्टराइट' के अलावा भी बहुत कुछ होता है । जिन-जिन चीजों में हमें कन्फ्यूस था उसे हमने क्लियर किया। हमारा दूसरा दिन ड्रिल प्रैक्टिस में ही निकल गया।

तीसरे दिन सुबह 6:20 से वही कैम्प रूटीन हुआ। आज हम लोग एयरपोर्ट जाने वाल थे । जीवन में पहली बार मैं एयरपोर्ट जा रहा था। करण जो कि मेरा बेस्ट फ्रेण्ड है वो हमारे ग्रुप का कमांडर बना हुआ था । हम दोनों में हमेशा किसी न किसी चीज को लेकर प्रतिस्पर्धा होते रहती है। मैं एयरपोर्ट में जाने के लिए बहुत ज्यादा एक्साइटेड था । एयरपोर्ट के बाहर लगभग एक घण्टे इतंजार करने के बाद अंततः हमें एयरपोर्ट में जाने का मौका मिला। एयरपोर्ट में प्रवेश करने के पहले हम सब का चेकिंग हुआ। एयरपोर्ट में जैसे ही पहुँचे बड़े-बड़े एयरो प्लेन, माइक्रोलाइट एयरक्राप्ट और एमआई-17 हेलीकॉप्टर देखकर मन प्रफुल्लित हो गया । हम सभी ने सभी का निरीक्षण किया ।

तेजी से टेक ऑफ और लैडिंग करते एयर क्रॉफ्ट बहुत ही रोमांचक लग रहा था । इसके बाद आने वाले दिनों में भी बहुत सी एक्टीविटी हुई जैसे - वॉलीबॉल, मैच, खो-खो, रस्साकसी इसमें हमारी .... 29 टीम जीत तो नहीं पायी पर हारने के बाद भी अपने आपको कैसे संभालना है दूसरों की जीत में भी हमें खुश होना चाहिए ये हमने सीखा ।

इसके बाद राफफल ड्रिल, शूटिंग और एयरोमॉडलिंग भी हुआ । जिसमें ब्रिगेडियर ए.के. दास सर भी आये और उन्होंने बताया की हमें हमेशा अपना शत-प्रतिशत देना चाहिए जिस भी कार्य को हम कर रहे हैं। कैम्प के छटवे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें ..... और .... दोनों की ओर स काफी शानदार प्रस्तुति दी गई । कार्यक्रम के अंत में जिन लोगों ने कैम्प में उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया था उन्हें पुरस्कृत किया गया । मेरा दोस्त करण बेस्ट कैडेट चुना गया । मैं यह देखकर बहुत खुश हुआ । साथ ही मेरे मन में यह भी विचार आ रहा था वो ही क्यूँ उस जगह पर मैं भी हो सकता था । क्योंकि ट्रेनिंग और एनसीसी तो सबने एक ही किया है। कैम्प से आने के बाद मैंने अपनी गलतियों का अवलोकन किया और पाया कि छोटी-छोटी चीजें ही हमारी जिन्दगी को नए मुकाम देती हैं । क्वालिटी तो उसमें भी थी और मुझमें भी पर उसने छोटी चीजों पर ध्यान दिया जिसमें शायद मैंने नहीं दिया और मैं बेस्ट कैडेट बनने से चूक गया ।

खैर ... ये तो एक छोटी-सी यात्रा थी जीवन की यात्रा अभी बाकी है अपनी गलतियों को सुधार कर बेस्ट कैडेट बनने की ... ।

GANDHIAN ECONOMICS

Riya singh, M.A. III Sem. (Economics)

Gandhian economics is a school of economic thought based on the spiritual and socioeconomic principles expounded by Indian leader Mahatma Gandhi. It is largely characterized by rejection of the concept of the human being as a rational actor always seeking to maximize material self-interest that underlies classical economic thinking. Where Western economic systems were (and are) based on what he called the "multiplication of wants," Gandhi felt that this was both unsustainable and devastating to the human spirit. His model, by contrast, aimed at the fulfillment of needs - including the need for meaning and community. As a school of economics the resulting model contained elements of protectionism, nationalism, adherence to the principles and objectives of non-violence and a rejection of class war in favor of socio-economic harmony. Gandhi's economic ideas also aim to promote spiritual development and harmony with a rejection of materialism. The term "Gandhian Economics" was coined by J. C. Kumarappa, a close supporter of Gandhi. Gandhi's thinking on what we would consider socia-secular issues (he himself saw little distinction between the sacred and its expression in the social world) was influenced by John Ruskin and the American writer Henry David Thoreau. Throughout his life, Gandhi sought to develop ways to fight India's extreme poverty, backwardness, and socio-economic challenges as a part of his wider involvement in the Gandhi sought to target European-made clothing and other products as not only a symbol of British colonialism but also the source of mass unemployment and poverty, as European industrial goods had left many millions of India's workers, craftsmen and women without a livelihood.

Gandhi was a self-described philo-

2021–22

sophical anarchist and his vision of India meant an India without an underlying government. He once said that "the ideally nonviolent state would be an ordered anarchy." While political systems are largely hierarchical, with each layer of authority from the individual to the central government have increasing levels of authority over the layer below, Gandhi believed that society should be the exact opposite, where nothing is done without the consent of anyone, down to the individual. His idea was that true self-rule in a country means that every person rules his or herself and that there is no state which enforces laws upon the people. This would be achieved over time with nonviolent conflict mediation, as power is divested from layers of hierarchical authorities, ultimately to the individual, which would come to embody the ethic of nonviolence. Rather than a system where rights are enforced by a higher authority, people are self-governed by mutual responsibilities. On returning from South Africa, when Gandhi received a letter asking for his participation in writing a world charter for human rights, he responded saying, "in my experience, it is far more important to have a charter for human duties." Gandhian economics do not draw a distinction between economics and ethics. Economics that hurts the moral well-being of an individual or a nation is immoral, and therefore sinful.

The value of an industry should be gauged less by the dividends it pays to shareholders than by its effect on the bodies, souls, and spirits of the people employed in it. In essence, supreme consideration is to be given to man rather than to money.

The first basic principle of Gandhi's economic thought is a special emphasis on 'plain living' which helps in cutting down your wants and being self-reliant. Accordingly, increasing consumer appetite is likened to animal appetite which goes the end of earth in search of their satisfaction. Thus a distinction is to be made between 'Standard of Living' and 'Standard of Life', where the former merely states the material and physical standard of food, cloth and housing. A higher standard of life, on the other hand could be attained only if, along with material advancement, there was a serious attempt to imbibe cultural and spiritual values and qualities. The second principle of Gandhian economic thought is small scale and locally oriented production, using local resources and meeting local needs, so that employment opportunities are made available everywhere, promoting the ideal of Sarvodaya. Gandhian economics has the following underlying principles:

1. Satya (truth)
2. Ahinsa (non-violence)
3. Aparigraha (non-possession) or the idea that no one possesses anything

While satya and ahimsa, he said were 'as old as the hills', based on these two, he derived the principle of non-pos-

2021–22

session. Possession would lead to violence (to protect ones possessions and to acquire others possessions). Hence he was clear that each one would need to limit one's needs to the basic minimums. He himself was an embodiment of this idea, as his worldly possessions were just a pair of clothes, watch, stick and few utensils. He advocated this principle for all, especially for the rich and for industrialists, arguing that they should see their wealth as something they held in trust for society - hence not as owners but as trustees. During India's independence struggle as well as after India's independence in 1947, Gandhi's advocacy of homespun khadi clothing, the khadi attire (which included the Gandhi cap) developed into popular symbols of nationalism and patriotism. Gandhian activists such as Vinoba Bhave and Jayaprakash Narayan were involved in the Sarvodaya movement, which sought to promote self-sufficiency amidst India's rural population by encouraging land redistribution, socio-economic reforms and promoting cottage industries. The movement sought to combat the problems of class conflict, unemployment and poverty while attempting to preserve the lifestyle and values of rural Indians, which were eroding with industrialisation and modernisation. Sarvodaya also included Bhoodan, or the gifting of land and agricultural resources by the landlords (called zamindars) to their tenant farmers in a bid to end the medieval system of zamindari. Bhave and others promoted Bhoodan as a just and peaceful method of land redistribution in order to create economic equality, land ownership and opportunity without creating classbased conflicts. Bhoodan and Sarvodaya enjoyed notable successes in many parts of India, including Maharashtra, Gujarat, Karnataka and Uttar Pradesh. Bhave would become a major exponent of discipline and productivity amongst India's farmers, labourers and working classes, which was a major reason for his support of the controversial Indian Emergency (1975-1977). Jayaprakash Narayan also sought to use Gandhian methods to combat organised crime, alcoholism and other social problems.

The proximity of Gandhian economic thought to socialism has also evoked criticism from the advocates of free-market economics. To many, Gandhian economics represent an alternative to mainstream economic ideologies as a way to promote economic self-sufficiency without an emphasis on material pursuits or compromising human development. Gandhi's emphasis on peace, "trusteeship" and co-operation has been touted as an alternative to competition as well as conflict between different economic and income classes in societies. Gandhian focus on human development is also seen as an effective emphasis on the eradication of poverty, social conflict and backwardness in developing nations.

IMPACT OF POLITICS ON ECONOMIC DEVELOPMENT

Ankit Dhote, Department of economics (1st sem.)

Economic development in any country is indirectly proportional to the political instability it is often said that the more the political environment in a country is in stable the more it is likely to have adverse in economic development.

One of the most important aspects of economic development remains the political stability as in bigger and democratic countries their economic development lies total in hands of political powers in today social life we can always see that political influences have a major role to play in the economic development of a particular area.

So it is said that if there is a political instability of the particular area it is very unlikely to have economic development at a faster rate.

India.

In a country like India where there are more than 70 parties which are politically active in their respective areas. The more political parties the more is a chance of variation in the party is winning the election and having the political powers over the respective areas. As when a economic development project is started in any area and after sometime it has a major change in the political variations in their democratic seats there is total chance that the project may be evident may be postponed or may be cancelled for a particular time which totally results in adverse economic development in addition they arrested the economic and employment opportunities on that area and the cost of the project also keeps on increasing this type of entrance is common in almost all areas of the

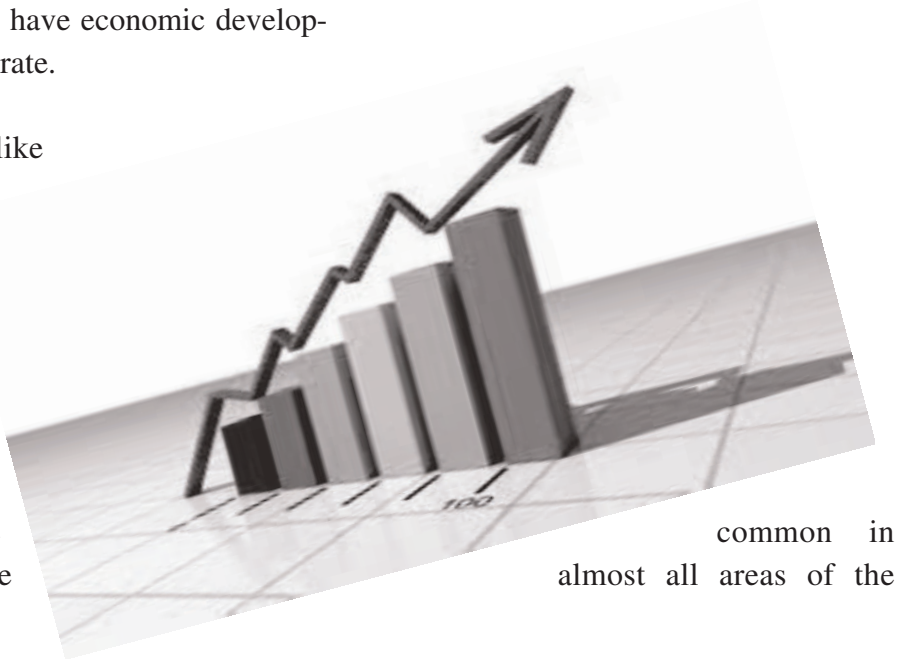

2021–22

country.

Political powers which are possessed by the the political parties are the first step through which many public projects are announced these projects totally contribute directly to the economic growth of the country mainly the project of infrastructure and service industry which plays a major role in economic development any change in political affairs of area results in delay of economic development opportunities in the area.

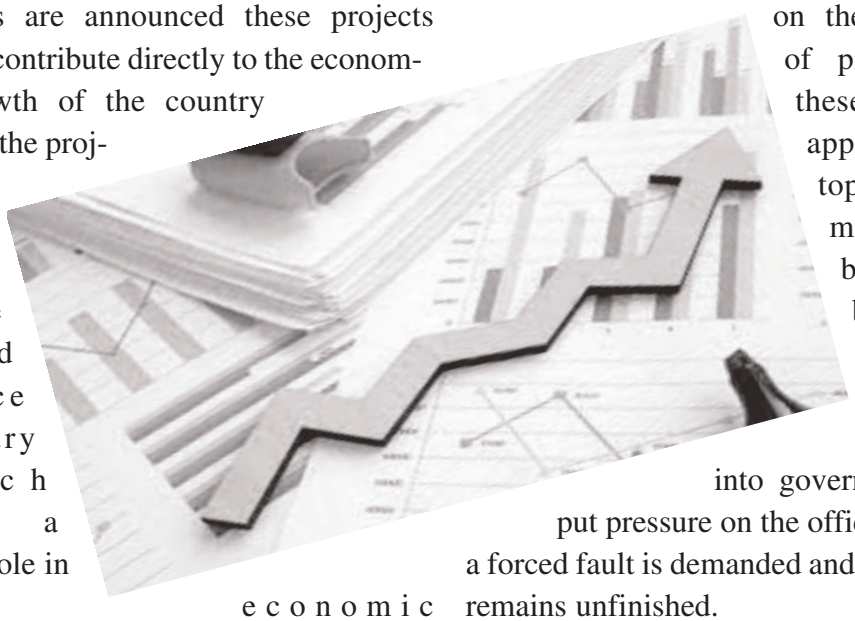

That's why it says that political instability leads to adverse economic development.

There should be proper measures taken by the topmost authority of the administrative powers of the country which would announce that if a economic development project is being carried on no political parties should have the power to abetment or postpaid or cancel it even if the project is not started by them there should be proper investigation on any cancellation of economic development.

Every project which is started by any political party is always the result of through management and meetings of a team of bureaucrats who worked under the the head of the government so there is no legal boundations on the stopping of projects as these were approved by top level management bureaucrats but when the other party comes into governance they put pressure on the officers so that a forced fault is demanded and the project remains unfinished.

CONCLUSION

The citizens of any country who are expecting a proper flow of economic development in their area should always keep in mind that un stable political environment can never lead to prosperous economic environment in a country or in any area. They have to make up their mind in a longer duration of period for not changing government in every five years. They have to adopt an ideology regarding the economic development of the area so that the process is started and finished in a particular time and for that projects are also started and have the possibility to be completed in the given period of time.

तुम पहरेदार हिमालय- सी

सोनल ताम्रकार, एम .ए . द्वितीय सेम. (हिन्दी)

1.

तुम पहरेदार हिमालय-सी
थकतीं तो हो, पर क्यों रुकतीं नहीं
मैं तुम पर उपजी पौधों की तरह
जो तेरे हृदय से हटती नहीं।
न जाने कितनी हवाएं,
मुझे छू कर जातीं हैं,
पर तुम मुझे हर आँधी -
तूफाँ से बचा लाती हो।
न जाने कितने ग्लेशियर, मुझ पर
परत बना जाते हैं पर
उस ठिठुरते ठंड में खुद को
भूल, मुझे गरमा जाती हो।
तुम देती हो नदियों को रास्ता, कि
मैं बहते पानी संग खेल सकूँ
और तुम पड़ने देती हो, खुद पर धूप
ताकि मैं जलने से पहले
सुलगना सीख सकूँ।

तुम मुझ पर पड़ने देती हो
बारिश की बूंदें
ताकि मैं सीख सकूँ अपना
अंतर्मन भिगाना और
ऐसा करते करते तुम मुझे भी,
सीखा देती हो हिमालय-सा बनना।

2.
पानी

पानी दान के मरम अउ धरम कहाँ गे
पानी के शुद्धता अउ गुणवत्ता नंदागे
पानी के पोगरई, चोराई धरम बनगे
तभ्भे तो सबके मुँह के पानी उतरागे
पानी पुन्न नंदागे, तरिया नदिया सुखागे
मनखे पानी पुन्न भुलागे, कलयुग खरागे ।

2021–22

कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम ?

पोषण (बी.एस-सी भाग-2)

जन्म से संघर्ष था, इंतजार करता था
जन्म के होते ही, सामने खड़ा यम था

ऐसे संघर्ष के समय में, कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम?
जन्म के होते ही, माँ से बिछड़ गया था मैं

आगे जीवन के लिए किसी गैर का हो गया था मैं
माँ की ममता छोड़कर क्या कभी रह सकोगे तुम?

ऐसे संघर्ष के समय में, कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम?

बचपन से चाहा जिस राधेय को
छोड़कर भला कैसे रह सकोगे तुम
जन्म से पालती, उस यशोदा को
क्या कभी छोड़ सकोगे तुम?

ऐसे संघर्ष के समय में, कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम?
कंस लगता था मामा, अभिमन्यु लगता भांजा था
शिशुपाल लगता भाई था, तो कर्ण भी भाई था

धर्म स्थापना के लिए, किस हद तक जा सकोगे तुम।
ऐसे संघर्ष के समय में, कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम?

आशीर्वाद मानकर चुपके से, श्राप गांधारी का स्वीकार किया।
तोड़ न सकता था क्या, तुच्छ श्राप को।

मान रखने माता का, श्राप जिसने स्वीकार किया
अपने वंश के नाश पर क्या, कभी चुप रह सकोगे तुम?

ऐसे संघर्ष के समय में, कहाँ तक कृष्ण हो सकोगे तुम?

कविता

देखना बापू !

अनुराग यादव, बी.एस-सी., भाग-दो (बायोटेक)

जिस दिन के खातिर की तूने मेहनत
वह दिन भी मैं ला दूँगा
तेरे हर खून पसीने का
परिणाम शानदार बना दूँगा।

खुद रहता था खाली पेट
मुझे भरपेट खिलाता था
ठंड लगती थी तुझको भी
पर मुझे कंबल ओढ़ाता था।

तू रोया, बिन आँसू बहाए
यह त्याग सफल बना दूँगा
तू भी पहने नए कपड़े
ऐसी दिवाली ला दूँगा ।

किस्मत की लकीरों को नहीं
तेरे सीख को साथी बनाऊंगा
अंधेरे के इस पल को मैं
दीयों से जगमगा दूँगा।

तुम्हारे इस त्याग को, देखना
बापू ! मैं सफल बना दूंगा।
बापू ! मैं सफल बना दूंगा।

खुद पर हो विश्वास अगर

मीनाक्षी वैष्णव, एम. ए. ।। सेम. (हिन्दी)

खुद पर हो विश्वास अगर
एक पल में वक्त बदल जाए।

हजारों मुश्किलें है घेरे
मेहनत के आगे टूटते हैं।

सूरज पर छाए बादल भी
एक न एक दिन छटतें हैं।

खुद पर हो विश्वास अगर
एक पल में वक्त बदल जाए।

2021–22

नवा पेड़ के गात इहां

रोशन लाल

हमर हरियर छत्तीसगढ़
हरेली के संदेश छत्तीसगढ़ ।

ऊच हे पर्वत घन जंगल
शनि रवि अउ सोम मंगल
साल महुआ तेन्दू के छांव
घाम थिराथे, इही ठांव ।

इहां दंतेश्वरी, इहाँ बमलाई
इहां कोरबा, इहां भिलाई
लोहा, कोयला, इस्पात इहाँ
नवा पेड़ के गात इहां ।

बोरे-बासी भात इहां
मीठ बोली बात इहां ।

तिर-तार मा गांव इहां
बर पीपर के छाँव इहां ।

घास पात के सुघ्घर झोपड़ी
रोटी पीठा बर बाँस के टोकरी
ओमा रखाए ठेठरी-खुरमी
मया बांटत हे दाई डोकरी ।

लड़े बिहनिया, साम ठिठोली
बदे मितान, जँवारा-भोजली।
जाँगर टोर कमइया इहां
बैठांगुर के काम कहाँ ।

हमर हरियर छत्तीसगढ़
हरेली के संदेश छत्तीसगढ़ ।

बात भारत भूमि की

अनिकेत गिरी, बी.एससी. (द्वितीय वर्ष)

बात सुनो भारत भूमि की
करूँ कलम से इसका बखान
जन्म लिये जिसमें विभूतियाँ
ऐसी है यह धरती महान ।।

सबसे प्राचीन यह देश हमारा
इसका वैभव जगत से न्यारा
वेद पुराण भी कहें महान,
बिन इसके जग लगे न प्यारा।।

भारतीय संस्कृति सबसे पुरानी
सबसे सुन्दर, सबसे निराली
सर्वे भवन्तु सुखिनः इसका मंत्र
कहे हर जगह हो खुशहाली ।।

कर्ण, दधिचि जैसे दानी हुए
हुए कृष्ण, पार्थ समवीर
विदुर, चाणक्य जैसे ज्ञानी हुए ,
सत्मार्ग दिखाए बुद्ध, महावीर ।।

धन सम्पदा से पूर्ण यह धरती
सोने की चिड़िया, था इसका नाम
ज्ञान-विज्ञन जन्में हैं इसी से
करता जगत-गुरु का काम ।।

धन वैभव पर होकर मोहित,
बाहरी शक्तियों का बिगड़ा मिजाज
छल-कपट का देकर परिचय
किया भारत-भूमि पर राज ।।

पीड़ा गुलामी की सहे थे वर्षों
देख वतन का जर्जर हाल
खून था खौला हर भारतीय का
आजादी पाने फिर उठी आवाज ।।

लड़ पड़े थे कई वीर इकट्टे
करने को देश स्वतंत्र आबाद
प्राण दे दिये लड़ते-लड़ते,
कर गए भारत माँ को आजाद ।।

आज स्वतंत्र है अपना भारत
चहुँ ओर इसका है गुणणान
रहते विभिन्न धरम के लोग
सब हैं पाते सुख का वरदान ।।

बात सुनो इस भारत भूमि की
करूँ कलम से इसका बखान
जन्म लेंगे फिर इसमें विभूतियाँ
क्योंकि है यह धरती महान ।।

जरूरत आग की

आरती साहनी, एम.ए. हिन्दी (तृतीय सेमेस्टर)

आज जरूरत है
उस आग की
जो बुझ गई है,
सबके मशालों से
याद नहीं ऊँचे
मचान पर बैठे लोगों को
आग की वह तपन
कि जब-जब जली है, आग
तब-तब देश बदला है
जब जनता नींद से जागी है ।
सत्ता के इस वर्चस्व के बीच,
मरती मानवता को जिंदा रखने
फिर आज आग जलाना होगा
फिर मशालों में आग लाना होगा
आग की इन लपटों से ही
निर्मम पूंजी का
किला टूटेगा ।
सत्ता के वर्चस्व का
खर्व होगा गर्व तब
बढ़-जाएगी जनता की अहमियत,
दिलाना होगा उन्हें, यह एहसास
कि नहीं हैं जनता के बिना
किसी सत्ता का अस्तित्व ।
इसलिए जरूरत है
फिर उस आग की,
फिर एक मशाल की ।

घर से दूर हमारा और घर

तीरथ राम सिन्हा (शोध छात्र भौतिक शास्त्र)

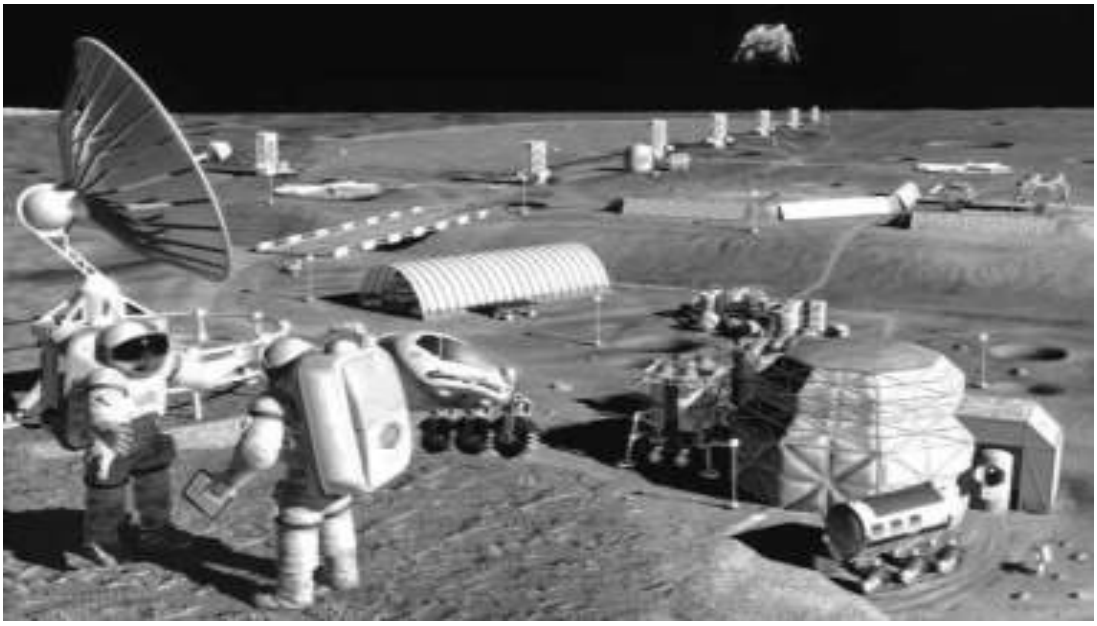

यदि आपको लगता है कि अन्य ग्रहों को बसाहट बनाने का विचार विशेष रूप से दूर की कौड़ी है, विज्ञान कथा फिल्म या पुस्तक के बाहर है, तो निजी अंतरिक्ष यात्रा कंपनी स्पेस एक्स के संस्थापक एलोन मस्क के पास आपके लिए एक आश्चर्यजनक जानकारी है। मस्क ने कहा है कि 70 प्रतिशत संभावना है कि वह अपने जीवनकाल में एक रॉकेट पर मंलग ग्रह की यात्रा करेंगे, और वह अंततः लाल ग्रह की सतह पर एक मानव चौकी में रहने के लिए वहाँ जाने के बारे में सोच रहे हैं ।

अन्य ग्रहों की यात्रा करना और उन्हें रहने लायक बनाना, वृहद अंतरिक्ष परियोजनाओं पर मनुष्यों को भेजना एक वास्तविकता है। हम पहला कदम उठाने के लिए तकनीकी रूप से तैयार हैं।

मंगल हमारा नया एवरेस्ट है और हर पर्वतारोही जानता है कि शिखर पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें शीर्ष पर नहीं, बल्कि पवर्तारोहियों के रहने और तैयारी करने के लिए एक बैसकैंप बनाने की आवश्यकता होते है। पर्वतारोहियों के शिखर पर पहुँचने के बाद, वे ठीक होने और घर लौटने केलिए बेसकैंप में वापस आ जाते हैं।

मंगल ग्रह के पास अंतरिक्ष यात्रियों के लिए बेसकैंप क्या होगा? यह मंगल की परिक्रमा करने वाला एक अंतरिक्ष स्टेशन होगा ।

लेकिन रुकिए, क्या मैंने मंगल कहा? हाँ मंगल ग्रह को बसाहट बनाने के लिए पहले, अपने निकटतम आकाशीय पड़ोसी पर विचार करना चाहिए । शुक्र ग्रह ? जी नहीं, यह शुक्र नहीं है - यह 'चंद्रमा' है।

वृहद् अंतरिक्ष में मनुष्यों की सुबह 'आर्टेमिस कार्यक्रम -

2022 वह वर्ष है जब अपोलो कार्यक्रम की बहन के रूप में, आर्टेमिस कार्यक्रम शुरू होगा, जिसका

2021–22

लक्ष्य मनुष्यों को चन्द्रमा पर वापस ले जाना है। ओरियन कैप्सूल (NASA-ESA) सहयोग चंद्रमा के चारों ओर अपनी पहली परीक्षण उड़ान भरेगा जो पृथ्वी पर लौटने के लिए निर्धारित है। हाँ, यह जल्द ही संभव नजर आता है।

ओरियन में नासा द्वारा बनाया गया एक क्रू मॉडयूल, आपात स्थिति के लिए एक लॉन्च एबॉर्ट सिस्टम और ESA द्वारा बनाया गया एक सर्विस मॉडयूल है, जो बिजली, प्रणोदन, एयर कंडीशनिंग और पानी प्रदान करेगा।

नई तकनीकों से परे, आर्टेमिस में अपोलो से कई अंतर हैं। यह केवल चन्द्रमा पर उतरने और पृथ्वी पर वापस आने के लिये यात्राओं की एक श्रृंखला पर नहीं जाएगा । आर्टेमिस बसने की योजना बना रहा है इस कारण से ओरियन एक बड़े सिस्टम का हिस्सा है, एक बेस कैंप वाला सिस्टम । हालांकि ओरियन कैप्सूल में एक क्रू मॉडयूल है पहले चरण के मिशन (आर्टेमिस) को क्रू नहीं किया जाएगा।

गेटवे चंद्रमा पर हमारा पहला बेस कैंप -

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के साथ बीस वर्षों का अनुभव प्राप्त करने के बाद, गेटवे मनुष्यों की मेजबानी करने वाली अगली अंतरिक्ष स्टेशन प्रयोगशाला है, जो इस बार चन्द्रमा की परिक्रमा कर रही है । इसमें मनुष्यों के लिये लम्बे समय तक रहने के लिए सही वातावरण होगा, वे वहाँ रह सकते हैं, काम कर सकते हैं और आपूर्ति कर सकते हैं । अभियान के लिये अंतरिक्ष यात्री गेटवे से चंद्र सतह पर जाएंगे। जब उनका काम हो जाएगा, तो वे गेटवे पर सुरक्षित लौट आएंगे और दुरुस्त होने के बाद घर वापस आने की तैयारी करेंगे ।

लेकिन एक ऑबिटर बेस कैंप और सतही स्टेशन क्यों नहीं? आखिरकार, चंद्रमा केवल तीन दिन दूर है। चन्द्रमा एक धूल भरा, कठोर वातावरण है जिसमें उच्च स्तर के आयनकारी विकिरण और अत्यधिक दिन-रात के तापमान में उतार-चढ़ाव होते हैं, यह लंबे समय तक रहने वाले निवासियों के लिए उपयुक्त नहीं है। बिना किसीअच्छी तरह से वातानुकूलित और संभवतः चींटी के निवास स्थान भूमिगत बांबी की संरचना वाली सुरक्षा के ।

मनुष्यों के लिये उपयुक्त सतह का आधार एक बड़ी संरचना होनी चाहिए, जो कि व्यावहारिक रूप से पूरी तरह से चंद्रमा की सामग्री से निर्मित होनी चाहिए । इसके अलावा पृथ्वी से बड़े टुकड़ों को लॉन्च करना और उन्हें अन्य ग्रहों पर उतारना बेहद मुश्किल है ।

हालांकि हमारे पास अंतरिक्ष में आरामदायक पर्याप्त रूप से बड़ी संरचना बनाने की तकनीक और जानकारी है, जैसा कि हमने आईएसएस के साथ किया था। पहले गेटवे के मॉडयूल पहले से ही निर्माणाधीन है, पावर प्रोपल्शन एलिमेंट, सेवा और ऊर्जा मॉडयूल (पीपीई, नासा योगदान) : और हैबिटेशन एंड लॉजिस्टिक आउटपुट, अंतरिक्ष यात्रियों के लिए पहला सुइट-केबिन (HALO ESA) योगदान । गेटवे चंद्रमा पर पहली विंडो प्रेक्षण केन्द्र, मॉडयूल एस्प्रिट की भी मेजबानी करेगा । संचालन में इन पहले मॉडयूल के साथ गेटवे ओरियन कैप्सूल को उतारने, अंतरिक्ष यात्रियों को वापस लाने और चंद्रमा पर लैंडिग को सहयोग करने के लिए तैयार होगा ।

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन घर से दूर हमारा पहला घर है और गेटवे वृहद अंतरिक्ष में हमारा पहला बेस कैंप होगा । अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन एक प्रयोगशाला है जो इस बात की जांच करती है कि बाहरी अंतरिक्ष जीवन, सामग्री, अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर और दिमाग को कैसे प्रभावित करता है - और ऐसा ही गेटवे होगा ।

इंसानों के साथ रोबोट भी हाथो-हाथ काम करेंगे -

लैंडिंग साइट तैयार करने, मनुष्यों के लिये

2021–22

अव्यावहारिक या खतरनाक स्थानों की खोज करने और अंततः सतह के आधार का निर्माण करने में रोबोट और रोवर महत्वपूर्ण होंगे । यह अनुभव मशीन-मानव सहयोग के बारे में हमारी समझ को बढ़ावा देगा, मंगल चलित मिशनों का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिसमें पृथ्वी से अंतरिक्ष यात्रियों की मदद करना अधिक चुनौतीपूर्ण होगा ।

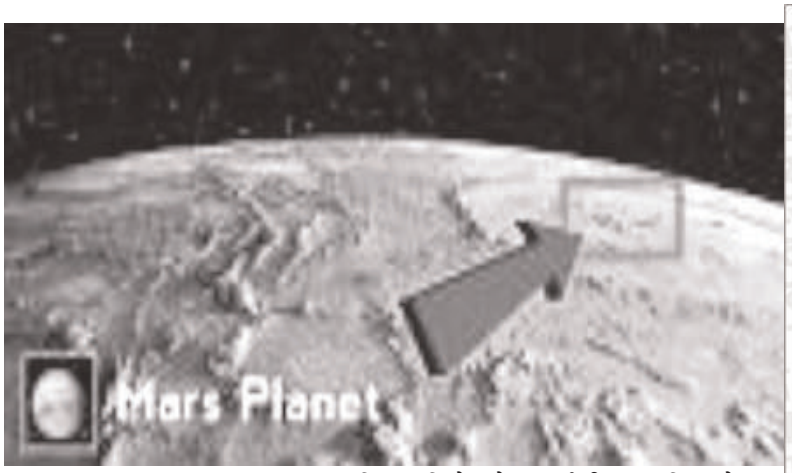

रोबोट, जो ऐसे मिशनों पर मनुष्यों को पछाड़ देंगे, खुदाई करने वाले, वाहन, प्रयोगशाला और संचार स्टेशनों के रूप में काम करेंगे । उनके मुख्य कार्यों में पानी की खोज और खनन या मार्ग खोलना शामिल है ।

उदाहरण के लिए, छोटे भूविज्ञान प्रयोगशाला पानी की उपलब्धता और प्राप्ति की संभावनाओं की जाँच करेगा। यह एक मीटर तक की गहराई तक ड्रिल करेगा और चंद्रमा के नमूने एकत्रित करेगा । एक अन्य उदाहरण है वोलाटाइल्स इनवेस्टिगेटिंग पोलर एक्सप्लोरेशन रोवर (viper) जो बर्फ के रूप में जमे पानी की खोज करेगा।

चन्द्रमा पर जाने के लिये रूस और चीन की दौड़ - आर्टेमिस एक अमेरिकी-यूरोपीय संयुक्त कार्यक्रम है (नासा के अन्य संभावित सहयोगियों के रूप में), रूस और चीन की चंद्रमा पर अनुसंधान स्टेशन के लिए अपनी योजनाएँ हैं : अंतर्राष्ट्रीय लूनर अनुसंधान स्टेशन (ILRS) । पिछले साल, ROSCOSMOS और CNSA ने चंद्रमा पर संरचना बनाने और वैज्ञानिक अनुसंधान गतिविधियों को अंजाम देने के लिये एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए । रूस और चीन कमजोर प्रतिस्पर्धी नहीं हैं । रूसी अंतरिक्ष का दिग्गज है । उन्होंने मीर और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के अग्रदूत सैल्यूट (1971में लॉच) का पहला अंतरिक्ष स्टेशन बनाया । ROSCOSMOS ने आवश्यक अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन मॉड्यूल प्रदान किए और 20 से अधिक वर्षों से लगातार अंतरिक्ष यात्रियों को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुँचाने वाली एकमात्र एजेंसी रही है ।

आर्टेमिस : मंगल ग्रह पर मानव फतह का संदेश –

आर्टेमिस कार्यक्रम मंगल ग्रह पर पहले 'मनुष्य के दस्तक' की दिशा में एक बड़ा कदम है। यह लंबी दूरी की उड़ानों के लिए, अंतरिक्ष यात्रियों को तैयार करने और सुरक्षित रूप से घर लौटने में मदद करेगा : केवल मंगल ग्रह पर उड़ान भरने में लगभग छह महीने की यात्रा होती है। अब तक रूसी अंतरिक्ष यात्री वालेरी पॉलाकोव का मीर स्टेशन पर अंतरिक्षमें 437 दिनों (1994 से 1995) का एक वर्ष से थोड़ा अधिक समय तक रुकने का रिकॉर्ड है। इसके बाद नासा के अंतरिक्ष यात्री स्कॉट केली और क्रिस्टीना कोच (महिला रिकार्ड) क्रमशः 340 व 328 दिन और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में रूकने का रिकॉर्ड है ।

नासा ने उल्लेख किया है कि आर्टेमस कार्यक्रम का एक हिस्सा अंतरिक्ष यात्रियों के लिये मंगल मिशन को प्रेरित करने के लिये कई महीनों तक गेटवे पर रहना है । उदाहरणतः एक अभ्यास के रूप में, 'दो चालक दल के सदस्य कक्षा की चौकी पर रहेंगे और काम करेंगे, जबकि अन्य दो चंद्रमा की सतह पर जाएंगे । आखिरकार, गेटवे पर एक साथ काम करना जारी रखने के लिये अंतरिक्ष में फिर से जुड़ जाएंगे व ओरियन की सहायता से घर वापस लौट आयेंगे ।

ooo

बस्तर का ढोकरा शिल्प

कु. भारती देवांगन, एम.ए. इतिहास, तृतीय सेमेस्टर

ढोकरा शिल्प कला दस्तकारी की एक प्राचीन कला है । बस्तर जिले के कोण्डागाँव के कारीगर 'ढोकरा मूर्तियों' पर काम करते हैं, जिसमें पुरानी 'मोम-कास्टिंग तकनीक' का उपयोग करके मूर्तियों को बनाई जाती है ।

ढोकरा एक 'अलौह मेटल कास्टिंग तकनीक है', जिसमें 'खोया मोम-कास्टिंग तकनीक' द्वारा बनाया जाता है । इस कला की शुरूआत 4000 साल पहले सिंधुघाटी सभ्यता तथा मोहनजोदड़ों के समय से हुई थी । मोहनजोदड़ों की खुदाई में मिली 'डासिंग गर्ल' या 'डांसिंग वुमन आइडल' ढोकरा कला का प्रमाण है । ढोकरा मूलतः जनजातीय कला है जो खानाबदोश थे । इन जनजातियों का विस्तार पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, झारखण्ड, पूर्वी छत्तीसगढ़ तथा मध्य-भारत से केरला तथा राजस्थान से उत्तर भारत तक है । 'ढोकरा कला' इन जनजातियों की सामान्य पैतृक कला रही है । 'ढोकरा कला' छत्तीसगढ़ के बस्तर के कोण्डागाँव में अत्यधिक प्रचलित है ।

यह कला आज भी बस्तर के कोण्डागाँव क्षेत्र में जीवित रखा गया है । कोण्डागाँव के भेलवापारा मोहल्ले में ऐसे सैकड़ों परिवार हैं, जो इस कला को अपने दैनिक जीवन का अंग बना बना चुके हैं । शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कार स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में आईक्यूएसी तथा विभाग द्वारा दिनांक 17.9.2021 से 27.09.21 तक 11 दिवसीय ढोकरा शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य विद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह सर के द्वारा की गई तथा ढोकरा शिल्पकला के महत्व के बारे में जानकारी दी गई । उदघाटन समारोह के पश्चात महाविद्यालय अडोटोरियम हॉल में कलाकार राजेन्द्र डाहोल व अनेक साथियों ने इस

2021–22

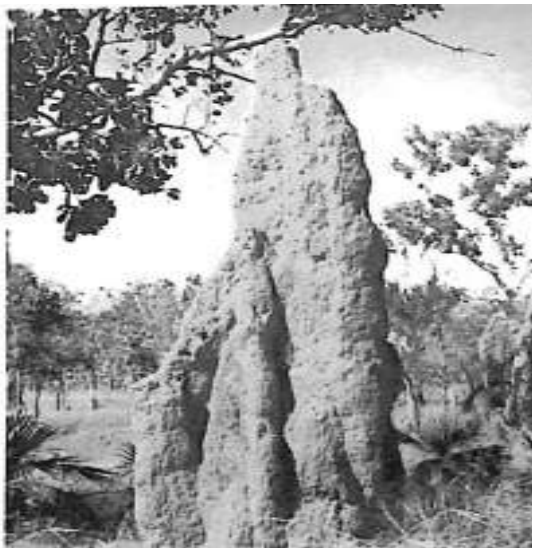

कला से बनने वाले कृतियों की निर्माण पद्धति को संक्षेप में बताया । प्रशिक्षकों ने मिट्टे के ढाँचे व मोम के धागों से आकृतियाँ बनाना सिखाया ।

'ढोकरा शिल्प कला' में दो तरह की मूर्तियाँ बनती हैं । पहली देवी-देवताओं की मूर्ति, जिसमें तेलगिन माता, कंकालिन माता, शिवाजी की मूर्ति प्रमुख हैं । दूसरी पशु-पक्षियों के मूर्ति, जिसमें घोड़ा, हाथी की मूर्ति प्रमुख है। इसके अलावा मछली, कछुआ, मयूर, शेर, हिरण इत्यादि बनाये जाते हैं।

मूर्ति बनाने की प्रक्रिया काफी जटिल व लम्बी होती है । बारीक डिजाईन बनाने के लिए मुधमक्खी के छाते से बनायी गई मोम का प्रयोग किया गया । यह अनुभव सभी विद्यार्थियों के लिए लाभदायक रहा । 'ढोकरा शिल्प' बनाने के लिए खेत की काली मिट्टी, नदी किनारे की मिट्टी तथा दीमक-बॉम्बी की मिट्टी, धान की भूसी का प्रयोग किया गया ।

विधि :- मूर्ति बनाने के लिए सबसे पहले मिट्टी तथा भूसी के मिश्रण से ढाचा तैयार किया गया, फिर सूखने के लिए रखा गया । सूखने के बाद लाल मिट्टी की परत चढ़ाई गई और उसे सूखने के लिए रखा गया । सूखने के बाद ढाचे को चिकनाहट देने के लिए सेंट पेपर की सहायता से घिसाई की गई । इसके बाद सेंट पेपर द्वारा पुनः घिसाई की गई व उसके ऊपर मोम का लेप चढ़ाया गया। जब मोम सूख गया तब उस पर मोम के पतले धागे से बाकि डिजाइन बनाया गया । धागे से हमने सुन्दर-सुन्दर व छोटी-बड़ी डिजाइन बनाया तथा उसे सूखने के लिए रख दिया गया । सूखने के पश्चात् मूर्ति को मिट्टी की परत से ढका गया । इसी प्रकार दो-तीन बॉम्बी मिट्टी की परात चढ़ाई गयी । प्रशिक्षण कार्य के मध्य पत्रकार भी आये तथा कला प्रशिक्षण के विषय में जानकारी ली ।

मिट्टी की छपाई जिसे 'छेना धराना' कहा जाता है, के बाद भट्टी तैयार किया गया जो हजार डिग्री सेल्सियस गर्म होती है। पीतल, टीन, ताँबे की धातु को भट्टी में गलाया गया, इसे पिघलाने में 4-6 घंटे का समय लगा, तब धातु पूर्ण रूप से पिघला । साथ ही जो मूर्ति थी उसे भी भट्टी में पकाया गया । जब यह पूरी तरह से पक गया तब पिघालाई गई धातु को ढाचे में धीरे-धीरे डाला गया और जो मोम का स्थान था, पीतल धातु (धातु) उसे कवर कर लिया । फिर उसे 4-6 घण्टे ठंडा होने के लिये रखा गया । ठंडा होने के बाद 'छैनी-हथौड़ी' की सहायता से मिट्टी निकालते गये । जो मिट्टी मूर्तियों में शेष रह गयी उसे ब्रश की सहायता से साफ किया गया। ज्यादा तर मूर्तियों को पॉलिश करते हैं जिससे मूर्तियों में चमक दिखाई पड़ती है जो अद्भुत होती है।

विस्तार - 'ढोकरा शिल्प कला'

छत्तीसगढ़ अंचल से प्रारम्भ होती है तथा इसका विस्तार भारत भर हुआ है । यह कला झारखण्ड, उड़िसा, पं. बंगाल, बस्तर (छत्तीसगढ़) मध्य भारत से केरल तथा उत्तर भारत के राजस्थान तक है । उड़ीसा तथा झारखंड में इस 'शिल्प कला' को सहेज कर रखा गया है । यहाँ भी विभिन्न आभूषण, पशु-पक्षियों की मूर्तियाँ देखने को मिलती है । 'ढोकला शिल्प कला' की केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अधिक माँग है । भारत (बस्तर) से बनी 'ढोकरा शिल्प कला' विदेशों तक पहुँच गयी है इस कला की प्रंशसा पूरे विश्व में हो रही है।

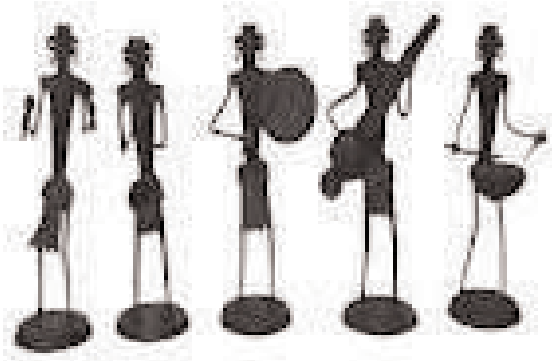

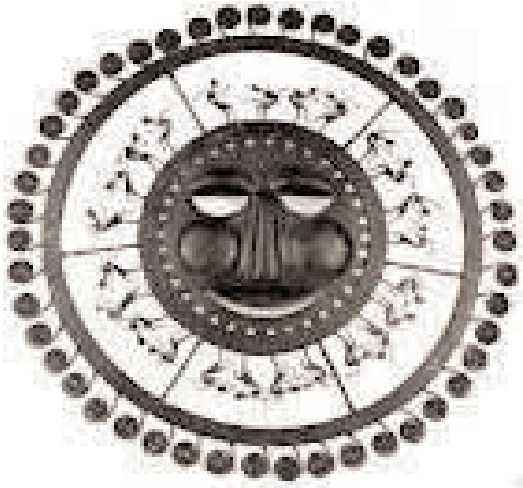

MY COVID STORY

Meha Sharma, Sem.-Ist (English)

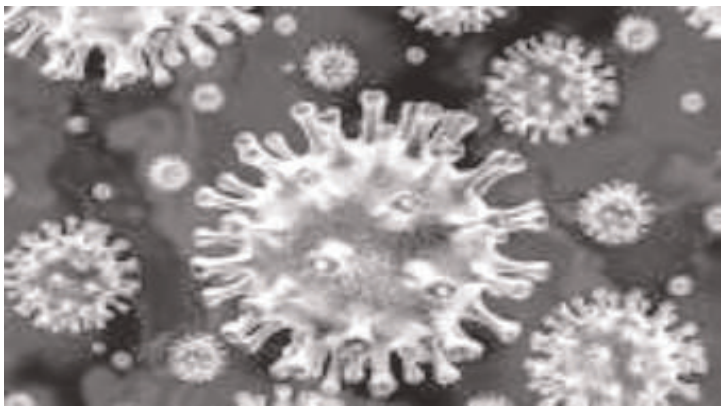

"Corona" this single word ha changed my whole perspective towards life. my never have imagined that such a tiny virus could cause so much of havoc, can kill pople separate people form their loved ones. This tiny virus has turned the whole world around. Ever since the virus came into my life, I had never thought that it could be so deadly. At some point in the life of a person, there is definitely a time when he finds himself helpless and very lonely and in my life this phase was brought by this virus. Everything was going well and I was happy too, then suddenly things started changing, things stooted folling, a part and I could do than to accept and handle the situation. It was really difficult for me to accept things as everyghing was happening so fast."

It all started with just a simple fever that had firstly come to my grandmother, we thought that it is just a simple fever and she will be fine soon, but that was our biggest mistake. We went to the room to meet her and things started geting worse. After 2-3 days my father and I also had fever but we thought it is just a normal viral fever. The worst thing was that we did not guess that we had corona and it was our negligence that we had fever and all the other symptoms and still we ignored it by thinking, we will be fine soon. But we three were covid tested positive, But by the time we got to know this. We were quite late as the virus spreads very fast in the body and directly attacks the lungs. We immdiately went to the doctor. My grandma and I started recovering because of medication but we got worred as the condition of my father became much critical from the very next day. He started coughing and his oxygen level. started decreasing. We immediately took him to the hospital to get him admitted, after all this the but the doctors immediately started his treatment.

The worst feeling in the world is to see your parent suffering in front of you and you are helpless nothing. But to look on the brighter side. I have realised many good things and the most important thing I have learnt is 'Life is nothing without family" I used to live alone at home. My mother and brother lived in the hospital with my father During this time. I realised that money has no value if you

don't have your family with you to spend it we were ready to give everything, I just wanted my father to recover soon. No one can ever take the place of the family members.

Loneliness teaches a lot to a person I learned a lot and now I feel I can handle the bad situations of my life, Nodoubt, my friends and relatives supported and encouraged me, but the real pain can be only felt by the person who is actually suffering. Words can merely express the pain but the anxiety and the restlessness I had during those 20 days when my father was admitted, I was unalbe to even take food down my throat, only wished my father to be fine. I remember, I used to ask only one question to everyone and that was when will my father come home, I felt scared because the condition of the nation was very bad, people were dying and losing their loved ones but I have always believed in God, I used to pray all the time, my brother and mother were staying in the Covid ward with my father.

I actually realized what 'grief" is, "its a hole you walk around in the daytime and at night you fall into it. But the most important thing. I experienced was that nothing is certain in life, anything can happen anytime and we just have to accept the uncertainities of life and never to lose hope. It is up to us how we want to see it' I realized gets eventually things because better with time and it is that we have to keep our spints up, a man should never lose his spirits and everything goes well.

I feel bad for those who lost their loved ones but, I also feel death is never the end though, we live on in the memories of those who remember us, we live on through the legacy we left behind. We live as though we shall live forever, unaware of when we shall meet our end, but the memories that we make are what matters and it is the memories that we cherish.

I used to get flashbacks of the conversations and the moments I had with my famuly, When they were not with me in the house words. Would run short to explain how what I felt when my futher finaly came home, the peace the joy and relief I received was ultimate and I felt like I had scen heaven, I couldn't control myself then and I hugged him.

I still wonder how that this phase tought me so much. I see whats happening around us the whole nation but the day is not far when people will not be scared of each other, when they will not run away form each other. I know thesedays wil also pass soon and we all would be able to live once again the life and be happy in the new world.

EXPERIENCE DURING COVID-19 PANDEMIC

Megha Chandani, M.A. Sem.-Ist (English)

I remember in March 2020, I had my final exams of Bsc. final year. I was studying Organic Chemistry for my exams at home then suddenly my friends and cousins called me and told that our next remaining exams have been postponed.

But we all waited until the college had provided a confirmed notice. I won't lie but I was very happy about the news of postponing of exams. Because I got more time for studies. Then the Lockdown was declared when the number of confirmed positive coronavirus cases in India reached approximately 500. On the evening of 22nd march 2020 the Government of India under prime minister Narendra Modi ordered a nation wide lockdown for 21 days to prevent the population of India against Covid-19. It was Ordered after a 14 hour voluntary public curfew on 22nd march When the sudden but necessary lockdown was imposed upon us, whole nation was astonished. I was not much worried, after all, how hard could staying at home possible be? On the next day of lockdown I purchased Netflix subscription. I started watching movies and series whole day and night, with little tension of exams. I used to study twice or thrice in a week . Being a tutor I changed my way of teaching from offline to online. I used to take 4 regular batches of my students and I creative class which I started during lockdown through Zoom and Google meet. It was exciting and challenging task for me to make them underst and everything via online. All my student scored good marks. After this end of session. I was free at home. I started waking up late in the morinng. Then my parents forced me to watch the "Ramayana" with them. We all enjoyed watching Ramayan together. I still miss all those taunts which my family members gave to me and my Cousins. I was so ohsessed with all this "activities. Almost a month later I realised that lockdown gave me more time to enjoy the things I loved. I used to cook & bake delicious food for my family. I made lots of sketching during lockdown. Sometimes I used to play ludo and PuBG with my friends . Watching and

making tiktok videos and drinking "Kadha" (it is the worst drink I every have) twice a day become part of my lockdown. In the month of June I had my exams (Online). I was happy with my result as I got 2nd position in the class. Although it was online but still I was happy after all "Nakal ke liye bhi to Akal ki Jarurut hoti hai." At the end of June 2020 the Unlock started. In the first week of Unlock my (Grand Father) got covid positive. My Whole family was scared and tensed but we dealt with patience and with the help of doctors every thing became fine. I felt very bad when my "Dadul" stayed alone in room for 21 days I used to talk to him through video calls daily. My Dadu is a fighter, he fought with Corona and become super duper fine again. There were all the bad and depressing news on the social media, they all spreded alot of negitivity. Such tasks given by our honorable prime minister like, playing thali and utensils and buring (Diya) Lamp for five minutes after switching off all the lights of houses. They filled us with lots of positive energy. Masks and sanitizes became new normal for me. I used to wear mask on daily basis and do not allow any student without mask and sanitizer in the class. After the unlock the second wave of covid came to India. Then again Lockdown. Staying at home, using mask and sanitizer online classes, less traffic and polution, dealing with stressful news is new normal for me.

It is important to understand and realise the life lessons which the period of lockdown has given to us. No matter how awful situations may become there is always a way. We all got vaccineted. I think situations like the one we are living bring out the best and worst of any human being. This experience has also taught me to enjoy the little things in life that we take for granted. I guess the two words best describe how I felt during this lockdown . They are 'Uncertainty and Anxiety.' Uncertainty because I had no control over what was transpiring in a short amount of time. I learned that adapting is the best form of survival, I can not predict what the situation would be, but now I am ready for it. I would do my best to enjoy every single minute of my life. I am a streng, believer, that , the human spirit is capable of creating positive change and I am sure that we all will overcome this situation soon.

000

2021–22

हिन्दी का शेक्सपियर - रांगेय राघव

दीपक आनंद सिंह, एम.ए. हिन्दी (तृतीय सेमेस्टर)

आधुनिक काल के प्रगतिवादी युग के साहित्यकार रांघेय राघव जी का जन्म 17 जनवरी सन् 1923 को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में हुआ था। इनका पूरा नाम तिरूमल्लै नंबकम वीरराघव आचार्य था। लेकिन उन्होंने साहितिय्क जगत में अपना नाम 'रांगेय राघव' रखा था। इनके पूर्वज लगभग 300 वर्ष पूर्व आरकाट से जयपुर नरेश के निमन्त्रण पर आए थे बाद में वे आगरा में आकर बस गए। इनके पिता श्री रंगाचार्य, माता श्रीमती कनकवल्ली और पत्नी श्रीमती सुलोचना थीं। आगरा में ही इनकी शिक्षा-दीक्षा हुई व आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. और पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

रांगेय रावघ हिन्दी कथा साहित्य के उन विशिष्ट और बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकारों में से हैं जो अल्पायु लेकर इस संसार में आए। छोटी-सी आयु में अपनी लेखनी के साथ उपन्यासकार, कहानीकारी, निबंधकार, आलोचक, नाटककार, कवि, इतिहासवेत्ता तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में स्वयं को स्थापित कर दिया। रांगेय राघव जी को प्रसिद्धि उनके रिपोतार्ज से मिली। उस समय हिन्दी में रिपोतार्ज बहुत कम लिखे जाते थे। बंगाल के अकाल की विभीषका पर रिपोर्ताज 'तूफानों के बीच' में उन्होंने जो कीर्तिमान स्थापित किया वह आज भी अविस्मरणीय है। यह हिन्दी साहित्य में अपने आप में नई विधा थी। इसके साथ ही अपने रचनात्मक कौशल से हिन्दी साहित्य को नए आयाम दिए।

रांगेय राघव ने हिन्दी साहित्य के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर जीवनीपरक उपन्यासों की रचना करके यथार्थवादी साहित्य का अंबार लगा दिया। इस कथा शिल्पी ने रिपोर्ताज लेखन, जीवन चरितात्मक उपन्यास और यात्रा साहित्य की परम्परा डाली। कथाकार के रूप में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से प्रेमचंदोत्तर रचनाकारों को इन्होंने कड़ी टक्कर दी।

रांगेय राघव का विपुल साहित्य उनकी अभूतपूर्व लेखन क्षमता का परिचायक है, जिसके बारे में कहा जाता है कि जितने समय में कोई व्यक्ति पुस्तक पढ़ता है, उतने समय में वे एक पूरा उपन्यास लिख सकते थे। इन्होंने विविध विधाओं में रचना करके अपनी साहित्यिक प्रतिभा का अनुपम परिचय दिया है।

रांगेय राघव जी की साहित्यिक कृतियाँ :-

उपन्यास :- विषाद मठ, लाखिमा की आँखें, राह न रूकी, मुर्दों का टीला, कब तक पुकारूँ, उबाल, देवकी का बेटा, रत्नी की बात, भारती का सपूत, पक्षी और आकाश, राई और पर्वत, आखिरी आवाज इत्यादि।

कहानी संग्रह :- रामराज्य का वैभव, समुद्र के फैन, अधूरी मूरत, गूँगे, बादल, जीवन के दाने, इंसान पैदा हुआ।

यात्रा वृत्तान्त :- अंधेरा रास्ता के दो खंड, रैन और चंदा के दो खंड।

रिपोतार्ज : - तूफानों के बीच

अनूदित कृतियाँ :- जैसा तुम चाहो, हैमलेट, वेनिस का सौदागर, निष्फल प्रेम, तिल का ताड़, तूफान इत्यादि ।

आलोचनात्मक ग्रंथ : - भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका, भारतीय संत परम्परा और समाज, संगम और संघर्ष, प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, प्रगतिशील साहित्य के मानदंड इत्यादि ।

काव्य संग्रह :- पिघलते पत्थर, श्यामला, अजेय, खंडहर, मेधावी, राह के दीपक, रूप छाया ।

नाटक : स्वर्ण भूमि की यात्रा, रामानुज इत्यादि ।

रांगेय राघव जी की प्रथम रचना सन् 1946 में 'घरौंदा' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई । यह विश्वविद्यालय जीवन पर लिखा गया हिन्दी का प्रथम उपन्यास था । 'घरौंदा' उपन्यास से वे प्रगितशील कथाकार के रूप में चर्चित हुए । रांगेय राघव जी ने 'गूँगे'नामक कहानी की रचना की । जिसमें उन्होंने एक मूक बधिर व्यक्ति की पीड़ा को व्यक्त किया है। इस कहानी में राघव जी ने बताया है कि एक मूक-बधिर व्यक्ति जो किसी के समक्ष दया का पात्र नहीं बनना चाहता वह अपने स्वाभिमान को जीवित रखना चाहता है, जिसके कारण उसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। इस कहानी के माध्यम से राघव जी ने समाज की संवेदनहीनता पर करारा प्रहार किया है । उनकी रचना अत्यन्त ही अर्थ गर्भित परिलाक्षित होती है । रांगेय राघव ने अपनी पहली रचना कविता 'चित्रकला' (1936-370 से हिन्दी साहित्य में पर्दापण किया और आश्चर्य एवं कौतूहल की बात यह है कि उनकी अंतिम रचना भी एक कविता ही रही जबकि हिन्दी साहित्य जगत में उनकी ख्याति एक प्रतिष्ठित गद्य लेखक की है ।

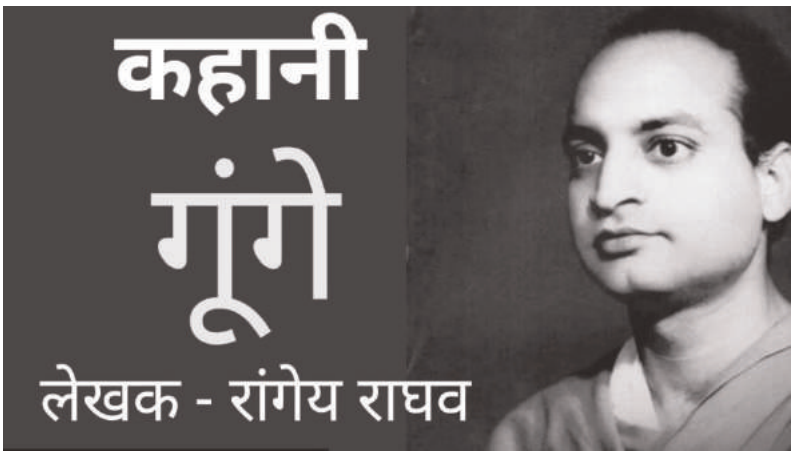

रांगेय राघव जी ने जर्मन और फ्रांसीसी के कई साहित्यकारों की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया । उन्होंने शेक्सपीयर के दस नाटकों का भी हिन्दी में अनुवाद किया। वे अनुवाद मूल रचना सरीखे थे इसलिए रांगेय राघव जी को हिन्दी जगत का 'शेक्सपीयर' कहा जाता है। राघव जी को हिन्दी के अलावा तमिल, तेलुगू, उर्दू, कन्नड़, संस्कृत आदि भाषाओं का भी ज्ञान था । उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं की रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में किया जिसे पाठक वर्ग बड़े ही आनन्द के साथ पढ़ते थे।

रांगेय राघव जी के अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास उन चरित्रों से जुड़ी महिलाओं के नाम पर लिखे गए हैं जैसे - 'भारती का सपूत' जो भारतेन्दु हरिशचन्द्र जी की जीवनी पर आधारित है, 'लखिमा की आँखे', विद्यापति के जीवन पर, 'रत्ना की बात' तुलसी के जीवन पर और 'देवकी का बेटा' कृष्ण के जीवन पर आधारित है । इसके अलावा रांगेय राघव जी ने ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रों को एक स्त्री के नजरिये से देखने की कोशिश की, उनकी यह सोच उनको अन्य साहित्यकारों से अलग बनाती है, जबकि उस समय हिन्दी साहित्य में आधुनिक स्त्री विमर्श का पर्दापण भी ठीक से नहीं हुआ था। उनकी कहानी 'गदल' आधुनिक स्त्री-विमर्श की कसौटी पर खरी उतरती है । यह कहानी बहुत लोकप्रिय हुई जिसका अनेक विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया।

रांगेय राघव जी ने कहानी के पारम्परिक ढांचे में

बदलाव लाते हुए नवीन कथा प्रयोगों द्वारा मौलिक कलेवर में विस्तृत आयाम दिये । रिपोतार्ज लेखन, जीवन चरितात्मक उपन्यास और यात्रा गाथा की परम्परा डाली । विशिष्ट कथाकार के रूप में इनकी सृजनात्मक संपन्नता प्रेमचंदोत्तर रचनाकारों के लिये बड़ी चुनौती बनी ।

मानवीय सरोकार के लेखक थे रांगेय राधव –

रांगेय राघव ने अपने रचनाओं की विषय वस्तु के रूप में आम जनजीवन का समूचा चित्रण किया है । वह लेखन के किसी वाद में नहीं बँधे । उनका कहना था कि उन्होंने न तो प्रयोगवाद और प्रगतिवाद का आश्रय लिया और न ही प्रगतिवाद के चाल में अपने को यांत्रिक बनाया। वह मूलतः मानवीय सरोकारों के लेखक थे । रांगेय राघव प्रेमचंद के बाद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक लेखक माने गए ।

रांगेय राघव जी की साहित्यिक विशेषताएं –

भारतीय संस्कृति व ऐतिहासिकता के अमर गायक रांगेय राघव जी ने मात्र तेरह वर्ष की आयु में लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इस कथा शिल्पी ने अपने जीवन के विविध आयामों को कथा साहित्य के माध्यम से उद्घाटित किया । शायद बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होगा कि हिन्दी साहित्य का यह अद्भुत व्यक्तित्व रखने वाला व्यक्ति वस्तुतः तमिल भाषी था । जिसने हिन्दी साहित्य और भाषा की सेवा की । वे अपनी अलौकिक प्रतिभा के कारण ही हिन्दी के शेक्सपियर के नाम से विख्यात हुए । रांगेय राघव जी ने भारतीय संस्कृति व ऐतिहासिकता का समन्वय किया। इनके रचनाकर्म को देखें तो उन्होंने अपने लेखन से पुराने दौर के इतिहास से मानवीय जीवन के दुख -दर्द, पीड़ा और संघर्ष व उसकी चेतना को सत्य माना। यह इनकी रचनाओं में मार्मिकता और सजीवता को अनुभव किया जा सकता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन के विविध आयाम को रेखांकित किया है ।

रांगेय राघव जी की भाषा-शैली –

उनकी भाषा शैली सरल, सुबोध व संप्रेषणीय है। उनका जीवनीपरक कथा साहित्य में संस्कृति व ऐतिहासिकता को जीवंत रखने के लिये बीच-बीच में मुहावरों व लोकोक्तियों के प्रयोग से संवाद-योजना व शब्द संयोजन का आकर्षण पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देता है । जिसके कारण पाठक इनकी रचनाओं को पढ़ने से ऊबते नहीं बल्कि नई ऊर्जा के साथ उनकी रुचि बराबर बनी रहती है । इनकी रचनाओं की भाषा अत्यन्त सरल है । संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि रांगेय राघव जी अदभुत प्रतिभा के साहित्य शिल्पी रहे हैं । वे हिन्दी साहित्य के अद्वितीय हस्ताक्षर रहे थे ।

सम्मान और पुरस्कार –

रांगेय राघव जी को उनकी रचनाओं के लिए उनके छोटे से जीवनकाल में कई पुरस्कार व सम्मान मिले। उन्हें वर्ष 1951 में 'हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार' मिला।

सन् 1957 में उत्तरप्रदेश शासन द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' सन् 1961 में 'राजस्थान साहित्य अकादमी सम्मान' मिला । उन्हें मरणोंपरान्त वर्ष 1966 में 'महात्मा गाँधी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया ।

12 सितम्बर सन् 1962 को महाराष्ट्र के मुम्बई में हिन्दी साहित्य जगत का यह चमकाता हुआ सितारा कैंसर के बीमारी से जंग लड़ते हुए केवल 37 वर्ष की अल्पायु में ही इस संसार को छोड़ गया ।

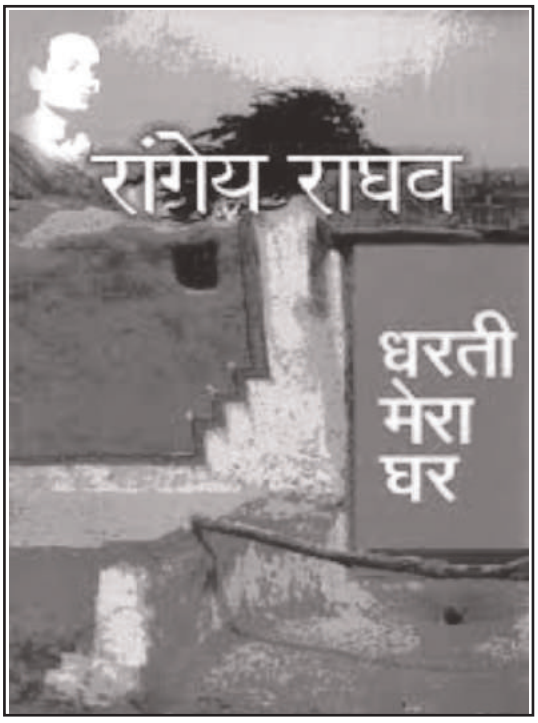

मौलिक अधिकार एवं कर्तव्य

कु. शैली गौतम, एम.ए. तृतीय सेमस्टर (अर्थशास्त्र)

संविधान का निर्माण - संविधान एक लिखित दस्तावेज है जिसमें राज्य के बारे में कई प्रावधान होते हैं यह प्रावधान बताते हैं कि राज्य का गठन कैसे होगा और किन सिद्धान्तों का पालन करेगा । इसे राज्य के समस्त अंगो (विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका) की शक्तियाँ प्राप्त होती है ।

संविधान बनाने वाली सभा को संविधान सभा कहते हैं । इसकी पहली बैठक 9 दिसम्बर 1946 को हुई थी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष थे । संविधान सभा में डॉ. भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति का गठन हुआ । इस प्रारूप को तैयार करने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन का समय लगा ।

नया संविधान, संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को अपनाया गया और यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, इसीलिए प्रतिवर्ष इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। इस संविधान ने हमें मौलिक अधिकार प्रदान किये हैं तो हमारे कर्त्तव्य भी निर्धारित किये हैं ।

1. समानता का अधिकार - संविधान की प्रस्तावना में समानता को 2 भागों में बाटा गया है -

1. प्रतिष्ठा की समानता
2. अवसर की समानता

समानता का अर्थ है कि देश में कानून के समक्ष सभी नागरिक समान हैं अर्थात् हमारे देश का कानून, धर्म, लिंग, जाति, रंग और नस्ल के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करता । अस्पृश्यता एक दंडनीय अपराध है ।

उदाहरण - यदि किसी पूंजीपति या कुलीन को किसी अपराध का दोषी पाया जाता है तो उसे वही दंड दिया जाता है जो सामान्य व्यक्ति को दिया जाता है । कोई भी व्यक्ति अपने पद या पृष्ठभूमि के कारण विशेष व्यवहार का

दावा नहीं कर सकता ।

- विधि के समक्ष समानता एवं विधियों का समान संरक्षण (अनुच्छेद 14)

- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थल के आधार पर विभेद का प्रतिषेध (अनुच्छेद 15)

- लोक नियोजन के विषय में अवसर की समानता (अनुच्छेद 16)

अस्पृश्यता का अंत (अनुच्छेद 17)

- उपाधियों का अंत (अनुच्छेद 18)

2. स्वतंत्रता का अधिकार - (अनु. 19-22)

स्वतंत्रता का अर्थ है चिन्तन, अभिव्यक्ति और कार्य करने की स्वतंत्रता । स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि हम जैसा चाहे वैसा करने लगें । अतः स्वतंत्रता को इस

2021–22

प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि बिना किसी की स्वतंत्रता को नुकसान पहुँचाए, कानून व्यवस्था को बिना ठेस पहुँचाए हर व्यक्ति अपनी-अपनी स्वतंत्रता का उपभोग कर सके ।

अनुच्छेद 25 - अंतःकरण धर्म को अबाध रूप से मानने आचरण व प्रचार करने की स्वतंत्रता

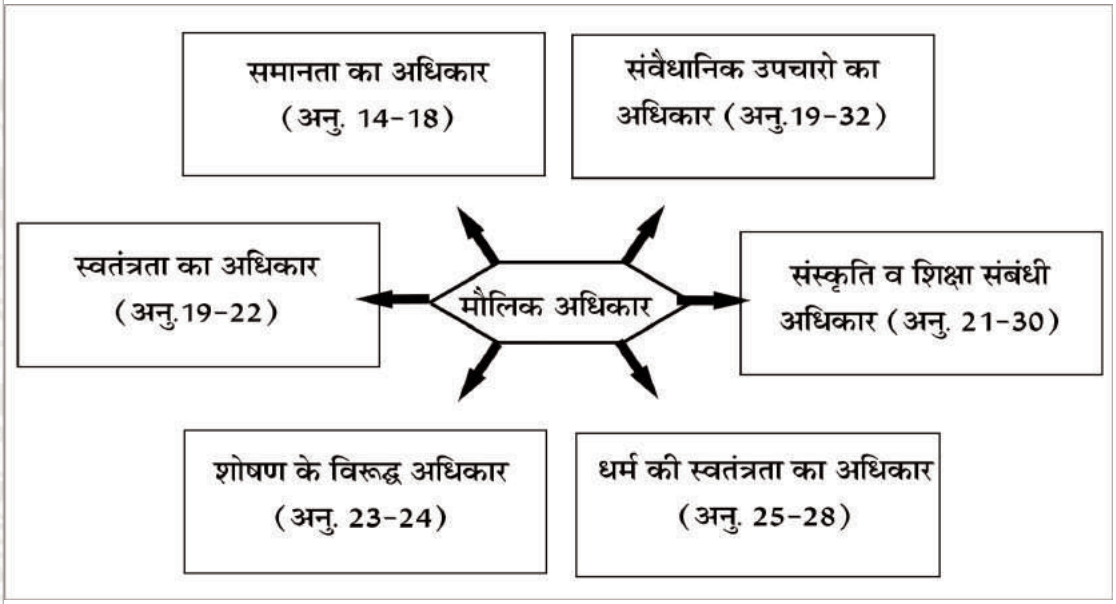

अनुच्छेद 27 - धार्मिक गतिविधियों के प्रबंध का अधिकार ।

अनुच्छेद 28 - कुछ शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के बारे में स्वतंत्रता ।

3 संस्कृति व शिक्षा संबधी अधिकार - (अनु 29-30)

हमारा संविधान मानता है कि 'विविधता' हमारे समाज की मजबूती है अतः अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति बनाए रखने का मौलिक अधिकार प्राप्त है । भाषायी या धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय को अपनी भाषा लिपि और संस्कृति की रक्षा करने का अधिकार है साथ ही ये शैक्षिक संस्थाएँ स्थापित और संचालित कर सकते हैं । शिक्षण संस्थाओं को वित्तीय अनुदान देने के मामले में भी सरकार भेदभाव नहीं करेगी ।

अनुच्छेद 29 - अल्पसंख्यकों के अधिकार

अनुच्छेद 30 शिक्षण संस्थानों की स्थापना और प्रशासन करने का अल्पसंख्यक वर्गों का अधिकार ।

4. संवैधानिक उपचारों का अधिकार - (अनुच्छेद 32) अनु. 32 को 'डॉ. भीमराव आम्बेडकर' ने संविधान हृदय एवं आत्मा कहा है । नागरिकों को अधिकार देना ही पर्याप्त नहीं है यह देखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि सरकार उनके अधिकारों की रक्षा व सम्मान करे । यदि किसी नागरिक को मौलिक अधिकार नहीं दिए जाते या बिना किसी कारण सरकार उसके विरूद्ध शक्ति का अन्यायपूर्ण प्रयोग करती है, तो ऐसी स्थिति में संविधान प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार देता है कि वह अपने अधिकारों को लागू करवाने हेतु उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय का शरण ले सकता है ।

आधारभूत स्वतंत्रता - प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त कर सकते हैं ।

- शांतिपूर्वक तथा बिना हथियारों के एकत्रित होकर जनसभा कर सकते हैं ।

- सस्था या संघ बना सकते हैं ।

- स्वतंत्रतापूर्वक भ्रमण कर सकते हैं या भारत के किसी भी भाग में जा सकते हैं ।

- भारत में किसी भी जगह नौकरी या व्यवसाय कर सकते हैं ।

5. शोषण के विरूद्ध अधिकार - (अनुच्छेद 23-24)

शोषण का अर्थ है किसी व्यक्ति की मजबूरी का फायदा उठाना जैसे उचित मजदूरी न देना ।

संविधान यह भी कहता है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों, खदानों और अन्य खतरनाक जगहों पर काम में नहीं लगाना चाहिए । अतः यह आवश्यक है कि सरकार इस प्रकार के शोषण को रोकने हेतु प्रयास करे।

अनुच्छद 23 - मानव के व्यापार और बालश्रम का प्रतिषेध ।

अनु 24 - कारखानों आदि में बच्चों के नियोजन पर प्रतिबंध है ।

6. धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार - (अनु.25-28)

भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसन्द के धर्म पालन करने का अधिकार है । भारत एक पंथ निरपेक्ष देश है, प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के अनुसार पूजा, उपासना और प्रचार करने का अधिकार है । सरकार के लिये सभी धर्म समान है वह किसी भी एक धर्म को वरीयता नहीं दे जा सकती ।

मौलिक कर्त्तव्य - भारतीय नागरिक के रूप में हमें अपने संविधान का पालन करना चाहिए, देश की रक्षा करनी चाहिए। देश भक्ति की भावना को लोगों में बढ़ाना चाहिए, सभी नागरिकों में भाई चारा बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए एवं देश को सुदृढ़ बनाने में प्रत्येक नागरिक की सहभागिता हो। व्यक्तिगत रूप से नागरिकों को स्व-अनुशासन के निश्चित मानकों का पालन तथा दूसरों के अधिकारों का आदर करना चाहिए ।

संविधान में उल्लेख है कि प्रत्येक नागरिकों को -

1. संविधान के नियमों का पालन करना, राष्ट्र ध्वज तथा राष्ट्र का सम्मान करना चाहिए ।
2. स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शों को अपने मन में संजोकर रखना चाहिए ।
3. भारत की संप्रभुता, एकता और अंखडता को अक्षुण्ण रखना तथा उसका पालन करना चाहिए ।
4. देश की रक्षा करनी चाहिए और राष्ट्र सेवा करनी चाहिए।
5. सभी धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का आदर करना ।
6. देश की संस्कृति और धरोहर की रक्षा करनी चाहिए ।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए तथा उसे बेहतर बनाना चाहिए। साथ ही जीव-जंतुओं के प्रति दया भाव रखना चाहिए ।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवीयता को विकसित करना चाहिए ।
9. सार्वजनिक संपत्ति जैसे स्कूल, अस्पताल, रेल, बस डाकधर आदि की रक्षा एवं उसे सही हालत में रखने में मदद करनी चाहिए ।
10. 6 वर्ष 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए ।

ये दस मौलिक कर्तव्य हम सबको एकता के सूत्र में बाँधने वाले दस आदेश हैं। हमें यहअनुभव करना चाहिए कि जहाँ हमारे पास कुछ अधिकार हैं वहीं दूसरी ओर देश के प्रति हमारे कर्तव्य और दायित्व भी हैं । ooo

मानवाधिकार

रश्मि यादव, एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर)

हमें मानव होने के कारण जो अधिकार मिले हैं, उसे मानवाधिकार कहते हैं । यह वो अधिकार है जो मानव को जन्म लेते ही प्राप्त होते हैं । वैसे तो समाज में भाषा, रंग, जाति पर कई भेदभाव हैं लेकिन इन सबके बावजूद भी कई अनिवार्यताएँ सब समाज में समान हैं और यह अनिवार्यता मानव अधिकार है ।

हर वर्ष 10 दिसम्बर को पूरी दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया जाता है । सबसे पहले 10 दिसम्बर 1948 में पहली बार संयुक्त राष्ट्र ने मानवाधिकारों को अपनाने की घोषणा की। हालांकि आधिकारिक तौर पर इस दिन की घोषणा 10 दिसम्बर 1950 में की गई । संयुक्त राष्ट्र ने सभी देशों को 1950 में आमंत्रित किया, रेग्यूलेशन पास कर सभी देशों और संबधित संगठनों को इस दिन को मनाने की सूचना जारी की थी ।

मानवाधिकार दिवस मनाने का उद्देश्य लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता प्रदान करना है। मानवाधिकार में स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक भी अधिकार शामिल है। मानवाधिकार व मूल-भूत अधिकार हैं जिनसे मनुष्य को नस्ल जाति, राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग आदि के आधार पर प्रभावित नहीं किया जा सकता ।

अधिक से अधिक लोगों के शिक्षित होने के बावजूद भी ऐसे करोड़ों लोग हैं जो खुद के अधिकारों और विशेषाधिकारों के बारे में जानकारी से वंचित हैं ऐसे लोगों में इसके प्रति जागरूकता लाने के लिए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के द्वारा इस दिन भारत में कई जगहों पर अलग-अलग कार्यक्रम किये जाते हैं । हर साल अलग-अलग थीम रखी जाती है जिससे लोगों में मानव अधिकारों के प्रति जागरुकता फैले।

प्रत्येक वर्ष संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक थीम तय की जाती है । परिस्थिति, दशा को ध्यान में रखते हुए यह थीम तय की जाती है । जो कि निम्न है -

वर्ष 2015 में मानव अधिकार दिवस के लिए थीम 'हमारा अधिकार, हमारी स्वतंत्रता, हमेशा' था।

वर्ष 2016 में मानव अधिकार दिवस के लिये थीम 'आज किसी के अधिकारों के लिये खड़े हो जाओ', था।

वर्ष 2017 में मानव अधिकार दिवस के लिए थीम 'चलो समानता, न्याय और मानव गरिमा के लिए खड़े हो जाओ'।

वर्ष 2018 का थीम 'मानवाधिकार के लिये खड़े हो'।

वर्ष 2019 का थीम 'स्थानीय भाषा, संस्कृति को बढ़ावा देना और मजबूती प्रदान करना'।

वर्ष 2020 का थीम 'रिकवर बेटर स्टैंड अप फॉर ह्यूमन राइट्स था ।'

वर्ष 2021 का थीम 'असमानताओं को कम करना, मानवाधिकारों को आगे बढ़ाना '।

भारत में मानवाधिकार -

भारत के संविधान में मानवाधिकार की गारण्टी दी गई है । हमारे देश में 28 सितम्बर 1993 को मानवाधिकार कानून अमल में आया और सरकार ने 12 अक्टूबर को राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग का गठन किया ।

इस अधिकार के बिना कोई भी व्यक्ति अपने पूर्ण विकास के बारे में सोच भी नहीं सकता । मानवाधिकार का अर्थ लोगों को बोलने की स्वतंत्रता, जीने की स्वतंत्रता, गुलामी से मुक्ति जैसे बुनियादी अधिकारों का हकदार होने में किसी भी व्यक्ति के बीच कोई भेदभाव नहीं है ।

मानव अधिकारों को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है । ये नागरिक और राजनीतिक अधिकार हैं इनमें सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकार भी शामिल हैं। व्यक्ति को दिए गए बुनियादी अधिकारों में जैसे - जीवन का अधिकार, बोलने का अधिकार, सोच विवेक और धर्म की स्वतंत्रता, उचित परिरक्षण, अत्याचार से मुक्ति, आंदोलन की स्वतंत्रता आदि मूलभूत अधिकार हैं ।

यदि हमें अपना अधिकार दिलाने में सरकारी महकमा हमारी मदद नहीं कर रहा है तो हम मानव अधिकार आयोग में शिकायत कर सकते हैं । आयोग में सीधे अर्जी देकर कर सकते है । इसके लिये वकील की जरूरत नहीं है। शिकायत किसी भी भाषा या बोली में कर सकते हैं । शिकायत लिखने के लिए कैसे भी कागज का इस्तेमाल करें स्टैम्प पेपर की कोई जरूरत नहीं होती ।

सभी मानव अधिकार अविभाज्य हैं, चाहे जीवन के लिए ठीक हो, समानता के रूप में । इस तरह के नागरिक और राजनैतिक अधिकार कानून और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, काम करने का अधिकार, सामाजिक सुरक्षा और शिक्षा । आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों से पहले, विकास और आत्म निर्णय के अधिकार, अविभाज्य और अन्योन्याश्रित है । इसी तरह एक अधिकार के अभाव की प्रतिकूलता दूसरों को प्रभावित करता है ।

वास्तव में मानव समाज में मौजूद समस्याओं का निराकरण करना ही मानवाधिकार की संकल्पना का लक्ष्य है। सूखा, बाढ़, गरीबी, अकाल, सुनामी भूकम्प जैसी प्राकृतिक आपदाओं और युद्ध एवं दुर्घटनाओं आदि से पीड़ित व्यक्तियों को राहत और पुनर्वास के मानवाधिकारों का ध्यान रखा जाना अपेक्षित है । जिससे लोगों की वाक्, अभिव्यक्ति और धार्मिक स्वतंत्रता एवं भय तथा अभाव मुक्त मिल सके । एक ऐसी विश्व व्यवस्था की स्थापना का जिससे जन साधारण की सर्वोच्च आकांक्षा पूर्ण हो सके, क्योंकि सम्पूर्ण मानव समाज के सभी सदस्यों के जन्मजात गौरव और सम्मान अविच्छिन्न अधिकार की स्वीकृति ही विश्व, शांति, न्याय और स्वतंत्रता की बुनियाद है ।

मानव अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को दिए गए मूल अधिकार हैं । सार्वभौमिक होने के लिए इन अधिकारों को कानून द्वारा संरक्षित किया जाता है । दुर्भाग्य से कई राज्यों, व्यक्तियों या समूहों द्वारा इसका उल्लंघन किया जाता है । इन मूल अधिकारों से एक व्यक्ति को वंचित करना अमानवीय है । यही कारण है कि इन अधिकारों की सुरक्षा के लिये कई संगठन स्थापित किए गए हैं ।

'मानव अधिकारों को पहचानो, स्वतंत्रता और समानता के साथ जीवन यापन करना जानो। नस्ल, रंग, भाषा, धर्म के आधार पर आज भी लोगों में भेदभाव किया जाता है यह यह गलत ही नहीं अमानवीय है । कोई भी एक दूसरे में श्रेष्ठ और निम्न नहीं, यह मानव अधिकार हमें बताता है ।'

000

2021–22

2021–22

POVERTY IN INDIA

Anas Khan Suri, M.A. I Sem. (Economics)

Economic growth is meaningless if a sizeable segment of the society suffers deprivation. Growth is converted into development only when poverty is eliminated. Implying that people no longer suffer hunger, death or starvation, they have at least the bare minimum of life, viz. food, clothing and shelter.

Indepentdent India launched planned programmes of development with socialist pattern of society as its central objective. It desired to achieve economic and social equality, focusing on the eleimination of poverty.

Unfortunately, however, not much porgress has been made in the area of economic and also in social equality, even when GDP has recorded a significant growth. Poverty has continued to be a major challenge for the planner and politicians. It persists as a social menace and, in fact, is a stigma for a nation which has emerged as the 10th largest industrial economy in the world.

So what actually is poverty and who are the poor?

Poverty is the incapability to fulfill the minimum requirements of life. the minimum requiremens include food, clothing, housing, education and health facilities. If these minimum requirements or needs are not fulfilled, a person undergoes pain and suffering.

There is loss of health and efficiency, sickness and disabilities render them helpless in all walks of life. Generation after generation they live in poverty and die in poverty. Poverty breeds or multiplies itself.

Poverty in India

Poverty or the state of being poor is prevalent in every corner of India. A huge number of villages are present that are highly poverty stricken. Also, there are underdeveloped sections of the cities which are filled with poor people.

While a particular section of society is living a luxurious life with an abundance of power and money, another section of society is still fighting for the basic necessities of life such as food, clothing, water and shelter.

Poverty mainly arises due to the huge population in India which results in a shortage of resources, employment opportunities, underdeveloped infrastructure, poor health, etc. The caste system is another big reason for such unequal distributioon of wealth in society.

It is our responsibility a citizens to empower our country. The government should take serious steps in generationg awareness about such grave issues and also by creating job opportunities which would help to solve this porblem to some extents.

Poverty alleviation should be the main target of the nation as to make it a prosperous and developed country. Thus, poverty elimination is a matter of fundamental importance. There are two basic pre requisites of a poverty eradication programme.

Firstly, reorientation of the agricultural relations is needed so that the ownership of land is shared by a larger sections of the people. Secondly, no programme of removal of poverty can be succeeed in an economy plagued by inflation and spiraling rise in the prices of essential goods.

000

2021–22

HOW TO HELP THE FARMERS

Anas Khan Suri

MSP for all crops is fiscally unfeasible. It is better to use an income policy on a per hectare basic to directly transfer money into farmers account.

Research tells us that the best way to support agriculture in a sustainable and manner is to invest in agriculture R & D, agriculture. Exetension systems connect farmers to lucrative markets domestic and external, by building efficient chains. Giving farmers their right to choose the best technology and the best markets is fundamental to the robust functioning of agriculture system and augmenting farmer income.

The legality of MSP means that no one is allowed to buy a crop below its MSP. If this demand is accepted it will not only mess up the economy, but will ultimately true out to be anti farmer.

If MSP is above that market clearing price, no one from the private sector will be willing to buy. In that case the government will have to become the buyer of last resort, else farmers will be left high and dry with no buyers for their product, making farmers worse off. The issue is how much the government can buy, how many commodities and what will be losing.

It may also be remembered that the MSP regime had its genres in 1965 when India was hugely short of basic staples and living in a ship to mouth situation. It was an indicative price (not a legal price) and procurement of rice and wheat was done to supported farmers when they were adopting new seeds (Hyv technology) and domestic procurement was to feed the PDS. But now with granaries overflowing with rice and wheat, that it needs to rethink and redesign the procurement policy. In the crop year 2020-2021, about 60 million metric tones (MMTs) of rice and H3 MMts of wheat were procured by the food corporation of India (FCI) and NAFED Procured about o.66 MMTs of pulses.

In this case of rice and wheat, where ever after procuring more than 50% of the make surplus prices stayed below MSP. extending the system to

2021–22

cover 23 crops under MSP will need much deeper thought.

It also raises the question why only these MSP crops, why not other agri-produce, say milk, the value of which is more than the value of rice wheat and sugarcane combined.

One argument that is floated is that instead of physical procurement., one may use price deficiency payments (PDP) implying that the government pays to farmers the gap between the market price and MSP when ever market prices are below MSP.

What's the way out to give a better deal to farmers? It may be better to use an income policy on per hectars basis directly transfer money into farmers' accounts without distorting markets through higher MSPs or PDPs. This can be improvised by better identification of tenants and owners through transparency in land records. There is no easy substitute to "getting the market right" Transfer the amount of PDS support in the consumers account and let the private market flourish and for food security purpose Govt. can just hold some stock of wheat and rice which can be managed by an internal department in the Ministry and dismantle the FCI. **000**

2021–22

2021–22

एक नया जहान बनाना है

फिज़ा शेख (बी.ए. द्वितीय वर्ष)

एक नया जहान बनाना है
अँधियारा हटाना है, उजियारा फैलाना है
दिलों पर मुस्कुराहट, मन में आस जगाना है।
एक नया जहान बनाना है ।

चाँदी की धरती, सोने का आसमान बनाना है
खिलखिलाती हँसी, रंग बिखेरती खुशियाँ लाना है ।
एक नया जहान बनाना है ।

छलियों से छीन कर धन-सम्पदा लाना है,
हर थाली में रोटी, तन पर कपड़े पहनाना है।
एक नया जहान बनाना है ।

हर मन खुशहाल, दिलों में प्यार जगाना है
हर जन का सपना सच कर दिखाना है ।
एक नया जहान बनाना है ।

हर मन में उमंग, हर घर में दीपक जलाना है
हो हर रात दिवाली, हर दिन ईद मनाना है
जाति धर्म के झगड़े ना हो
एक ऐसा जहान बनाना है ।

बेटियों को स्वतंत्र, परिंदों-सा स्वच्छंद बनाना है
हर युवा में उमंग, बच्चों में उल्लास जगाना है
हो वृद्धों का सम्मान, बढ़े सबका आत्मसम्मान ।
ऐसा एक नया जहान बनाना है।

2021–22

सबकी आँखों में पानी है

देव श्री (बी.ए. अंतिम वर्ष)

सुखी भली संसार के पीछे ये कैसा प्रतिकार हुआ
लगता ज्यों शमशीर लिये जीवन पर आघात हुआ
इस महामारी को क्या कहें सभी हृदय में रोना है
दहशत जिसका सभी ठौर में वह बैरी 'कोरोना' है ।

कोशिश थी विभिन्न प्रयासों से, इसे नियन्त्रित किया जाए
परस्पर सम्पर्क में न आयें तालाबंदी किया जाए
कोरोना में ये तालाबंदी सबके गृह पर सम न थी
कहीँ ऑनलाइन डिलीवरी
तो कहीं नाली में पड़ा जूठा भोजन
यह संकट भी कम न थी ।

लिखने बैठी इसी विषय पर मन में शब्दों का घेरा था
ख्वाबों की दहलीज पे मैंने देखा एक शख्स को था
था वो घर का मुखिया, उस पर सबकी जिम्मेदारी थी
भोजन की कैसे करूँ व्यवस्था? बस उसकी तैयारी थी
दिनभर काम करे तब घर में, दो वक्त की रोटी आती थी
'घर में रहो रहो सुरक्षित' गृह-द्वार पे लिखी दो पाती थी ।
हाँ, ... वो एक मजदूर था,
पर घर से निकलने को मजबूर था ।
पूर्ण रूप से तालाबंदी, हर गाँव नगर की भाषा थी
छूट गया काम उसका पूरा, रह गयी बस आशा थी
शासन का राशन मिला नहीं, जेब भी उसका खाली था
कोरोना से क्या हारे

तालाबंदी का यह पल, उस पे सौ गुना भारी था ।
कहीं भी उसको मिला न काम, सबकी आँखों में खटके थे
घर में बूढ़े माता-पिता और पत्नी व तीन बच्चे थे
हाय! क्षुधा से पेट था चिपका, देह से निर्बलता झलकी।
देखके घर में सबको भूखा, टूटा विश्वास उस पल की
पुत्र प्रति अनुराग था झलका, कमजोरी से देह तड़पे थे

कैसे होगी बच्चे की चिकित्सा व्यवस्था?
अस्पताल ले जाने को पैसे भी न थे
न भोजन, न दवाई, शरीर भी उसका अकड़ गया
हुआ विलाप घर में उसके बच्चा मौत के मुँह में जकड़ गया।

न था उसको रोग कोरोना, इंसानियत भी उसके आगे शरमा गया ।
कोई न आया साथ उसके, पिता अकेले जला आया
महामारी के पल में उसने, मानो सब कुछ अपना खोया था
लॉकडाउन की बेबसी में निर्धन, फूट-फूटकर रोया था ।

कोई करे अब मदद भी, उसकी अब न उसको आशा थी
करुणामय प्रतिबिम्ब सहित उनकी नयनों की भाषा थी
एक ही घर की बात नहीं, ये हर निर्धन की यहीं कहानी है
संघर्षों से जूझ रहा जन सबकी आँखों में पानी है ।
सबकी आँखों में पानी है ..... ।।

2021–22

थोड़ा सा पूरा आसमान

स्वाति यादव, (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर)

माँ ने कतरा-कतरा जोड़ा और
आसमान बना दिया
पिता ने रात-रात जोड़ी उसमें,
चाँद टाँक दिया ।

मेरे सपने हैं जगमग-जगमग
सितारों जैसे
जुगनू जैसे
उनकी आँखें चमका दिया ।

मैंने भी जोड़ी
थोड़ी-थोड़ी मेहनत,
जीवन में इंद्रधनुष बना दिया ।
एक और एक जोड़ा
अनंत बना दिया ।

थोड़ा-थोड़ा
कितना अधिक होता है,
यह थोड़ा-थोड़ा
समझा दिया ।

जिनगी के खेल

दीक्षित कुमार वर्मा एमएम 2 सेम. (हिन्दी)

जिनगी ह महान संघर्ष हरय
जिहाँ कभू फूल जईसे मुस्कान हे
त कहीं कांटा जहान हे ।

कभू अमीर त कभू फकीर होबे
कभू तांबा त कभू हीरा पाबे
कभू घोड़ा त कभी पैदल चलबे
लांघन सुतबे त कभू पियासे जाबे ।

जिनगी के रद्दा म रेंगे बर
कोनो राजा लगय न रंक
सुख दुःख ह बांटा ये सबके
कोनो नई भोगय कखरो संग।

सुग्घर गोठ बात गोठियाले जी
बांट ले दुःख पिरा के कहानी
तोर कड़ुवा बात जब होहि
कड़ुवा पड़ जाही जिनगानी।

मया प्रित के ये जिनगी मा
कभू मंथरा घलो आ जाथे
बसे बसाए परिवार मा
जहर घोल के चले जाथे।

सोच समझ के चले ल पड़थे
ये जिनगी के रद्दा मा
कोन भाई कब बैरी बन जाही
कब पटा जाबे गड्ढा मा

जिनगी के खल मा
सब ला सुन के, अपन
मन म गुन के, चले ला
पड़थे, संभल-संभल के ।।

कविता

बिना हथियार हत्याकांड

प्रियंका यादव, अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)

किसी ने बचपन लिया
तो किसी ने मासूमियत
किसी ने हँसी ली
तो किसी ने विद्रोही आवाज
किसी ने सुकून
तो किसी ने नींद
किसी ने मन
तो किसी ने सोचने की शक्ति
और अंत में
उसके आँखों का पानी
इस तरह
बिना किसी हथियार के
सबने मिलकर
थोड़ा-थोड़ा करके
उसकी हत्या की ।

अंतहीन लड़ाई!

इतिहास में
कोई 'माँ' थी
जो पढ़ी लिखी नहीं थी
तो उसने
पहली बार अपनी बेटी को स्कूल भेजा
और
यहीं से इतिहास बदलना शुरू हुआ ।
उसने स्कूल भेजा
कि वह चिट्टी लिख सके
अपनी भावनाओं को पन्नों में उड़ेल सके ।
फिर उसकी बेटी स्कूल गई
कि वह उड़ सके
और मैं
इन सभी की नातिन, परनातिन ..... हूँ
अपने सपने को पूरा करने के लिए लड़ रही हूँ
ताकि उड़ सकूँ।
मैं चाहती हूँ कि
मेरी बेटी और उसकी बेटी .....
सपने देखें
अपनी पूरी ताकत के साथ उड़ान भर सके।
उसके हिस्से में आने वाली लड़ाई
जो मेरी माँ, उसकी माँ और उसकी भी माँ ....
अभी तक लड़ रहीं हैं
उसे अब मैं जीत जाऊँ ।
ताकि
मेरी बेटी के हिस्से में
सपने हो
और खुला आसमान !

कविता

भय

मृदुल निर्मल (बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष)

हाँ ! हमको भय लगता है
हाँ ! हमको भय लगता है ।

न्याय को झुकते देखकर
अन्याय उठते देखकर,
साथ सत्य होते हुए भी
लोगों को छुपते देखकर,
हाँ! हमको भय लगता है
हाँ हमको भय लगता है ।

दोषी को छूटते देखकर,
निर्दोष को टूटते, देखकर,
चंद रुपयों की लालसा में
भ्रष्टाचार बढ़ते देखकर,
हाँ! हमको भय लगता है
हाँ! हमको भय लगता है ।

रोटी न मिलते देखकर
चेहरे जो खिलते देखकर,
कुछ-कुछ ऐसे इंसानों के
इंसानियत मिटते देखकर,
हाँ! हमको भय लगता है
हाँ! हमको भय लगता है ।

अदब

माया सोनी, एम.एस-सी. द्वितीय सेम.
(माइक्रोबायोलॉजी)

बड़ों से बातें करना अदब से
सामने उनका झुकना अदब से
जो भी कहते हैं भले के लिए
जरा तुम उनको सुनना अदब से

सूखे तरु सम अड़े हो, खड़े हो,
सीखो बैठना उठना अदब से
क्यों नहीं कहना मानते उनका
सच का पथ बना, चलना अदब से ।

2021–22

आर्थिक महामंदी - 1930

अभिषेक मंडावी, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (अर्थशास्त्र)

वर्ष 1929 में शुरू हुई महामंदी के आने से पहले विश्व के उद्योगपतियों की धारणा यह थी कि पूर्ति अपनी माँग स्वयं पैदा कर लेती है इसी विचारधारा के कारण उद्योगपतियों ने उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान दिया उसकी बिक्री पर नहीं । एक समय ऐसा आया कि बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति ज्यादा हो गयी और माँग कम। इसी कारण पूरा विश्व महामंदी की चपेट में आ गया था ।

वर्ष 1930 की आर्थिक महामंदी इस दुनिया की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक मानी जाती है। इसे तीसा की मंदी भी कहा जाता है ।इस घटना ने पूरी दुनिया में क्लासिकल अर्थशास्त्रियों की आर्थिक मान्यताओं को खत्म कर दिया था । इस मंदी के आने से पहले विश्व के उद्योगपतियों की धारणा यह थी कि पूर्ति अपनी माँग स्वयं पैदा कर लेती है इसलिए सभी लोग केवल उत्पादन पर ध्यान देते थे इस उत्पादन के माँग की फिक्र इन लोगों को नहीं थी । इसी विचारधारा के कारण उद्योगपतियों ने उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान दिया उसकी बिक्री पर नहीं और इसी कारण पूरा विश्व महामंदी की चपेट में आ गया था ।

वर्ष 1929 में अमेरिका से शुरू इस आर्थिक परिघटना ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया था। इसके कारण बैंक दिवालिया हो गये थे, शेयर मार्केट धड़ाम हो गये थे । शेयर धारकों को करोड़ों डालरों का नुकसान हुआ था । कंपनियों ने उत्पादन कार्य बंद कर दिया था लोग बेरोजगार हो रहे थे और कर्ज में दबे लोग आत्महत्या कर रहे थे ।

आर्थिक महामंदी की शुरूआत तब हुई थी -

जब वर्ष 1923 में अमेरिका का शेयर बाजार बढ़ना शुरू हुआ था और बढ़ता ही चला गया लेकिन 1929 तक आते आते इसमें अस्थिरता के संकेत आने लगे। अंततः 24 अक्टूबर 1929 को एक दिन में करीब पाँच अरब डॉलर का सफाया हो गया । अगले दिन भी बाजार का गिरना जारी रहा और 29 अक्टूबर 1929 को न्यूर्याक स्टॉक एक्सचेंज और बुरी तरह गिरा जिसमें 14 अरब डॉलर का नुकसान हुआ । इस तरह 29 अक्टूबर 1929 के दिन मंगलवार को 'ब्लैक ट्यूसडे' की संज्ञा दी गयी।

यह मंदी दूसरे विश्व युद्ध के शुरू होने अर्थात् 1929 तक चली थी ।

आर्थिक महामंदी के कारण -

सही मायने में 1930 की महामंदी का कोई एक कारण नहीं था लेकिन बाजार माँग का न होना, बैंकों का विफल होना और शेयर बाजार की भारी गिरावट को प्रमुख कारण माना जाता है जिसमें शेयर धारकों के 40 अरब डॉलरों का सफाया हो गया था ।

आम दृष्टिकोण से इस महामंदी के कारण –

सही मायने में 1930 की महामंदी का कोई एक कारण नहीं था लेकिन बाजार माँग का न होना, बैंकों का विफल होना और शेयर बाजार की भारी गिरावट को प्रमुख कारण माना जाता है जिसमें शेयर धारकों के 40 अरब डॉलरों का सफाया हो गया था ।

आम दृष्टिकोण से इस महामंदी के कारण देश में विश्व युद्ध के बाद अर्थात् 1920 के दशक में अमेरिका में व्यापक पैमाने पर हुए ओवर प्रोडक्शन में छिपे हुए हैं । दर असल में प्रथम विश्व युद्ध के बाद लोगों में विकास की उम्मीद जगी जिससे अमेरिका में औद्योगिक क्रांति हुई,

ग्रामीण लोग अच्छी नौकरी के लिये शहरों की ओर पलायन किया और उद्योगों में व्यापक पैमानों पर उत्पादन हुआ । लेकिन उत्पादन की तुलना में इन सभी चीजों की माँग नहीं बढ़ी जिससे कंपनियों की सेल्स कम हुई, चीजों का स्टॉक बढ़ा। बैंकों का लोन चुकाना बंद हुआ, बैंक कंगाल हुए और शेयर मार्केट गिरा और फिर हालात बिगड़ते ही गए ।

मंदी आने की प्रक्रिया –

सबसे पहले बाजार में माँग कम हुई जिससे कंपनियों का स्टॉक बढ़ा, उत्पादन घटा, नौकरियों गयीं, दिए । बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की माँग कम होने लगी परिणाम स्वरूप कंपनियों ने उत्पादन कम कर दिया, जिससे कंपनियाँ बंद होने लगी और जब उत्पादन नहीं होगा तो कोई कंपनी लोगों को नौकरी पर क्यों रखेगी फलतः नौकरियाँ जाने लगी जिस तरह अमेरिका सहित पूरी दुनिया में महामंदी छा गयी थी ।

मंदी का प्रभाव -

1, अमेरिका में बेरोजगारी 15 लाख से बढ़कर 1 करोड़ 3 लाख हो गयी ।

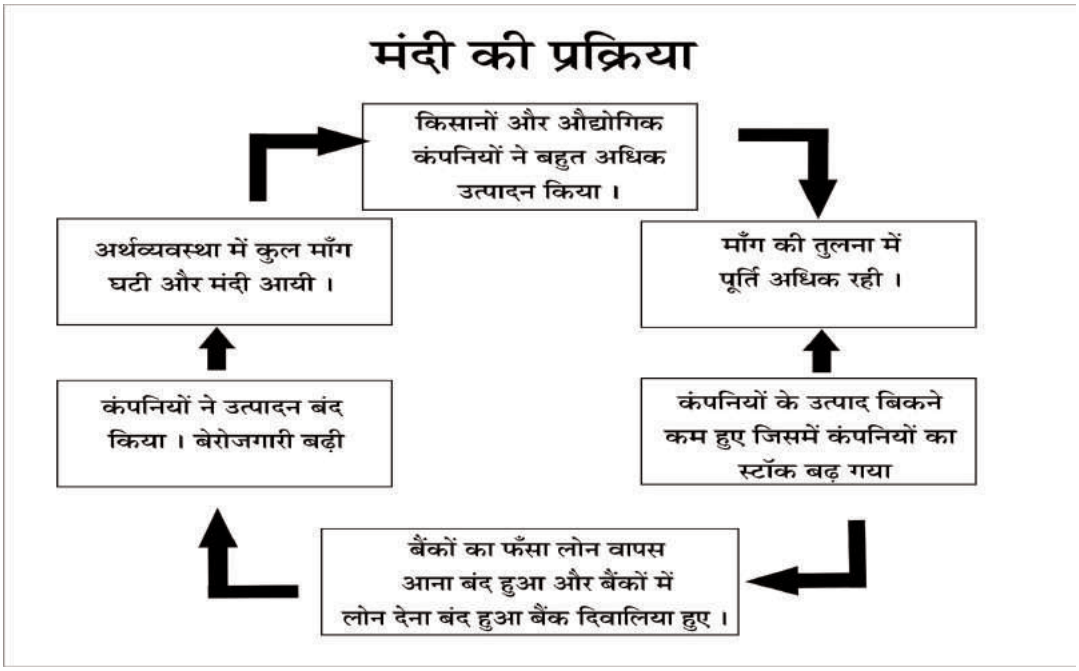

लोगों ने बैंकों के कर्ज चुकाने बंद कर दिए जिसमें बैंकों के पास लोन देने की शक्ति कम हो गयी। कर्ज मिलने बंद हो गये और जिन लोगों का धन बैंकों में जमा था उन्होंने भी उसे निकालना शुरू कर दिया जिसके संयुक्त प्रभाव से बैंकिग ढांचा चरमरा गया । लगभग 9000 बैंकों का दिवाला निकल गया । बैंक में जमा राशि का बीमा न होने से लोगों की पूंजी खत्म हो गयी । जो बैंक बचे रहे उन्होंने पैसे का लेन-देन रोक दिया। लोगों ने अपने खर्च कम कर

2. मंदी के परिणास्वरूप आज की अमेरिकी अर्थव्यवस्था की धुरी उसके हथियारों की बिक्री ही है ।

3. 1931 ई. में आर्थिक मंदी के कारण ब्रिटेन को स्वर्णमान का परित्याग करना पड़ा ।

4. इस मंदी के कारण 5 हजार से अधिक बैंक बंद हुए ।5. 1929 से 1932 के दौरान वैश्विक औद्योगिक उत्पादन की दर में 45 प्रतिशत गिरावट आयी ।

000

2021–22

2021–22

भारतीय अर्थव्यस्था पर तेल की कीमत का प्रभाव

गोपीचंद, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (अर्थशास्त्र)

वर्तमान की मुद्रा स्फीति को अब तक का सबसे उच्च सीमा अर्थात सबसे ज्यादा स्फीति वाले वर्ष या समय के रूप हम देख सकते हैं ।

हम अगर भारत जैसे विकासशील देश में और अपने पड़ोसी राष्ट्रों में देखें तो, पेट्रोल डीजल व मुद्रा स्फीति में बहुत अधिक अंतर देखने को मिलता है ।

कहीं न कहीं हर उपभोक्ता के मन में यह प्रश्न उठता है की, भारत के पड़ोसी राष्ट्रों में डीजल व पेट्रोल की कीमत इतनी कम है और हमारे भारत में अधिक क्यों?

प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर ईंधन का महत्वपूर्ण योगदान होता है इसी के सहारे सम्पूर्ण वाहनों का यातायात होता है । अंतराष्ट्रीय बाजार पर पेट्रोल व डीजल की कीमत उनके कच्चे तेल पर निर्भर करती है । अगर कच्चे तेल की कीमत में गिरावट आई तो उसका लाभ नये राष्ट्रों को मिलता है इसके विपरीत जब कच्चे तेल की कीमत बढ़ती है तो आयात करने वाले राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को काफी धक्का लगता है ।

वर्तमान में डीजल, पेट्रोल की कीमत का निर्धारण –

एक बैराल = 70.675 $

एक बैराल में = 159 लीटर कीमत = 5151रु.

इस प्रकार 1 लीटर की कीमत 32.29 रुपये

	कच्चा तेल	रिफायनरी	टैक्स		टोटल
			राज्य	केन्द्र	
पेट्रोल	32.29	3.6	27.71	32.9	99 रु.
डीजल	32.29	6.1	27.71	31.8	98 रु.

तो इस प्रकार उपभोक्ता तक आते-आते तेल की कीमत में टैक्स महत्वपूर्ण कारण होता है ।

पिछले 3 वर्षों का टैक्स केंद्र का

	2014	2017	2021
पेट्रोल	92.0	21.48	32.9
डीजल	3.46	17.43	31.8

आंकड़ों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है स्फीति में किस प्रकार वृद्धि हुई है ।

2021–22

पेट्रोल, डीजल की कीमत में वृद्धि के कारण :-

- यह देखा जाए तो अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर पेट्रोल, डीजल की कीमत कच्चे तेल पर निर्भर करता है। ओपेक (opec) के प्रमुख सदस्य क्रूड ऑइल के कीमत का निर्धारण करती हैं क्योंकि 80 प्रतिशत तेल यहीं से आता है । इसके अनुसार पेट्रोल व डीजल की कीमत में उतार-चढ़ाव होता है ।

राष्ट्र की सरकार अर्थात् केन्द्र व राज्य सरकार का भी स्फीति के निर्धारण में मुख्य भूमिका होती है ।

अर्थव्यवस्था व आम जनता पर प्रभाव - अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये ट्रांसपोर्ट मुख्य भूमिका निभाता है । वाहन को चलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता होती है, आमतौर पर लोग यही सोचते हैं कि पेट्रोल डीजल के दाम बढ़ने से कार-मोटर वालों पर ही इसका असर पड़ता है, लेकिन ऐसा नहीं है। उपभोकत्ता वस्तुओं का परिवहन ज्यादातर ट्रकों से, ट्रैक्टरों से होता है इसलिए उसका असर आम उपभोक्ता पर भी पड़ता है । अगर ईंधन की कीमत कम होगी तो उपभोक्ता को कम लागत में वस्तु प्राप्त होगी, अगर अधिक कीमत हुई तो वस्तु की कीमत भी बढ़ेगी, अर्थात् किसी वस्तु की कीमत निर्धारण में ईंधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इसी प्रकार ईंधन की कीमत में वृद्धि से माँग में कमी आती और माँग में कमी आने से उत्पादन में कमी आती है। उत्पादन कम होता है तो कंपनी भी अपने कर्मचारी घटा देता है । इस प्रकार अर्थव्यवस्था चौपट होती चली जाती है और कई कंपनियाँ बंद हो जाती हैं, लोग बेरोजगार हो जाते हैं इससे सबसे अधिक प्रभावित निर्धन व कमजोर तबके के लोग होते हैं ।

तथ्यों के अध्ययन से अनुभव होता है कि जीवाश्म ईंधन, पेट्रोल, डीजल की कीमतों में वृद्धि होना क्रूड ऑइल की कीमत के साथ-साथ केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के ऊपर भी निर्भर करता है तथा बाजार में चीजों की कीमत में वृद्धि का होना भी इन्हीं के मूल्य पर निर्भर करता है ।

शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन

कु. छाया सोनी, एम.एस.सी. तृतीय सेम. (रसायन)

शिक्षा से किसी भी व्यक्ति की अभिव्यक्ति सशक्त होती है । शिक्षा मानव व्यवहार में परिवर्तन लाने का कार्य करता है, मानव को व्यवहार कुशल बनाता है, शिक्षा से मानव में विनम्रता का गुण उत्पन्न होता है । शिक्षा से मानव में विवेक जागृत होता है, जिससे मनुष्य में सही तथा गलत में अन्तर करने का गुण उत्पन्न होता है । शिक्षा ही मनुष्य व जानवर में अन्तर करता है। शिक्षा में प्राचीन शिक्षा से आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हुए । व्यवहारिक शिक्षा को वर्तमान शिक्षा पद्धति ने बहुत अधिक प्रभावित किया है। प्राचीन काल में हमारे देश को विश्व गुरु के नाम से सम्बोधित किया जाता था। भारत ने अनेक विद्वान विभिन्न क्षेत्रों में दिये हैं जैसे गणित, खगोल, ज्योतिष, चिकित्सा क्षेत्र महत्वपूर्ण है । साथ ही योग शिक्षा ने भारत के मान को पूरे विश्व में बढ़ाया है । शून्य का अविष्कार भारत ने ही किया है, जो गणित का मुख्य आधार है। विश्व को शिक्षा के माध्यम से व्यवहार सिखाने वाला देश, आज उसी व्यवहारिक ज्ञान से दूर होते जा रहा है यही आज की शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी विसंगति है। जो अक्षर ज्ञान तो करा देता है, परन्तु व्यवहारिक ज्ञान से दूर करने जा रहा है ।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में गुरुकुल पद्धति एक महत्वपूर्ण शिक्षा पद्धति थी, इस शिक्षा पद्धति में दूर आश्रम में गुरु के शरण में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे । गुरुकुल शिक्षा पद्धति में अध्यापन कार्य के साथ संस्कार की शिक्षा, सामाजिक व पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन की शिक्षा, व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान की जाती थी । गुरुकुल शिक्षा से व्यक्ति में जीवन से सबंधिंत सम्पूर्ण शिक्षा का समावेश होता था, जिससे उन लोगों के जीवन यापन में समस्यायें कम होती थी और महत्वपूर्ण बात शिक्षा का माध्यम वैदिक भाषा संस्कृत थी । धीरे-धीरे शिक्षा में बदलाव प्रारम्भ हुआ और अंग्रेजी के आगमन के साथ शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव हुआ, शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बना दिया गया । अंग्रेजी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सेवक पैदा करना था, न कि मालिक बनाना। इस पद्धति ने प्रतियोगी शिक्षा को प्रोत्साहित किया। प्रायोगिक व व्यवहारिक ज्ञान को हतोत्साहित कर सैद्धान्तिक ज्ञान को महत्व दिया । अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने अक्षर ज्ञान करा दिये, शब्दों का ज्ञान करा दिये परन्तु इन शब्दों का प्रयोग व्यवहार में किस प्रकार करना है नहीं बताये । प्रतियोगिता में यदि असफल हो जाते हैं, जिससे विद्यार्थियों में अवसाद घर कर लेता है जिसका परिणाम अलग रूप में प्राप्त होता है। जो परिवार, समाज तथा देश के लिये विनाशकारी है। विद्यार्थियों में संघर्ष तथा संयम की प्रवृत्ति उत्पन्न करने के स्थान पर उतावलापन तथा असंयम की प्रवृत्ति उत्पन्न कर रहा है । कोरोनाकाल ने शिक्षा पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन ला दिया है । शिक्षा की नई पद्धति एक विकल्प के रूप में सार्थक है परन्तु इस पद्धति का लगातार उपयोग करने के कारण इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे हैं। विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी दिखाई देने लगी है, शिक्षा से दूरी देखने मिल रही है ।

विद्यार्थियों में मानसिक तथा शारीरिक थकान उत्पन्न होने लगी है। एक ओर बौद्धिक विकास प्रभावित हुआ है दूसरी ओर व्यवहार व संस्कारों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा है । दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं शिक्षा ने विद्यार्थी जीवन की परिभाषा को परिवर्तित कर दिया है ।

2021–22

महासमुंद के स्वतंत्रता सेनानी

रेणुका साहू , एम.ए. चतुर्थ सेम. (इतिहास)

15 अगस्त 1947 की आजादी भारत माता के अगिनत वीर संतानों के त्याग और शहादत का परिणाम है। इनमें से कुछ के नाम इतिहास के पृष्ठों में दर्ज हुए, किन्तु बड़ी संख्या ऐसे स्वतंत्रा संग्राम सेनानियों की है जो अनचिन्हे ही रह गये। छत्तीसगढ़ अंचल का महासमुन्द जिले के इतिहास में ऐसे ही अनेक महान सेनानियों की शौर्य गाथा अपने इतिहास में समेटे हुए हैं। यह लेख महासमुंद जिले भारत के स्वातंत्र समर में सम्मिलित नाम सपूतों के योगदान को चिन्हित करने का विनम्र प्रयास है।

महासमुंद के स्वतंत्रता सेनानी

सेनानी जीवन गिरी गोस्वामी :-

इनका जन्म महासमुंद के लभरा ग्राम सन् 1879 में पूरन सिंह गोस्वामी के घर में हुआ था। उनकी रूचि सदैव कृषि में ही रही, अतः ये सफल कृषक थे। ब्रिटिश कालीन शोषण का इनके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका :- गांधी जी के विचारों ने प्रेरित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में इन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपने योजस्वी व तर्कपूर्ण भाषण से लोगों को तमोरा जंगल सत्याग्रह में भाग लेने हेतु प्रेरित किया अंततः उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया जहां उन्हें 9 माह का सश्रम कारावास झेलना पड़ा। जेल में रहते हुये इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के विषय में बहुत कुछ सीखा। जेल से छूटने के बाद व्यक्तिगत सत्याग्रह व सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान शांतिभंग करने के आरोप में उन्हें सश्रम कारावास हुआ जहाँ उन्हें काफी प्रताड़ित किया गया। उनकी दूरदर्शिता व तर्कक्षमता जैसे गुणों के चलते ब्रिटिशशासन के दौरान सन् 1935 व 1946 (धारा सभा) में विधायक के रूप में निर्वाचित हुए। अपने राजनीतिक जीवन में दलित वर्ग पिछड़े वर्ग, कृषकों व मजदूरों के हित में आवाज उठायी। इनके उल्लेखनीय कार्यो व भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका के लिये 75 वर्ष की आयु में भारत सरकार द्वारा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया।

दयावती :- इनका जन्म तमोरा के मालगुजार के घर सन् 1915 में हुआ। इनके पिता बनमाली सिंह व चाचा रघुवर सिंह देश प्रेम में ओतप्रोत एवं गांधी जी के विचारों से काफी प्रभावित थे। अंग्रेजों के शोषण की घटनाएँ सुन कर बालिका दयावती बहुत प्रभावित हुई थी।

स्वांधीनता आंदोलन में भूमिका :- जब तमोरा जंगल सत्याग्रह प्रारंभ हुआ तब किशोरी दयावती महिला सत्याग्रहियों की टोली में झण्डे ले कर प्रतिनिधित्व कर रही थीं । पुलिस अधीक्षक मथुरा प्रसाद दुबे के साथ उनकी बहस हो गई। अधिकारी ने कड़ाई पेश की तो दयावती गुस्से में आकर पुलिस अधीक्षक को थप्पड़ जड़ दिया स्थिति विस्फोटक हो गयी थी। दुबे जी की सहानुभूति सत्याग्रहियों पर थी। अतः उन्होंने दयावती को साहसी बालिका के रूप में संबोधित किया थी। जब गांधी जी को तमोरा जंगल सत्याग्रह का पता चला तो नवंबर 1933 में छत्तीसगढ़

यात्रा के दौरान तमोरा ग्राम आकर दयावती से मिले। सन् 1922 में इनका निधन हो गया।

सेनानी रघुवर सिंहः- महासमुंद के खल्लारी परगना के पश्चिम में बाघनई नदी से घिरे तमोरा ग्राम में मालगुजार के घर 1897 में रघुवर का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा घर में हुई। इन पर गांधीजी के विचारों का काफी गहरा प्रभाव पड़ा।

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान :- 1 जनवरी 1922 सिहावा जंगल सत्याग्रह से राष्ट्रवादी विचारधारा के संपर्क में आये और ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आवाज उठायी। अखिल भारतीय सम्मेलन जबलपुर में भाग लिया। शोषण के विरोध में तथा छत्तीसगढ़ में भी वन अधिनियम के विरूद्ध यतीयतन लाल, शंकरराव जैसे सेनानियों के नेतृत्व में क्षेत्र के लोगों को एकजुट किया। रघुवर सिंह ने ही सत्याग्रह के लिये तमोरा ग्राम का प्रस्ताव रखा। अतः 9 सितंबर 1930 को तमोरा ग्राम में जंगल सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के तहत लोगों की भीड़ तमोरा ग्राम से जंगल की ओर बिना अंग्रेजों के भय के बढ़ने लगी। परिणाम स्वरूप बड़ी संख्या में लोग गिरफ्तार हुए। रघुवर जी पर मुकद्दमा चला 31 अक्टूबर 1930 को इन्हें दोषी करार देते हुए 3 माह की सजा हुई। इस सत्याग्रह की चर्चा पूरे देश में गूंजी। रघुवर सिंह को उनके साहस के लिये सम्मानित किया । बाद में उन्हीं स्थल पर गांधी जी की प्रतिमा स्थापित की गई। इनकी मृत्यु 1954 को हुई।

स्वंत्रता सेनानी बुढ़ान सायः- पिथौरा के अरण्ड ग्राम में इनका जन्म 12 अप्रैल 1885 को जमींदार परक शाह के घर हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा कोमाखान राजमहल व माध्यमिक शिक्षा पिथौरा में हुई।

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान :- गांधी जी के सत्य, अहिंसा व राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित होकर छत्तीसगढ़ के जननेता बुढ़ान साय ने संत यतियतन लाल व महंत लक्ष्मीनारायण से भेंट की। सन् 1930 में गांधी जी के आह्वान पर हो रहे नमक सत्याग्रह की तर्ज पर रायपुर में नमक कानून तोड़कर गिरफ्तार हुए। 1 मार्च 1930 को 4 मार्च का सश्रम कारावास रायपुर के सेंट्रल जेल में हुई । 9 सितंबर 1930 को यतीयतन लाल के नेतृत्व में उन्होंने 10,000 लोगों के साथ तमोरा जंगल सत्यग्रह में हिस्सा लिया । कानून तोड़ने के जुर्म में 3 अक्टूबर 1930 को 3 माह की सजा हुई। 1932 में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार कार्यक्रम में गिरफ्तारी हुई। लोगों ने इसके लिये घेराव किया किंतु 7 मई 1941 को गिरफ्तार कर रायपुर में 1 वर्ष की सजा हुई और उन्हें बाद में रायपुर से नागपूर और उसके पश्चात सिवनी जेल में स्थानांतरित किया गया। इन्होंने सतत् संघर्ष करते हुये लोगों को जागरूक किया। स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक जनजागरण करते हुए अस्पृश्यता व शोषण के विरूद्ध संघर्ष करते रहे। कृषक, मजदूर व दलित वर्ग के लिये अनेक कार्य किये। जीवन पर्यंत निःस्वार्थ सेवा करते हुए, 17 अक्टूबर 1971 को परलोक सिधार गये आपके अविस्मरणीय योगदान के लिये स्वतंत्रता दिवस के वर्षगांठ पर प्रशास्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

संत यतीयतन लाल : इनका जन्म राजस्थान बीकानेर में दिनांक 11 नवम्बर 1936 में पिता गुरु उपाध्याय के घर हुआ । इनकी शिक्षा महासमुन्द मे हुई । गाँधीजी के विचारों से प्रभावित होकर खादी वस्त्र धारण कर जाति रंग भेद-भाव को त्याग, गाँधीवादी विचारधारा के साथ साहित्य व समाज सेवा में लीन हो गए।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान :- सन 1924 में काँग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। रायपुर में आयोजित राष्ट्रीय राजनैतिक परिषद मई 1922 में खागलकार की जिम्मेदारी दी गई । उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज अधिकारी को आयोजन स्थल में प्रवेश करने से रोका । इस घटना का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। 1924-25 में जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बने। गाँधीजी के आह्वान पर रायपुर में 2 मार्च 1930 को नमक कानून तोड़ने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । 23 अप्रैल 1930 को रायपुर में शराब दुकान बंदी इनके नेतृत्व में हुआ और गिरफ्तारी दी। 9 सितम्बर 1930 तमोरा जंगल

सत्याग्रह की तैयारी लभरा महासमुन्द में की गई । सत्याग्रह की राणनीति की योजनाबद्ध तैयारी, तयशुदा कार्यक्रम के क्रियान्वयन के नेतृत्व में मुख्य भूमिका निभायी । सैकड़ों लोगों की गिरफ्तारी हुई, जिसमें उनके साथ शंकरराव, बुढ़ान सिंह व रघुवीर सिंह को जेल भेजा गया । 3 माह की सजा हुई । सन् 1932 में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए अन्य सेनानियों के साथ 15 माह की गिरफ्तारी हुई । देश सेवा के साथ साहित्य में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। 15 अगस्त 1972 में आपके महत्वपूर्ण योगदान हेतु भारत शासन द्वारा प्रशस्ति व पत्र से सम्मानित किया गया।

सेनानी छबिलाल चन्द्राकरः– इनका जन्म एक कृषक परिवार में 9 जून सन् 1912 को हुआ । प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। ब्रिटिश शासन के शोषण की घटनाओं को बचपन में सुना करते थे। जिससे उनमें राष्ट्रवादी विचारधारा उत्पन्न हुई। उन दिनों समविचार धारा के लोगों जैसे यतियतन लाल जी से प्रभावित हुए और उनके मार्गदर्शन में कार्य करता आरंभ किया।

स्वाधीनता आंदोलन में योगदान :– 18 वर्ष का किशोर जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। 1934 मे ब्रिटिश सरकार ने विरोधियों का दमन किया जिसमें अन्य साथियों के साथ छबिलाल चंद्राकर भी प्रताड़ित किये गये। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेते हुए पुनः 6 मास का सश्रम कारावास हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात अत्यंत पिछड़े क्षेत्रों में दलित वर्ग के उद्धार हेतु सक्रिय भूमिका निभायी । इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को भारत शासन द्वारा ताम्रपत्र एवं पेंशन से सम्मानित किया गया। उन्होंने बंधुआ मजूदरी, बिगारी प्रथा का पुरजोर विरोध कर ग्राम के गौटिया के खिलाफ विद्रोह कर दिया। कृषकों व मजदूरों को एकत्रित कर सहकारिता आंदोलन के जनक बने। आस-पास के गांवों में सहकारी संस्था बनायी। अंततः सन 1976 को परलोक सिधार गये।

स्वतंत्रता सेनानी डेरहा लालः– इनका जन्म 3 जनवरी 1922 को चनाबेड़ा तहसील, महासमुंद में पिता बाह्म के घर हुआ था। इनके पिता देशप्रेम की भावना से ओत प्रोत थे। प्रारंभिक शिक्षा गोतमा गांव में हुई। 1926-30 के दौरान सलिहागढ़ में स्वतंत्रता की क्रांति हुई जिसका प्रभाव 8 वर्षीय डेरहा पर पड़ा। उनके मन में अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने की इच्छा होने लगी।

स्वाधीनता आंदोलन में भूमिका :– सन् 1939-40 में गांधी जी से प्रभावित होकर तिरंगा लेकर गाँव में फेरी लगाते यह एक प्रकार का व्यक्तिगत सत्याग्रह था। इस सत्याग्रह के दौरान इनकी मुलाकात सेनानी दंपत्ति पं. जयशंकर व उनकी पत्नी से हुई। उनके प्रभाव से क्रांतिकारियों के साथ सहयोग करने लगे। सन् 1942 में अंग्रोजों भारत छोड़ों करो या मरो के आह्वान पर अन्य सेनानियों के साथ डेरहा जी को सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 9 मास का सश्रम कारावास झेलना पड़ा। सन् 1943 में जेल से रिहा होने के बाद महासमुंद में आकर क्रांतिकारी गतिविधियों में लगे रहे , इनकी भेंट यतीयतन लाल व जीवन गिरी जैसे सेनानियों से हुई, उनके साथ सक्रिय रूप से शोषण व अन्याय के विरूद्ध काफी संघर्ष के अवसर पर इनके महत्वपूर्ण योगदान के लिये भारत शासन द्वारा प्रशास्ति पत्र से सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात गरीबी से संघर्ष करते हुये 14 अप्रैल सन् 1981 को उनका निधन हुआ।

शहीद रूखमणी बाई क्षेत्रपालः– रूखमणी जी का जन्म सन् 1886 में परसदा महासमुंद में कोटवार परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा घर में ही इनके पिता के सानिध्य में हुई थी। सन् 1923 में बी.के बाहरा निवासी महाराजा क्षेत्रपाल दीवान के साथ इनका विवाह हुआ। दुर्योधन दाऊ के यहाँ रहते हुए ब्रिटिश शासन के कारगुजारियों की जानकारी मिलती रही । आने वाले महत्वपूर्ण लोगों से मेल जोल से राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ी।

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान :–

शासन के खिलाफ गतिविधियों में भाग लेती थीं। राष्ट्रवादी साथियों की सुरक्षा सेवा की व्यवस्था करती थीं, जिसके कारण संपूर्ण क्षेत्र में देशभक्ति की भावना का विकास हुआ। बाबा अद्वैत गिरी से प्रेरित होकर सेनानियों को गुप्त संदेश को पहुंचाने में सहायता करती थी। 26 जनवरी 1930 को नेताजी सुभाषचंद्र के नेतृत्व में आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में अन्य भारतीयों के साथ भाग लिया। तमोरा जंगल सत्याग्रह में अपनी सक्रिय

2021–22

भागीदारी दिखायी गिरफ्तारी प्रारंभ होने पर उन पर महिला होने के कारण दबाव बनाया गया कि वे अपना अपराध स्वीकार ले किंतु वह झुकी नहीं। अंततः उन्हें 6 माह का सश्रम कारावास हुआ। पुनः 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर सेंट्रल जेल में कठोर प्रताड़ना की शिकार हुई और 3 माह के भीतर जेल में ही वीर गति को प्राप्त हुई। मरणोपरांत स्वतंत्रता दिवस पर महाकोसल प्रांतीय समिति द्वारा इस वीरांगना के पति महराजा क्षेत्रपाल को यह प्रशास्ति पत्र प्रदान किया गया।

बाबा आनन्दा दास मानिकपुरी :- इनका का जन्म 20 दिसंबर सन् 1912 में चैनदास के घर हुआ। इनकी शिक्षा घर में ही हुई। आनंदा दास मानिकपुरी देशभक्ति व राष्ट्रीयता की भावना से ओत- प्रोत थे।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका :- 1928 में खण्ड के मालगुजार बुढ़ान व चंद्रपाल से मिलने के पश्चात् देश भक्ति की भावना से गांवों में जन जागरण हेतु चौपाल का आयोजन करने लगे। रायपुर में बड़े नेताओं के निर्देश पर पर कीका भाई की दुकान के सामने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। गिरफ्तारी के बाद 11 दिनों तक थाने में प्रताड़ित किया गया। उसके बाद 11 माह के लिये रायपुर सेंट्रल जेल में कारावास हुआ। जेल में सत्याग्रहियों के बीच पढ़ना-लिखना तथा देश में चल रही गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल की। जेल से छूटने के बाद गाँवों में गीत गाकर जन मानस में राष्ट्रीयता की भावना पहुँचाने में सफल रहे। तमोरा जंगल सत्याग्रह के पश्चात गाँधी जी का आगमन हुआ तब उन्हें गांधी जी के रायपुर वचन वाक्य ''गृहस्थ में रह कर देश सेवा करना है, न जूठा खाना, न ही खिलाना, दुश्मन को गले लगाना'' इस आदर्श वाक्य को जीवन पर्वन्त पालन किया। उन्होंने सूराजी आल्हा गीत की रचना की। स्वतंत्रता आंदोलन में इनके अतुलनीय योगदान के लिये भारत शायन द्वारा 15 अगस्त 1972 को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। देश सेवा कर गांधीवादी विचारक के रूप में संघर्ष करते 14 जून 2011 को अनंतलीन हो गये।

पं. ज्वाला प्रसाद वर्मा:- पं. ज्वाला प्रसाद जी का जन्म 16 जुलाई 1926 को गुरु प्रसाद उपाध्याय के घर में आरंग में हुआ। प्रारभिक शिक्षा महासमुंद में प्राप्त की 1948 में प्रयोगशाला सहायक पद पर रहकर समाज सेवा के कार्य में लग गये। बालपन में स्वतंत्रता संग्राम की लहर पूरे देश में उठ रही थी, इसका प्रभाव इन पर भी हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान :- ब्रिटिश शासन के खिलाफ पर्चे बांटने लगे एवं अंग्रेजी को भगाओं और देश बचाओं जैसे नारे लगाते थे। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर समाज सुधार हेतु अनेक कार्य किये। जात-पात छुआछूत के विरुद्ध समतावादी समाज के समर्थक थे। ठाकुर प्यारे लाल के नेतृत्व में चलाये जा रहे शोषण एवं अत्याचार के विरूद्ध गांवों में लोगों को जागृत किया। सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि के विरूद्ध शंखनाद किया। अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका को गाँव-गाँव तक पहुंचाने में सफल रहा। सामाजिक सुधार हेतु गायत्री मिशन की संस्था संचालित कर पुस्तकालय का निर्माण किया। समाज सेवा को नई दिशा दी। आपके अद्भूत कार्यो के लिये स्वतंत्रता सेनानी व समाज सेवक के रूप में हमेंशा स्मरणीय रहेंगे। इनका निधन 9 मार्च 2019 को हुआ। ooo

मीरा : तुलनात्मक विवेचन

डॉ. श्रीमती कृष्णा चटर्जी सहा. प्राध्यापक (हिन्दी)

मीरा हिन्दी-काव्य की अद्वितीय साधिका है । मीरा का उद्देश्य कविता करना न था वस्तुतः प्रियतम कृष्ण के मिलन की साधना जब हृदय में समा न पाती थी तब कंठ से फूट पड़ती थी और भक्त उसे लिपिबद्ध कर लेते थे । मीरा की यही भावना प्रसून हिन्दी-साहित्य की अमरनिधि बन गए ।

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने लिखा है - 'भक्त की अनन्यता, समर्पण शीलता और उत्सर्गशीलता के लिए मीरा से बढ़कर उदाहरण हिन्दी साहित्य में ही नहीं विश्व-साहित्य में भी पा सकना दुर्लभ है, रागानुराग भक्ति की चरम परिणति है । साधक और साध्य की जो भावपूर्ण निर्व्याज अत्मीयता मीरा में उपलबध हुई है सूरदास की वाणी भी सर्वस्व समर्पण की वह तन्मदता अभिव्यक्ति न कर पायी जो दीवानी मीरा की विगलित वेदना में बरबस फूट पड़ी है ।'

भक्तिकाल में अभिव्यक्ति की दृष्टि से सूर, तुलसी और मीरा में भाव एवं काव्य रूप में पर्याप्त समानता है । तीनों मूल रूप से भक्त कवि हैं और उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम 'गीत' को चुना है, यद्यपि तुलसी ने मानस जैसे प्रबंध काव्य की रचना की है जिसमें भावों की सीधी अभिव्यक्ति 'विनय पत्रिका' जैसे ग्रंथ में स्पष्ट होकर सामने आई है। अपने आराध्य के महत्व वर्णन, उनकी आलौकिक शक्ति और पतित उद्धारण्क रूप का वर्णन लगभग तीनों में समान रूप से स्थान पाता है । मीरा के गीतों में संतों एवं नाथ संप्रदाय का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। मीरा बाई नितान्त स्वतंत्र प्रकृति की भक्त कवयित्री थी। निरन्तर भ्रमण करने की प्रवृत्ति के कारण अनेक संप्रदायों का प्रभाव उनके काव्य पर पड़ा । समकालीन प्रमुख भक्त कवियों के काव्य और मीराबाई के काव्य में किन-किन रूपों में समानता एवं असमानता है यह विचारणीय प्रश्न है ।

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि 'कबीर' बहुमुखी प्रतिभा के कवि थे। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त क्रांतिकारी था। उनमें परस्पर विरोधी तत्वों का अद्भूत सम्मिश्रण था।

उन्होंने गुरु की महिमा पर विशेष बल दिया। कबीर की रचनाओं की प्रामणिकता संदिग्ध है फिर भी प्राप्त साहित्य बीजक को ही प्रमाणिक रचना माना जाता है। कबीर हमारे सामने एक उपदेशक के रूप में आते हैं जिन्होंने समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया । कबीर का लक्ष्य सृजन करना नहीं था । जो कुछ भी उन्होंने उक्तियों के माध्यम से अपने विचार जन मानस तक पहुँचाया, कालांतर में यही काव्य रूप में परिणित हो गया । मीरा का लक्ष्य भी काव्य-सृजन नहीं था। मीरा ने भी अपनी करुण गाथा कृष्ण के सामने व्यक्ति की जो कालांतर में गीतकाव्य बन गया जिसमें विभिन्न राग-रागनियों की खोज भी की गई । कबीर और मीरा दोनों में स्वातंत्रय प्रेम तथा निर्भयता के भाव कूट-कूट कर भरे हुए थे। दोनों ने ही सामाजिक बंधनों और परिस्थितियों की उपेक्षा करते हुए अपने उद्देश्यों की ओर अधिक ध्यान दिया। जहाँ तक मीरा और कबीर प्रेमभाव का प्रश्न है दोनों अपने प्रियतम से विलग होकर सदा विकल बनाए रखने वाली तीव्र वेदना का बराबर अनुभव करते रहे । जहाँ कबीर यह कहते हैं कि -

'बहुत दिनन को जोवति वाट तुम्हारो राम
जिय तरसै तुझ मिलन कूं, मन नाहिं विसराम।'

वहीं मीरा अपने प्रियतम की प्रतीक्षा करती हुई कभी तारे गिनती हैं तो कभी आँसू की माला पिरोती हैं, घर-आँगन

2021–22

उन्हें अच्छा नहीं लगता, निरन्तर व्याकुल बनी रहती हैं -

'एक बिरहनी हम ऐसी देखो अंसुवन की माला पौधे
तारा गणतौं रेण बिहाणआँ सुख घड़ियारो जीवा।'

प्रिय से वियुक्त होकर दोनों अत्यन्त पीड़ा का अनुभव करते हैं । मीरा के सामान कबीर के कुछ पदों में माधुर्य भाव की व्यंजना हुई है । 'मीरा अपने साँवरे को नयनों में बसा लेती है - बसो मोरे नैनन में नंदलाल, साँवरे सूरत मोहनी मूरत नैना वने विसाला'।

उसी प्रकार कबीर भी प्रियतम को नेत्रों में बसाना चाहते हैं -

'नैना अंतर आव तू ज्योंहि नैन मुझेऊं'
ना हे देखू और कूँ ना तीहि देखन देऊँ ।'

कबीर के समान मीरा भी समस्त संसार को ईश्वर मानती है। मीरा भी कबीर की तरह निर्गुण ब्रम्ह की उपासिका है। परन्तु मीरा की अनुभूति निजी है इसलिए दोनों में कुछ विषमताएँ हैं -

कबीर का प्रेम भावुकता मात्र नहीं है इसी कारण उनमें मीरा जैसी स्त्री सुलभ हृदय की उन्मादकता नहीं है मीरा का प्रेम व्यक्तिगत था । कबीर के प्रेम में रहस्यवाद का पुट मिलता है तो मीरा में वास्तविक भावनाएँ । कबीर निर्गुण सगुण दोनों से परे है पर मीरा साकार हृदय की उपासक। मीरा की रचना विरह प्रधान है जबकि कबीर हमारे सामने उपदेशक एवं समाज सुधारक के रूप में उपस्थित होते हैं ।

मीरा और जायसी का तुलनात्मक अध्ययन करते समय हमें कुछ समानताएँ एवं कुछ असमानताएँ दृष्टिगत होती है। जायसी निर्गुण काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के कवि हैं। जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार पद्मावत है। मीराबाई के पद फुटकर हैं और इनमें अधिकतर भाषा राजस्थानी का ही प्रयोग हुआ है । जायसी की रचना एक प्रबंध काव्य है और इसकी भाषा अवधी है। जायसी का काव्य 'मसनवी' शैली पर आधारित है । जबकि मीरा बाई की रचना पर किसी विशेष शैली का प्रभाव नहीं है । जायसी ने अनन्त बह्म को नारी (प्रेयसी) के रूप में चित्रित किया है और मीरा ने उसे पुरुष (प्रेमी) के रूप में ग्रहण किया है । मीरा की रचना आत्मानुभूति परक है, इसमें जो विरह वेदना की कसक दिखलाई पड़ती है वह स्वयं की पीड़ा है जबकि जायसी ने राजरानी के प्रेम विरह की कथा का चित्रण किया है जायसी का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य का अद्वितीय विरह वर्णन है। इसमें समस्त प्रकृति प्रदत्त स्थितियों एवं बाह्य प्रकृति एवं परिस्थियों का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण किया है जबकि मीरा की वेदना आंतरिक है । जायसी ने अपने काव्य में बारहमासा वर्णन कर अपने काव्य कौशल का परिचय दिया है उनका विरह

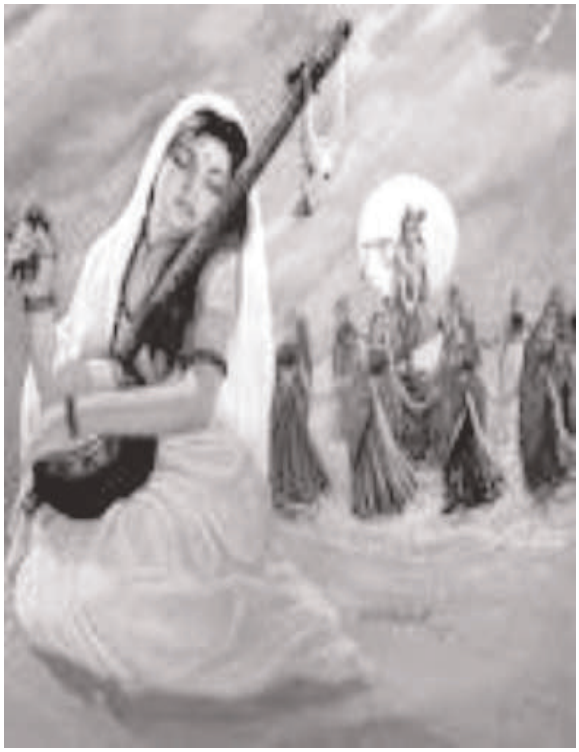

और बारहमासा वर्णन हिन्दी ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में अंत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है । बारहमासा वर्णन में जायसी जितने सफल रहें उतना मीरा नहीं । जायसी महाकाव्यकार थे जबकि मीरा गीतकार थी ।

मीरा और जायसी की रचनाओं में कुछ समानताएँ भी हैं जैसे मीरा और जायसी दोनों द्वारा प्रदर्शित प्रेम आरम्भ से ही विरह गर्भित तथा लौकिक है । मीरा ने अपनी रचना में प्रेम को उच्च स्थान दिया है । जायसी ने भी प्रेम के पीर की महत्ता स्वीकार की है। मीरा का वर्ण्य विषय भारतीय है किन्तु जायसी सूफी कवि होने के कारण उन पर फारसी प्रभाव प्रबल है । भारतीय परम्परा में जहाँ आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पुरुष माना गया है वहीं सूफीमत में परमात्मा को स्त्री और आत्मा को पुरुष माना गया है । इसीलिए मीरा और जायसी की भक्ति में अंतर है । जायसी के विरह वर्णन में कहीं कहीं ऊहात्मकता आ गयी है पर मीरा का विरह नितांत सहज है ।

मीरा और सूर दोनों ही कृष्ण के अनन्य भक्त थे । भक्तिकालीन काव्य-धारा में दोनों का स्थान शीर्ष बिन्दु पर है । मीरा की उपासना माधुर्य थी । मीरा ने कृष्ण को पति मान उसके रूप माधुर्य का वर्णन किया है परन्तु सूर की उपासना सख्य भाव की थी । सूर कृष्ण को अपने सखा के रूप में उपस्थित करते हैं। सूर की गोपियाँ परकीया प्रेमकाएँ थीं । जो उनकी प्रेयसी भी बन जाती थीं जबकि मीरा प्रतिकूल परिस्थियाँ रहते हुए भी सदैव एकनिष्ठ पत्नी भाव से ही कृष्ण की उपासना करती रही । मीरा का विरह वर्णन गंभीर अंर्तमुखी एवं अनुभूतिजन्य है जबकि सूर के विरह वर्णन में विनोद प्रियता के कारण गंभीरता नहीं है । सूर की गोपियों ने कृष्ण के निर्गुण रूप का विरोध किया है जबकि मीरा ने ऐसा कतई विरोध नहीं किया ।

सूर ने कृष्ण की बाल लीलाओं का जितना स्वभाविक चित्रण किया है उतना अन्य किसी कवि ने नहीं किया तभी तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा कि 'सूर वात्सल्य का कोना-कोना छान आए हैं' सूर के कृष्ण तर्क और प्रत्युत्पन्न मति व बहुत ही चतुर हैं । मीरा कृष्ण की बाल लीलाओं की ओर आकृष्ट नहीं हो पायी क्योंकि वह कृष्ण को पति रूप में ही देखती थीं । सूर सौन्दर्य वर्णन के समय कृष्ण की शक्ति और शील का भी ध्यान रखते थे लेकिन मीरा ने नहीं किया ।

सूर ने श्रृंगार के दोनों पक्षों का अद्‌भुत एवं आकर्षक वर्णन किया है । सूर का श्रृंगार वर्णन सूक्ष्म है । वह शारीरिक न होकर मानसिक है। सूर मनोवैर्ज्ञानिक चित्रण के अद्वितीय कवि हैं ।

मीरा ने श्रृंगार के वियोग पक्ष को ही अधिक लिया है संयोग का चित्र मीरा में बहुत कम देखने को मिलता है। सूर के समान मीरा में श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन मिलता है । सूर में कला पक्ष और भाव पक्ष दोनों ही प्रबल है जबकि मीरा में हृदय पक्ष की प्रधानता है ।

उपर्युक्त विवरण में कबीर, जायसी, सूर जैसे भक्त कवियों से मीरा के काव्य की तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि भावों की तीव्रता की दृष्टि से मीरा सबसे आगे है। डॉ. शकुन्तला दुबे के शब्दों में हम कह सकते हैं कि कबीर ने अपने पदों में आध्यात्मिकता ढाली, विद्यापति ने जीवन की प्रेममयी अनुभूति की व्यंजना की, सूर ने भाव और संगीत का सुन्दर समन्वय किया, तुलसी ने विचारात्मकता के साथ व्यक्तित्व की छाप दी तो मीरा ने अपने पदों में इन सबका सुन्दर

जायसी

समन्वय किया है।'

भक्तिकालीन कवियों के अतिरिक्त रीतिकालीन कवियों में घनानंद ही ऐसे कवि हैं जिनकी तुलना मीरी से की जा सकती है। तुलनात्मक दृष्टि से दोनों में पर्याप्त अंतर है । दोनों का युग ही भिन्न था मीरा भक्तिकाल की थी तो घनानंद घोर श्रृंगार काल के । मीरा बाई ने काव्य की विशेष शिक्षा नहीं पायी जैसे धनानंद ने लक्षण ग्रंथों द्वारा प्राप्त की। मीरा बाल्यावस्था से ही कृष्ण के प्रति आसक्त थी जबकि धनानंद का प्रेम प्रारम्भ में लौकिक था बाद में अलौकिक । मीरा राजपुत्री एवं राजवधु थी जो उन्मुक्त विचरण कर अपने गीत गाती थी परन्तु घनानंद बादशाह रंगीले के दरबार में मुंशी थे उनके आधीन थे। मीरा और घनानंद की परिस्थितियों में पर्याप्त भिन्नता थी। परन्तु प्रेमानुभूति में दोनों में अत्यधिक समानता थी। घनानंद कहीं-कहीं मीरा से भी आगे निकल गए हैं क्योंकि घनानंद एक पटुकवि थे। दोनों की सबसे बड़ी समानता है उनकी भावभिव्यक्ति का गीतों के रूप में निःसृत होना । दोनों में हृदय पक्ष की समानता है। मीरा का प्रेम एक निष्ठ है उनका प्रिय अनन्य है ।

किन्तु घनानंद ने पहले सुजान और फिर कृष्ण को अपनाया । मीरा का प्रणय आध्यात्मिक होने के कारण आरम्भ से ही उसमें विरह का भाव रहा जबकि घनानंद में प्रारम्भ में संयोग एवं बाद में विरह के अंश ही अधिक प्रबल हैं। दोनों में प्रणय की अतल गहराई है, मार्मिकता है, तीव्रता है, अकुलाहट व छटपटाहट है । घनानंद और मीरा की वेदना में मानसिक वेदना ही अधिक सक्रिय है । शारीरिक वेदना का उतना प्रभाव नहीं है । मीरा की रचनाएँ उनके पद ही है जब कि घनानंद ने कवित्त एवं सवैयों के रूप में अपनी अभिव्यक्ति दी । प्रकृति चित्रण में घनानंद मीरा से आगे बढ़ गए हैं । घनानंद ने प्रकृति के आलंकारिक , संदेश वाहक, एवं स्वच्छंद रूप को अपनाया जबकि मीरा के पदों में प्रकृति का उद्दीपन रूप ही दृष्टिगोचर होता है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मीरा और घनानंद अधिकतर वेदना जन्य दशाओं में ही अपने हृदय को लीन रखा । आत्माभिव्यक्ति ही उनका काव्य है । भक्ति के क्षेत्र में अपनी सहज अभिव्यक्ति में मीरा धनानंद से आगे है। आलंबन के प्रति प्रेमाभिव्यक्ति में दोनों समान है।

घनानंद

ooo

महात्मा गाँधी और ग्राम स्वराज

राजकिशोर पटेल, एम.ए. अंतिम (इतिहास)

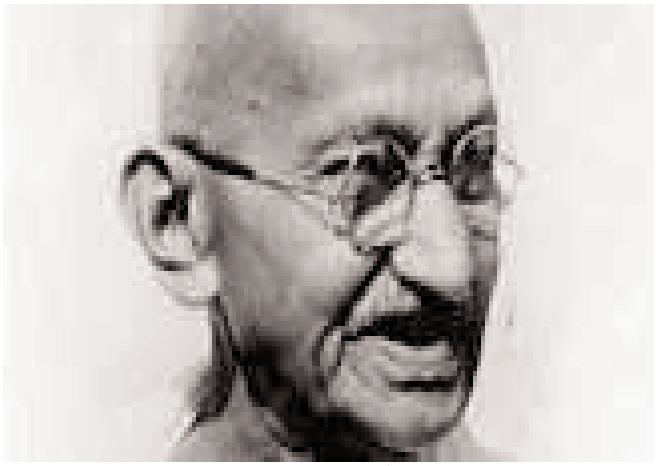

स्वराज एक पवित्र शब्द है, जिसका अर्थ आत्म शासन और आत्म मंथन है। अंग्रेजी शब्द स्वतंत्रता अक्सर सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आजादी का था स्वच्छंदता का अर्थ देता है, वह अर्थ गांधी जी के स्वराज्य में नहीं है। स्वराज्य से उनका अभिप्राय है लोक सम्मति के अनुसार होने वाला भारत वर्ष का शासन। और इस लोक सम्मति का निश्चय देश के बार्हिगम लोगों से, सबकी चाह से हो, फिर वे चाहे स्त्री हों या पुरूष। मतदाता ऐसे हो जिन्होंनवे अपनी शारीरक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो। सच्चा स्वराज्य कुछ लोगों के द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने में नहीं बल्कि जब सत्ता का दुरूपयोग होता हो तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है।

स्वराज्य का अर्थ सरकारी नियंत्रण से मुक्त होने के लिए लगातार प्रयास करना, फिर नियंत्रण विदेशी सरकार का हो या स्वदेशी सरकार का। लेकिन स्वराज्य हो जाने के बाद भी लोग अगर अपने जीवन की हर बात के नियमन के लिए सरकार का मुँह ताके तो वह स्वराज्य किसी काम का नहीं होगा। गांधीजी के स्वराज्य में जाति या धर्मों के भेद का कोई स्थान नहीं है। स्वराज्य पर शिक्षितों या धनवानों का एकाधिकार नहीं होगा। स्वराज्य सभी के कल्याण के लिए होगा, सभी जाति, धर्म, वर्ग के लोगों के लिए है।

ग्राम स्वराज्य –

भारत अपने चंद शहरों में नहीं गांवों में बसा हुआ है। परंतु गांवों का पूर्ण विकास नहीं हो पाया है। शहरी लोग गांव के उत्पादों पर ही निर्भर रहते हैं परंतु ग्रामवासियों की स्वयं की आवश्यकताएँ हो पूर्ण नहीं हो पाती, सभी ग्रामवासियों को भरपूर अन्न नहीं मिलता, अधिकांश आबादी भुखमरी में गलाजत में रहती है। अतः गांवों में ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

गांधी जी का ग्राम स्वराज्य पूर्ण प्रजातंत्रात्मक प्रयत्नों से युक्त है। जो आपनी प्रमुख जरूरतों के लिए अपने पड़ोसी पर भी निर्भर नहीं रहेगा। फिर भी बहुतेरी दूसरी जरूरतों की लिए जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा वह परस्पर सहयोग से काम लेगा। गाँव अपनी जरुरत ही चीजें खुद पैदा करते, मनोरंजन के साधन हो, सभी को बुनियादी शिक्षा प्राप्त हो और सारे ग्राम सहयोग के आधार पर किए जाएँ। गांधी जी के अनुसार शहर अपनी हिफ़ाजत आप कर सकते हैं, हमें तो अपना ध्यान गांवों में और लगाना चाहिए। हमें गांवों को संकुचित दृष्टि, उनके पूर्वाग्रहों और बहमों आदि से मुक्त करना है, और इसका तरीका एक ही है, हमें उसके साथ उनके बीच रहना होगा, उनके सुख दुख में हिस्सा लें और उन्हें उपयोगी शिक्षा तथा ग्रामीण उद्योगों का विकास करना चाहिए। एक आदर्श ग्राम होना चाहिए जहां सभी प्रकार की सुख सुविधाएं प्राप्त हो सके।

2021–22

गांधी जी का ग्राम उद्योग –

ग्राम उद्योग यादि यांत्रिक हो गया, तो भारत के 7 लाख गांवों का सर्वनाश समझे क्योंकि ग्राम कृषि और ग्रामीण उद्योगो कुटीर उद्योगो पर ही आश्रित रहता है परंतु यंत्रों के आने से गाँव के लोग बेरोजगार होते जा रहे हैं, उनकी रोजी पर मीलें छापा मार रही हैं। हिन्दुस्तान के कारीगारी लगातार कम हो गई थी परंतु उपक्रम भी पूर्ण दोष नहीं, हमने विदेशी कपड़े, वस्तुएं पहनी, खरीदी। यंत्रो ने मजदूरों की हालत गुलामों जैसी कर दी है। आज उद्योगपतियों का मुख्य उद्देश्य मुनाफा कमाना है, वे मजदूरों की सुख सुविधाओं का ध्यान नहीं देते। गांधी जी का मानना था कि गरीब हिन्दुस्तान तो गुलामी से आजाद हो जाएगा लेकिन भारत से पैसेवाला हिन्दुस्तान गुलामी से कभी आजाद नहीं हो पायगा। मिलों को एकाएक बंद नहीं किया जा सकता और ना ही मिल मालिकों को नफरत की निगाह से देखना चाहिए।

हम मिल मालिकों से विनती कर सकते हैं कि अगर वे देश का भला चाहते हैं तो खुद अपना काम धीरे-धीरे बंद कर सकते हैं, और उसकी जगह वे खुद पुराने प्रौढ़ पवित्र चरखे से देश के हजारो घरों में दाखिल कर सकते हैं, और लोगों का बना हुआ कपड़ा लेकर उसे बेच सकते हैं।

यदि ग्रामवासियों को कुछ काम देना है तो वह यंत्रों द्वारा संभव नहीं है उनके उद्धार का संख्य मार्ग हो पई कहै जिन्हें उद्योग को वे अब तक किसी उदर करते चले आ रहे हैं, इन्हीं को भलिभांति जीवित किया जाए। अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं को गांव की बड़ी चीजों से ही पूरी करनी चाहिए। क्योंकि यदि गांवो का नाश होता है तो भारत का भी नाश हो जाएगा।

वर्तमान में ग्रामीण उद्योगों की दशा –

वर्तमान में ग्रामीण उद्योगो की दशा शोचनीय हो गई है। अब ग्रामीण कुटीर उद्योग लुप्त होने के कगार पर

है, और उसका स्थान बड़ी-बड़ी मिलों ने ले लिया है। आज गाँव को मिलों को शहरों की भांति मशीनों से भरा जा रहा है, गाँव में रोजगार के अवसर समाप्त होने लगे हैं। ग्रामीण लोग रोजगार की तलाश में शहरों में मजदूर के रूप में गंदी जगहों पर रहने के लिए मजबूर हैं। प्रत्येक बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के आस-पास काम करने वाले लोगों की झुग्गी झोपड़ियों देखने को मिल जाती हैं, धारावी इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। आज ग्रामीण उद्योगों की महत्ता समाप्त हो गई है। लोग गाँव की बनी चीजों के बजाए यंत्रों से बनी चीजों का इस्तेमाल करने लगे हैं। ग्रामीण उद्योगो को अब बड़े-बड़े उद्योगों को भी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है। और लोगों की ग्रामीण उद्योगों के प्रति अरूचि के कारण ग्रामीण उद्योगों का पतन शुरू हो गया है। आज छोटी-सी आलपिन से लेकर बड़ी-बड़ी चीजें मशीनों से बनी वस्तुएं उपयोग कर रहे हैं, पूर्णतः यंत्रों के गुलाम हो चुके है, जिससे उनकी क्रियाशीलता समाप्त होने लगी है। गाँव में जान तभी आ

सकती है जब वहाँ की लूट-खसोट रूक जाए । बड़े-पैमाने पर माल की पैदावार, व्यापारिक प्रतिस्पर्धा तथा माल निकालने की धुन गाँव ही प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से होने वाली लूट की जिम्मेदारी है । वे अपनी जरूरतें पूरी करने भर के लिए चीजें तैयार करे, ग्राम उद्योगों को सरल तरीके से ऋण दिये जाएँ, भले ही इसमें उन यंत्रों और औजारों का प्रयोग करें जिन्हें वे बना और खरीद सकते हैं, लेकिन इस शर्त पर कि दूसरों को लूटने के लिये उनका उपयोग न हो ।

ग्राम उद्योग आरम्भ कैसे करें –

गाँधी जी के अनुसार जिस काम को आप आसानी से कर सकते हैं उसी काम को हाथ में लें । भारतीय ग्रामों में जाति व वर्ण आधारित भेदभाव देखने को मिलता है, सबसे पहले इन भेदभावों को समाप्त करके लोगों को उनकी योग्यतानुसार कार्य करने की आजादी देनी होगी । 'वर्ण आधारित ग्राम की जगह कर्म आधारित ग्राम' का निर्माण करना होगा । सबसे पहले हमें अपनी नित्य की चीजों में गाँव में ही बनी चीजों का उपयोग प्रारम्भ करना चाहिए, शहरों की यंत्रों से बनी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए, तभी तो ग्रामोउद्योग को बढ़ावा मिल सकता है । और इसमें सभी का सहयोग आवश्यक है । अब कारखानों में बनने वाले ब्रश की जगह हमें नीम, बबूल की दातौन से दाँत साफ करना चाहिए । प्रत्येक हिन्दुस्तानी को यह अपना धर्म समझना चाहिए कि वह गाँव की बनी चीजों का ही इस्तेमाल करें और जब हमे गाँव की बनी चीजें पसन्द आयेगी तो पश्चिम की नकल के रूप में यंत्रों की बनी चीजों को हम इस्तेमाल छोड़ देंगे ।

आम जनता के सहयोग के साथ सरकार को भी ग्रामीण उद्योगों के विकास में अपना योगदान देना चाहिए, ग्रामीण उद्योगों के विकास की दिशा में कार्य करना चाहिए, लोगों को आर्थिक सहायता देनी चाहिए और उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं के उचित विवरण की व्यवस्था करना चाहिए। सरकार द्वारा प्रदर्शनी लगाना चाहिए जिसमें ग्रामोद्योग संबंधी शिक्षा देनी चाहिए और लोगों को जागरूक करना चाहिए ।

ग्रामीण उद्योग –

वर्तमान में भारतीय गाँवों की जो दयनीय और सोचनीय दशा है उसे गाँधी जी द्वारा सुझाये गए ग्रामीण उद्योग संबंधी विचारों के क्रियान्वयन में आसानी से सुधारा जा सकता है । हमें गाँवों में वापस जाना चाहिए और ग्रामीणों से अपने पालक समान व्यवहार करना चाहिए। ग्रामीणों लोगों को शहरों में प्रवास करने से रोकना चाहिए, शहरों की यंत्रों से बनी वस्तुओं की जगह गाँव में बनी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए, ग्रामीण वस्तुओं को

नकारने को बजाए, लोगों की कारीगरी बेहतर करने में मददद करनी चाहिए ।

चरखा –

जिस प्रकार आजादी से पहले चरखे ने गाँवों को पुनः जीवन दिया था, उसी प्रकार आज भी चरखे के प्रयोग से भारत के आर्थिक और नैतिक पुनरूद्धार से मदद मिलेगी। खेती एक मौसमी रोजगार है जो साल भर नहीं चलता और ग्रामीण कृषक के पास इतने संसाधन भी नहीं कि वे साल भर कृषि कर सके अतः कृषि के साथ-साथ चरखे द्वारा कपड़ों का निर्माण आय का एक अच्छा साधन हो सकता है । लोग अपनी जरूरत का कपड़ा स्वयं बना सकते हैं, लोगों को यंत्रों से बने कपड़ों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, और लोगों की वस्त्र संबंधी समस्या भी समाप्त हो जाएगी । चरखा करोड़ों को भूखे मरने से बचाता है और इससे शरीर का श्रम भी हो जाता है । चरखा आज भी गरीबी की समस्या को लगभग बिना कुछ खर्च किए अत्यन्त सरल और स्वाभाविक ढंग से हल कर सकता है, यह हर घर में होना चाहिए, यह राष्ट्र की समृद्धि का और आजादी का प्रतीक है । चरखा व्यापारिक युद्ध ही नहीं, व्यापारिक शांति की निशानी है । यह लोगों में सद्भाव और स्वावलंबन का संदेश देता है। जो लोग आज बेरोजगार घूम रहे हैं उनके लिए यह एक आसान रोजगार है, यह आसानी से सीखा जा सकता है। इसके प्रयोग से लोगों को विदेशी कपड़ों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और उसमें खर्च होने वाला धन जो विदेश चला जाता था, रूक जाएगा और उस पैसे का प्रयोग गाँव के विकास बेहतर शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य में खर्च होगा इसलिए सभी को खादी का उपयोग करना चाहिए, स्वदेशी को बढ़ावा देना चाहिए ।

पशु पालन –

भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि में पशुओं का महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु आज लोग पशुपालन को बोझ समझने लगे हैं और पशुपालन छोड़ते जाते रहे हैं, जिसके कारण पशु संबंधी उद्योग भी धीरे-धीरे बंद होते जा रहे हैं । ग्रामीण लोगों को अधिकाधिक पशुपालन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा पशुओं की सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था करनी चाहिए । पशुपालन से बहुत सहायता प्राप्त हो सकती है, जैसे दुग्ध उद्योग, बछड़े का प्रयोग खेती में, गोबार का खाद के रूप में प्रयोग, यहाँ तक कि पशुओं की मृत्यु के बाद चमड़ा उद्योग और उसकी हड्डियों का भी उपयोग किया जा सकता है । लोगों में सहयोग की भावना लानी होगी और सामूहिक पद्धति से पशुपालन करना चाहिए, इसके बहुत से फायदे हैं -

1. सामूहिक पद्धति से जगह बचेगी और घर के बाहर एक जगह सभी गाँव के पशुओं को रखकर उनकी सेवा करनी चाहिए ।

2.बीमार होने पर किसान उसकी अच्छे से उपचार नहीं कराता परन्तु सामूरिक पालन से उपचार में भी आसानी होगी और व्यक्तिगत खर्च कम होगा ।

3. व्यक्तिगत रूप से किसान दूध आसानी से नहीं बेच पाता, परन्तु सहयोग द्वारा उसे अच्छे दामों पर बेचा जा

सकता है ।

4. सामूहिक पद्धति से लोगों के मध्य भेदभाव समाप्त होगा और सहयोग की भावना बढ़ेगी ।

5. सामूहिक कृषि से उत्पादन में भी वृद्धि होगी, छोटे-छोटे टुकड़ों में खेती करने के बजाए बड़े भू-भाग पर खेती करना चाहिए और प्राप्त होने वाली धनराशि को आपस में बॉट लेना चाहिए ।

गुड़-चीनी उद्योग –

डॉक्टरों की राय के अनुसार गुड़ सफेद चीनी की अपेक्षा कहीं अधिक पौष्टिक है और लोगों को चीनी की अपेक्षा गुड़ का अधिक प्रयोग करना चाहिए । यदि गुड़ बनाना जारी रहा और लोगों ने उसका उपयोग करना न छोड़ा तो ग्रामवासियों को करोड़ों रूपए बचत में आ जाएगा ।

गुड़ के साथ-साथ चीनी उद्योग भी एक बड़ा ग्रामीण उद्योग है। चीनी के कारखाने तेजी से बढ़ रहे हैं तथा अनुकूल विकास में सहायक हैं । आज गुड़ उत्पादन से ज्यादा चीनी उद्योग का कच्चा माल अर्थात् गन्ना आसानी से उगाया जा सकता है और यह कई लोगों को रोजगार प्रदान कर सकता है।

हरी-सब्जियाँ –

आज लोगों को तरह-तरह की बीमारियाँ हो रही है और जब लोग अपनी बीमारियों के इलाज हेतु डॉक्टरों के पास जाते हैं तो डॉक्टर हरी सब्जियाँ खाने की सलाह देते हैं क्योंकि हरी सब्जियों में विटामिन पाया जाता है जो सेहत के लिये अच्छा होता है। आज लोगों में धीरे-धीरे हरी सब्जियों, भाजियों को महत्व देना आरम्भ कर दिया है । शहरों में तो इसकी की जबरदस्त माँग है हरी सब्जियों भाजियों को उगाने में खर्च भी कम आता है, और ग्रामीण लोगों के लिए यह रोजगार का एक अच्छा साधन हो सकता है । लोगों में जैसे-जैसे जागरूकता आ रही है हरी सब्जियों की माँग बढ़ रही है। यह एक बेहतर रोजगार का साधन बन सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी अधिकाधिक अपने भोजन में हरी सब्जियाँ का प्रयोग करना चाहिए ।

खाद उद्योग –

लोग बड़ी कीमत देकर रासायनिक खाद खरीदतें हैं, लेकिन हम गाँव के कचरों से ही खाद बना सकते हैं और उसमें कोई खर्च भी नहीं आएगा। बस लोगों को सभी कचरे एक गढ्ढे में एकत्रित करना है । कुछ महिनों में अपने आप वह खाद में परिवर्तित हो जाता है । पशु तथा मानवीय उत्सर्जन से बना स्वर्ण खाद मिट्टी की उत्पादकता को कई गुना बढ़ा देता है । इससे रासायनिक खाद पर खर्च होने वाला धन हमारी बचत में आ जाएगा, हमारा

पैसा हमारे देश में ही रहेगा बाहर नहीं जायेगा । और साथ ही हमारे आस-पास की साफ-सफाई भी होती रहेगी।

मधुमक्खी पालन –

मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन भी एक अच्छा ग्रामीण उद्योग बनाया जा सकता है, तथा गाँवों में इसकी अपार संभावनाएँ है। इसमें कम खर्च करके अधिक धन कमाया जा सकता है । शहद की माँग बहुत अधिक होती है तथा इसमें औषधीय गुण पाए जाते हैं परन्तु कम उत्पादन के कारण इसकी कीमतें बहुत अधिक हो गयी है । आज यह उद्योग कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में ही रह गया है । प्रत्येक ग्रामवासी को इस उद्योग में शामिल होना चाहिए क्योंकि व्यापारिक लाभ के साथ -साथ इसका श्रेष्ठ औषधीय गुण भी है ।

हाथ कुटाई का चावल व गेहूँ आटा –

आज हम मिलों के पॉलिसदार चावल और बाजार का महीन आटा या मैदा खाकर अपना स्वास्थ्य खराब करते जा रहे हैं, यदि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग पुरानी पद्धति से चावल कूटना आरम्भ करके और घर की चक्की में गेहूँ पिसना आरम्भ कर दें तो हम पॉलिसदार चाँवल और महीन आटा या मैदा खाने से बच सकते हैं । हमारा स्वास्थ्य भी बना रहेगा और मिलों में चावल कुटाई और बाजार से आटा लाने का पैसा भी बच जाएगा । साथ ही गाँव में एक वर्ग को रोजगार भी मिल जाएगा जो चक्की निर्माण का कार्य करता है । साथ ही महिलाएँ भी अपने कामों में व्यस्त रहेंगी जिससे फिजूल की बाते और आपसी झगड़े होने की संभावना भी कम हो जाएगी तथा महिलाओं को समय बिताने का एक साधन मिल जाएगा ।

हस्तशिल्प कला –

ग्रमीण इलाकों में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प कला पाए जाते हैं जो हजारों सालो से पीढ़ी दर पीढ़ी ये कलाएँ अपने पूर्वजों से सीखते आए हैं । भारत अपनी हस्तशिल्प कला के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध रहा है। सरकार को हस्तशिल्पकारों को प्रोत्सहान देना चाहिए क्योंकि यह भी प्रमुख ग्रामीण उद्योगों में से एक है जो विश्व प्रसिद्ध हो चुका है । लोग दूर-दूर से ग्रामीण क्षेत्रों की इन हस्तनिर्मित वस्तुओं को खरीदने के लिये आते हैं। इस उद्योग को और अधिक बढ़ावा देना चाहिए तथा इसे सरकारी संरक्षण प्रदान करना चाहिए क्योंकि यह हमारी सभ्यता व संस्कृति की पहचान है, साथ ही यह हजारों शिल्पकारों को रोजगार प्रदान करती है।

ग्राम प्रदर्शनी –

ग्राम प्रदर्शनी में शहरों की तरह साज-सज्जा तथा शहरों के खेलखूद का आयोजन नहीं होना चाहिए। यह प्रदर्शन कोई तमाशा या आय का स्त्रोत नहीं बननी चाहिए। प्रदर्शनियों में वस्तुओं को बेचना नहीं चाहिए, बल्कि वह शिक्षा का एक माध्यम होना चाहिए । आकर्षक उद्योगों की प्रमुख समस्याओं को उजागर करना चाहिए और उसके निदान के उपाय बताने चाहिए । तथा गाँव की स्वच्छता और शिक्षा संबंधी जानकारियाँ देनी चाहिए। परन्तु केवल ग्रामीण उद्योग के पुर्ननिर्माण से ही गाँव का विकास संभव नहीं है बल्कि साथ में गाँवों में उचित शिक्षा और स्वास्थ्य का भी प्रबंधन करना आवश्यक है, क्योंकि बिना बुनियादी शिक्षा और बेहतर स्वास्थय के ग्रामीण उद्योगों का कोई महत्व नहीं रह जाएगा। और गाँवों में ही नहीं समस्त भारतीयों में सहयोग की भावना का विकास करना होगा । गाँधी जी के स्वराज्य तथा ग्राम स्वराज्य के अंतर्गत ये समस्त चीजें समाहित हो जाती हैं । उन्होंने अपने स्वराज्य में शिक्षा, ग्रामीण उद्योग, स्वास्थय, प्रशासन सभी पहलुओं का वर्णन किया है । वर्तमान में गाँधी जी की नीतियों को अपनाकर व्याप्त समस्याओं को दूर किया जा सकता है। भारत गाँवों का देश है, गाँवों के विकास से ही देश का विकास संभव है अतः गाँधीवाधी विचारधारा को अपनाना होगा । ०००

2021–22

2021-22 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है । उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है । हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है । इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं ।

2021–22

पं.भीमसेन जोशी

शताब्दी स्मरण

पं. भीमसेन जोशी

4 फरवरी 1922– 24 जनवरी 2011

पं. भीमसेन गुरुराज जोशी कर्नाटक के गडक जिले में जन्मे शास्त्रीय संगीत के हिन्दुस्तानी संगीत शैली के सबसे प्रमुख गायकों में से एक रहे। पं.भीमसेन जोशी किराना घराने के संस्थापक उस्ताद अब्दुल करीम ख़ान से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने उस्ताद अब्दुल करीम ख़ान के शिष्य पंडित रामभाऊ कुंदगोलकर और ग्वालियर के उस्ताद हाफ़िज़ अली ख़ान से भी संगीत की प्रारंभिक शिक्षा ली। उन्होंने सवाई गंधर्व से कई वर्षों तक ख़याल गायकी की बारीकियां सीखीं। उन्हें ख़याल गायन के साथ-साथ ठुमरी और भजन में भी महारत हासिल थी। लेखक और समालोचक विश्वनाथ त्रिपाठी कहते हैं कि पंडित जी को सुनते हुए निराला की 'बादल राग' कविता को पढ़ने का अनुभव होता है। मेघ और वर्षा का जैसा भव्य शब्द संयोजन और ध्वनि सौंदर्य इस कविता में है कुछ वैसा ही भाव उनके सुरों से आता है।

उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया। इसके पूर्व उन्हें भारत सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में पद्मश्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण समेत कई अलंकरण और सम्मान से नवाजा गया।

परिकल्पना एवं संयोजन- जीवेश प्रभाकर 09425506574

नरेश मेहता

शताब्दी स्मरण

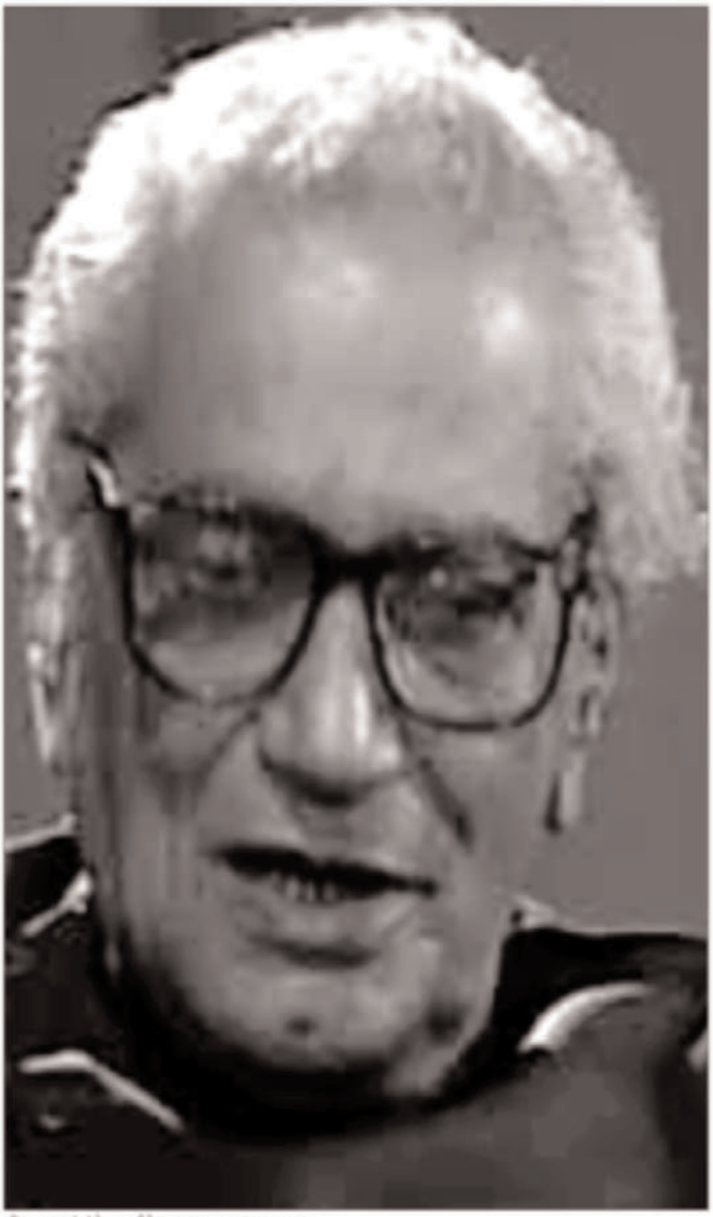

नरेश मेहता

15 फरवरी 1922– 22 नवंबर 2000

नई कविता के सर्वप्रमुख कवियों में से एक श्रीनरेश मेहता का जन्म मालवा के शाजापुर कस्बे में हुआ था। उनका नाम 'पूर्णशंकर' रखा गया। नरसिंहगढ़ की राजमाता ने एक काव्य सभा में उनके काव्यपाठ पर प्रसन्न हो उन्हें 'नरेश' की उपाधि दी। कालांतर में उन्होंने यही नाम रख लिया। नरेश मेहता हिंदी कविता में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के कवि कहे जाते हैं। वह 'दूसरा सप्तक' में शामिल प्रमुख कवियों में से एक हैं। कविताओं के अलावे उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, आलोचना, अनुवाद आदि विधाओं में भी रचनात्मक योगदान किया है।

प्रमुख कृतियाँ : काव्य-संग्रह बनपाखी! सुनो!!, बोलने दो चीड़ को, मेरा समर्पित एकांत, अरण्या, आखिरी समुद्र से तात्पर्य, पिछले दिनों नंगे पैरों, देखना एक दिन। कहानी-संग्रह - तथापि, एक समर्पित महिला, जलसाघर। उपन्यास - डूबते मस्तूल, , नदी यशस्वी है, दो एकांत, प्रथम फाल्गुन, उत्तरकथा भाग-1, उत्तरकथा भाग-2 आदि। खंडकाव्य - संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद पर्व, शबरी, प्रार्थना पुरुष आदि। नाटक - सुबह के घंटे, खंडित यात्राएं। एकांकी - साधु न चले जमात। संस्मरण - प्रदक्षिणा:अपने समय की। संपादन- चरैवेति, गांधी गाथा, हिंदी साहित्य सम्मेलन का इतिहास। अनुवाद-आधी रात की दस्तक। आलोचना/विचार- मुक्तिबोध : एक अवधूत कविता, शब्द पुरुष:अज्ञेय, काव्यात्मकता दिक्काल, हम अनिकेतन आदि

सम्मान: 1988 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार, 1992 में ज्ञानपीठ सम्मान सहित अनेक सम्मान से नवाजा गया।

ऋषिकेश मुखर्जी

शताब्दी स्मरण

परिकल्पना एवं संयोजन- जीवेश प्रभाकर 09425506574

ऋषिकेश मुखर्जी

30 सितम्बर 1922– 27 अगस्त 2006

कोलकाता में जन्मे ऋषिकेश मुखर्जी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से विज्ञान विषय से स्नातक के पश्चात कुछ समय तक अध्यापक के रूप में काम किया था। वर्ष 1951 में बिमल राय के साथ बतौर सह निर्देशक अपना करियर शुरू किया। दो बीघा ज़मीन जैसी कालजयी फिल्म सहित उनके साथ छह साल तक काम करने के बाद उन्होंने 1957 में मुसाफिर फिल्म से अपने निर्देशन के करियर की शुरुआत की। समीक्षकों ने उनकी प्रतिभा का लोहा उनकी दूसरी फिल्म अनाड़ी (1959) से ही मान लिया था। उन्होंने अनुराधा, अनुपमा, आशीर्वाद और सत्यकाम जैसी ऑफ बीट फिल्मों का भी निर्देशन किया। भारतीय सिनेमा जगत को एक नया मुकाम देने वाले ऋषिकेश मुखर्जी की फ़िल्मों में गाँवों और शहरों में रहने वाला आम हिंदुस्तान नज़र आता था। उनकी अधिकतर फिल्मों में उन्होंने मानवीय संबंधों की बारीकियों को बखूबी पेश किया। उन्होंने चार दशक के अपने फिल्मी जीवन में हमेशा कुछ नया करने का प्रयास किया। फिल्मों के साथ ही उन्होंने टेलीविजन के लिए तलाश, हम हिंदुस्तानी, धूप छांव, रिश्ते और उजाले की ओर जैसे धारावाहिक भी बनाए।

प्रमुख फिल्में - मुसाफिर, नौकरी, अनुराधा, अनाड़ी, आशीर्वाद, बुड्ढा मिल गया, मधुमती, आनंद, गुड्डी, बावर्ची, चुपके चुपके, गोलमाल, अलाप, रंग बिरंगी आदि। फिल्म आनंद उनकी कुछ चुनिंदा बेहतरीन और सर्वाधिक चर्चित फिल्मों में से एक है।

सम्मान: 1961 में उनकी फिल्म अनुराधा को राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड से सम्मानित किया गया। 1999 में भारतीय फिल्म जगत का शीर्ष सम्मान दादा साहब फाल्के सम्मान। साल 2001 में उन्हें पद्मविभूषण से नवाजा गया।

सैय्यद हैदर रज़ा

शताब्दी स्मरण

परिकल्पना एवं संयोजन- जीवेश प्रभाकर 09425506574

सैयद हैदर रज़ा
22 फरवरी 1922- 23 जुलाई 2016

प्रतिष्ठित भारतीय पेंटर सैयद हैदर रज़ा का जन्म मध्य प्रदेश के मंडला जिले मे हुआ था। उन्होनें नागपुर कला विद्यालय (1939-43)के बाद सर जे.जे. कला विद्यालय, बम्बई (1943-47) से कला की शिक्षा ग्रहण की। फ्रांस सरकार से छात्रवृति प्राप्त मिलने के बाद अक्टूबर 1950 में पेरिस के इकोल नेशनल सुपेरियर डे ब्यू आर्ट्स मे शिक्षा ग्रहण करने के लिए फ्रांस चले गए। इसके पूर्व 1947 में उन्होंने फ्रांसिस न्यूटन सूजा और के.एच. आरा के साथ मिलकर बॉम्बे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप बनाया। उनके प्रमुख चित्र अधिकतर तेल या एक्रेलिक में बने परिदृश्य हैं जिनमे रंगों का अत्यधिक प्रयोग किया गया है, जो भारतीय ब्रह्माण्ड विज्ञान के साथ-साथ इसके दर्शन के चिह्नों से भी परिपूर्ण है। उन्होनें भारतीय युवाओं को कला में प्रोत्साहन देने के लिए भारत में रज़ा की फाउंडेशन स्थापना की जो आज भी युवा कलाकारों को वार्षिक रज़ा फाउंडेशन पुरस्कार प्रदान करता है।

सम्मान - 1946 में रजत एवं 1948 में स्वर्ण पदक, बॉम्बे आर्ट सोसायटी, मुंबई 1956 प्रिक्स डे ला क्रिटिक पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले गैर-फ्रांसीसी कलाकार पेरिस,1981 पद्मश्री भारत सरकार , ललित कला अकादमी की मानद सदस्यता 1981एवं 1983 में ललित कला अकादमी के फैलो निर्वाचित हुए। 1981कालिदास सम्मान मध्य प्रदेश सरकार, 2007 में पद्म भूषण, 2013 में भारत का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्मविभूषण। 2015 में उन्हें फ्रांस के सबसे बड़े सम्मान Commandeur de la Legion dÓhonneur से सम्मानित किया गया।

महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ 2021-22

विश्व एड्स दिवस पर रा.से.यो. तथा रेडक्रास द्वारा रैली का आयोजन

कबड्डी प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों
के साथ प्राचार्य, डॉ. आर.एन. सिंह

गोद ग्राम थनौद (दुर्ग) में राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र ईकाई द्वारा
बच्चों को नि:शुल्क पुस्तक वितरण

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई-विशेष शिविर में छात्राओं द्वारा
नुक्कड़ नाटक का आयोजन

बाल दिवस पर विधिक जागरूकता रैली में एनसीसी कैडेट

माइक्रोबायोलॉजी के विद्यार्थी ई-लाईब्रेरी संबंधी
जानकारी प्राप्त करते हुए

गतिविधियाँ - 2021-22

माननीय श्री अरूण वोरा, विधायक, दुर्ग द्वारा महाविद्यालय के कन्या छात्रावास का लोकार्पण

अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन स्पर्धा यूक्रेन में विश्वकप विजेता छात्रा एश्वर्या नंदी

गणतंत्र दिवस परेड 2022 में सम्मिलित रा.से.यो. छात्र मो. अदनान अपने ग्रुप के साथ सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in